हीरक जयन्ती वर्ष
Diamond Jubilee Year
2011-2012

पीआईडी•इन्सडॉक•निस्कॉम–निस्केयर

हीरक जयन्ती विशेषांक

राजभाषा पत्रिका

संचेतना

वर्ष 2012 खंड 14

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (वै.औ.अ.प.)
डॉ. के.एस. कृष्णन् मार्ग एवं 14, सत्संग विहार मार्ग, नई दिल्ली

निस्केयर

उद्देश्य

देश में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की सामयिक तथा पारम्परिक ज्ञान प्रणाली पर उपलब्ध सभी सूचना स्त्रोतों का मुख्य संरक्षक बनना तथा सर्वाधिक उपयुक्त प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके सभी स्तर के विविध संघटकों में विज्ञान संचार को प्रोत्साहित करना/बढ़ावा देना।

अधिदेश

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान पत्रिकाओं के रूप में वैज्ञानिक समुदाय में औपचारिक संचार संपर्क प्रदान करना।

जनमानस, विशे-ाकर स्कूल के विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी सूचना का प्रचार-प्रसार करना।

देश की पादप एवं खनिज सम्पदा तथा औद्योगिक अवसंरचना पर सूचना का संग्रहण, परितुलन/सम्पादन/समवलोकन तथा प्रचार-प्रसार करना।

सूचना प्रबन्धन में विशे-ाकर विज्ञान संचार तथा पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण के संदर्भ में सूचना प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों को सक्रिय रूप से बढ़ाना।

समय पर संबंधित तथा सही सूचना की सुलभता प्रदान कर आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक, वैज्ञानिक तथा वाणिज्यिक विकास को आगे बढ़ाने के लिए एक सुविधा प्रदाता के रूप में कार्य करना।

संचेतना
राजभाषा पत्रिका

वर्ष 2012, खंड - 14

संपादक
दीक्षा बिष्ट

सहयोग
मीनाक्षी गौड़

कम्पोजिंग
कृष्णा

फॉर्मेटिंग एवं ले-आउट
सरला दत्ता
मलखान सिंह

आवरण एवं स्कैनिंग
सरला दत्ता

प्रिंटिंग
पंकज गुप्ता
के बी नागपाल
सी एम सुन्दरम
तथा सभी साथी

फोनः 2584 8702, 2584 6301/361, 371
फैक्सः 2584 7062
ई-मेलः deeksha@niscair.res.in

संचेतना वार्षिक रूप से सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 से प्रकाशित होती है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के अपने विचार हैं। संस्थान, लेखकों के कथनों और मतों के लिए उत्तरदायी नहीं है।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, नई दिल्ली

सम्पादकीय

हिन्दी दिवस के अवसर पर जब हिन्दी भाषा की चर्चा होती है तो पंडित जवाहर लाल नेहरू की यह बात बड़ी सटीक लगती है कि हमारी भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सभ्य हो और जिसे अधिक से अधिक जनता समझे। .....और हिन्दी, राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ सम्पर्क भाषा के रूप में अपना ऐसा अद्भुत स्थान बना चुकी है कि सभी इसे बोलने को बाध्य है। हां, यह बात जरूर है कि कोई बम्बईया लहजे में बोलता है तो कोई बंगाली लहजे में, तो कोई बिहारी स्टाइल की हिन्दी में। आज आप देखिए न, चाहे सोशल साइट्स हो या मोबाइल और चैट के माध्यम से भेजे जाने वाले एसएमएस सभी देवनागरी लिपि को रोमन हिन्दी में लिखकर भेज रहे हैं। जो इन साइटों में हिन्दी में लिख पाते हैं वो हिन्दी में लिख रहे हैं और जो नहीं लिख पाते उनके लिए कोई समस्या नहीं। कोई ये बात कोई नहीं कह रहा कि भाई हिन्दी भाषा में अपनी बात कैसे कहें, कैसे लिखें? क्योंकि आज हर अंग्रेजी जानने वाला और न जानने वाला, जिनमें युवाओं की संख्या ज्यादा है रोमन हिन्दी में अपनी बात कह रहा है।

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में, जनसंचार के प्रो. गोविन्द सिंह के मतानुसार पश्चिमी देशों में रह रहे भारतीय और पाकिस्तान मूल के युवाओं ने अपनी भाषा को लेकर एक नई चेतना जागृत की है। उन्होंने हिन्दी और उर्दू को मिलाकर **हमारी बोली** नाम से एक नई भाषा को स्थापित करने के लिए आंदोलन शुरू किया है, जिसका प्रयोग लोग ईमेल, चैटिंग, सोशल मीडिया भी करने लगे हैं और भारतीय भी इसमें पीछे नहीं, kya kar rahe ho, kaisai ho, sab theek hai आदि जैसे वार्तालाप हिन्दी को बढ़ावा ही दे रहे हैं। यदि ये कहा जाए कि ये रोमन हिन्दी युवाओं को अपनी मातृभाषा से जोड़ रही है तो इसमें कोई गलत नहीं।

सीएसआईआर-निस्केयर द्वारा 29-30 मई 2012 को आयोजित अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में विदेशी प्रतिभागियों ने जिस उत्साह से हिन्दी में शोधपत्र भेजे और प्रस्तुत किये उसमें उनका हिन्दी के प्रति लगाव स्पष्ट झलक रहा था। उनका उच्चारण प्रशंसनीय था तो हिन्दी के प्रति उनके उद्गारों ने श्रोताओं को भाव विह्वल कर दिया था। सभी विदेशी प्रतिभागी हिन्दी प्रेमियों के दिल में अपनी अमिट छाप छोड़ गये।

इसी संदर्भ में आपको अपना भी अनुभव बताना चाहती हूं जब मार्च-अप्रैल माह में स्वयं मुझे भी एक ग्रुप के साथ यूरोप भ्रमण का अवसर मिला। एफिल टॉवर में ऊपर जाने की लाइन में लगे होने पर जैसे ही सिक्युरिटी ऑफिसर ने मेरे माथे पर लगी बिन्दी देखी तो मुस्करा का बोला, नमस्ते - और साथ ही धन्यवाद। बड़ा ही अच्छा लगा कि विदेशों में भारत और उसकी भाषा की पहचान बढ़ती जा रही है। फिर जब मैं दक्षिण फ्रांस के एक छोटे से शहर एक्स-ले-बॉ (Aex-Les-Bains) पहुंची तो वहां की एक घटना से बड़ी सुखद अनुभूति हुई। घूमने जाने के लिए हम बस में बैठे ही थे कि 18-20 साल की किशोरियों का एक बड़ा ग्रुप बस में चढ़ा और हमारी बिन्दी देखकर थोड़ी फुसफसाहट उनमें हुई और फिर सुनाई दिया *बोले चूड़ियां बोले कंगना,* अरे ये क्या हिन्दी फिल्म का गाना फ्रांसीसी बच्चों के मुंह से। तो फिर क्या था हमने भी गाने की अगली लाइन गाकर जबाव दिया तो बस में उन बच्चों ने नाचना ही शुरू कर दिया। फिर उन्होंने बताया कि वे हिन्दी फिल्में देखते हैं और उन्हें हिन्दी गाने तो बहुत ही अच्छे लगते हैं। उन्हें हिन्दी की बिन्दी बहुत अच्छी लगती है। जब हमने उन्हें बिन्दी लगाई तो उनके साथ आये एक लड़के को भी बिन्दी लगाने से कोई परहेज नहीं था।

22 से 25 सितम्बर 2012 तक जोहान्सबर्ग में नौवें हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। वहां भी विदेशियों ने हिन्दी सिखाने का योगदान फिल्मों, गानों और टेलीविजन धारावाहिकों को दिया है। जो भी हो ये तो स्वीकारना ही पड़ेगा कि हिन्दी अब हत्भागिनी नहीं रहीं क्योंकि विदेशियों ने भी वहां मनमोहक हिन्दी में भाषण दिए और हिन्दुस्तानियों का मनमोह लिया क्योंकि जो वहां बोला दिल से बोला और हिन्दी में बोला।

अन्त में, बस यही कहना चाहती हूं कि भाषा एक ऐसा सम्पर्क माध्यम है जिससे आपसी सम्पर्क साधा जा सकता है और हिन्दी तो ऐसी ही सम्पर्क भाषा है फिर बोलने में गुरेज क्यों।

सीएसआईआर-निस्केयर की हीरक जयन्ती वर्ष में संचेतना का हीरक जयन्ती विशेषांक आपके हाथ में है, अंक आपको कैसा लगा, इसकी प्रतिक्रिया जानने की अभिलाषा रहेगी।

गणेश चतुर्थी, दशहरे, दीपावली की शुभकामनाओं सहित।

संविधान में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश

351 संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाएं, उसका विकास करें ताकि वह भारत की सामायिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विर्निदिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो, वहाँ उसके शब्द-भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

राजभाषा पत्रिका

वर्ष 2012, खंड - 14

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्त्रोत संस्थान
डॉ. के.एस. कृष्णन् मार्ग एवं 14, सत्संग विहार मार्ग, नई दिल्ली

लेख	पृष्ठ संख्या
• फिर चली बात फूलों की	5
• रेशम की कहानी रेशम की जुबानी	9
• विज्ञापनों से विज्ञान आंदोलन/संचार	18
• पुतला फूंकने की परम्परा	22
• कृषि के माध्यम से पर्यावरण का संतुलन	25
• भविष्य में कैसे होंगी भाषाएं	28
• सौन्दर्यवर्धक वनस्पतिया	32
• होम.... ग्रीन होम	34
कहानी	
• परेशान आत्मा	39
• डबलरोटी	43
• जो बोया सो काटा	46
लघुकथा	
• दालमोट	48
• आप जीतेंगे पापा	49
• फौजी	50
• पूजनीय	51
विचार	
• बेचारा पति	53
• थोड़ा अमल करके तो देखें	55
• आशीर्वाद	56
• जीवन	56
धर्म	
• हिन्दू धर्म के प्रमुख तीर्थ	57
सृजन	60
विविध	70
व्यंग्य	74
उपलब्धि	76
पहेली	85
गतिविधियां	86
परिणाम	89

कृपया ध्यान दें

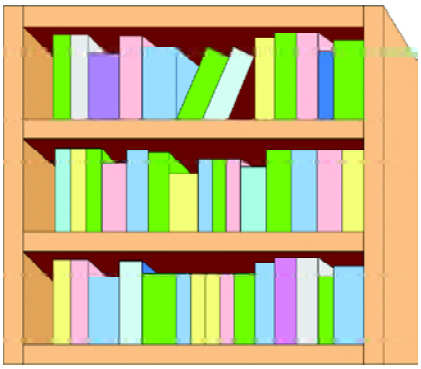

राजभाषा निर्देशिका

1. **निम्नलिखित पत्रों का प्रारूप केवल हिन्दी में प्रस्तुत करें**
   1. **क** तथा **ख** क्षेत्र की राज्य सरकारों या संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासन और इन क्षेत्रों में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों आदि और गैर सरकारी व्यक्तियों को जाने वाले सभी पत्रादि
   2. हिन्दी में प्राप्त सभी पत्र आदि के उत्तर।
   3. किसी कर्मचारी द्वारा हिन्दी में दिए गए या हस्ताक्षर किए गए आवेदन, अपील या अभ्यावेदन का उत्तर।
   4. संबंधित पत्रावलियों पर टिप्पणियां।

2. **द्विभाषी रूप अर्थात् हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में जारी किये जाने वाले कागजात**
   1. संकल्प (Resolution) 2. अधिसूचना (Notifications) 3. सामान्य आदेश (General Orders) 4. नियम (Rules) 5. प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट 6. प्रैस विज्ञाप्तियां (Press Release) 7. संविदाएं (Contracts) 8. एग्रीमैंटस (Agreements) 9. परमिट (Permits) 10. लाइसैंस (Licence) 11. टेंडर नोटिस (Tender Notice) 12. टैंडर फार्म (Forms of Tender) 13. संसद के सदन या दोनों सदनों में प्रस्तुत प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें और सभी सरकारी कागजात।

(सामान्य आदेशों में सभी प्रकार के आदेश, विभागीय प्रयोग वाले या स्थाई किस्म के निर्णय, कर्मचारियों के लिए सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस, विभागीय प्रयोग या सरकारी कर्मचारियों के लिए सभी परिपत्र शामिल हैं)

3. हिन्दी में लिखे या हस्ताक्षर किए सभी पत्रों, आवेदनों, अपीलों या अभ्यावेदनों के उत्तर हिन्दी में ही दिए जाएं।

4. उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तरांचल, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, दिल्ली और संघ शासित राज्य अण्डमान निकोबार द्वीप समूहर तथा महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब और संघ राज्य क्षेत्र चण्डीगढ़ में स्थित किसी कार्यालय या व्यक्ति द्वारा भेजे जाने वाले और उन्हें सम्बोधित मूल पत्र हिन्दी में ही भेजे जाएं।

5. उपर्युक्त सूची में शामिल राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को छोड़कर अन्य राज्यों और संघ राज्य स्थित केवल केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को हिन्दी में पत्र भेजे जा सकते हैं।

नोटः उपर्युक्त कागजात और पत्रों पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी उन्हें हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में और निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार हिन्दी में पत्र व्यवहार के लिए उत्तरदायी होंगे।

फिर चली बात फूलों की

देवेंद्र मेवाड़ी

पता है दोस्तों, एक समय ऐसा भी था जब धरती पर फूल नहीं थे। करोड़ों वर्ष पहले की बात है। धरती पर चारों ओर बड़े-बड़े दलदल फैले हुए थे। उनमें ऊंचे-ऊंचे मॉस और फर्न के पेड़ उगते थे। दलदलों में विशालकाय डायनोसॉर विचरते थे। फिर ऐसे पेड़ों का जन्म हुआ जिनमें काठ के फल और बीज बने। चीड़, देवदार उन्हीं के वंशज हैं।

लेकिन, तेरह-चौदह करोड़ वर्ष पहले ऐसे पेड़-पौधों का जन्म हुआ जिनमें फूल खिल उठे। दोस्तों, तब आदमी भी आदमी कहां थाi हमारे पूर्वज बंदर थे। वह बंदरों का भी पूर्वज रहा होगा। उसी ने वे फूल खिलते हुए देखे होंगे। पहले केवल पत्तों की हरियाली थी। चारों ओर हरा ही हरा रंग दिखाई देता होगा। फूल खिले और चारों ओर रंगों की बहार छा गई।

प्राचीनकाल के पेड़-पौधों पर शोध करने वाले वैज्ञानिक कहते हैं कि पहली बार फूल शायद तेरह-चौदह करोड़ वर्ष पहले खिले होंगे। काठ के कड़े फलों वाले पेड़ों और विशाल फर्नों के बीच फूलदार पौधे पनप उठे होंगे। फूल खिले, उनमें खूब बीज बने। बीज धरती पर गिरे। उनसे फिर हजारों फूलदार पौधे उग गए होंगे। छह-सात करोड़ वर्ष पहले वे पूरी दुनिया में छा गए।

दोस्तों, वैज्ञानिकों का कहना है कि हमारी धरती पर पेड़-पौधों की 3 लाख 70 हजार से भी अधिक जातियां हैं। उनमें 2 लाख 70 हजार से भी अधिक जातियां फूलदार पौधों की हैं। उनमें साल भर में खिल कर सूख जाने वाले पौधे हैं तो सालों-साल खिलते रहने वाले पेड़-पौधे भी हैं। सुंदर लताएं भी हैं और झाड़ियां भी। दिन में फूलों के चटक रंगों से मन मोहने वाले पेड़-पौधे भी हैं तो रात में भीनी-भीनी खुशबू बिखेरने वाले पेड़-पौधे भी। सच पूछो तो फूलों ने अपने मन मोहक रंगों से हमारे जीवन में खुशियों के रंग भर दिए। सुंदर फूल देख कर हमारा मन भी खिल उठता है।

हां तो दोस्तों, मैं कह रहा था, धरती में फूल खिल उठे। प्रकृति ने हमें फूलों की सौगात सौंप दी। हमारे पुरखों ने इनके गीत गाए। जब लिखना-पढ़ना सीखा तो अपनी कविता-कहानियों में चुन-चुन कर फूल पिरो दिए।

हमारे प्राचीन गंथों में फूलों का खूब वर्णन किया गया है। रामायण और महाभारत में पलाश, चंपा, अमलताश जैसे फूलदार पेड़ों का उल्लेख किया गया है। कमल के फूल न जाने कब से कविताओं में खिलते रहे हैं।

व्याकरणाचार्य पाणिनी ने ईसा से लगभग 350 वर्ष पूर्व अपने ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' में पलाश और कदंब के सुंदर फूलों का वर्णन किया।

शूद्रक ने 100 ईस्वी पूर्व में संस्कृत भाषा में अपना प्रसिद्ध नाटक मृच्छकटिकम् लिखा। उसमें बाग-बगीचों में खिले कमल तथा दूसरे फूलदार वृक्षों का वर्णन किया गया है। बौद्धकाल में प्रसिद्ध कवि अश्वघोष ने 'बुद्ध चरितम्' ग्रंथ लिखा। कवि ने नंदनवन का वर्णन किया है जिसमें गौतम बुद्ध फूलों से लदे वृक्ष और कमल के सुंदर पुष्प देखते हैं। बौद्धकाल में मठों और स्तूपों के चारों ओर भिक्षु फूलों की बगिया लगाते थे।

और, महाकवि कालिदास के ग्रंथ तो फूलों के वर्णन से भरे पड़े हैं। उन्होंने कमल, कचनार, पलाश, पारिजात और माधवी लता जैसे न जाने कितने रंग-बिरंगे, भीनी सुगंध बिखेरते लता-गुल्मों का वर्णन किया है।

फूलों ने मानव का इतना मन मोहा कि उसने इनके सुंदर चित्र बनाए। अपने भित्तिचित्रों में उकेरा। कपड़ों में काढ़ा और बुनाइयों में बुना। बेलबूटों से चीजें सजाईं। फूलों की सौगात दी, फूलमालाएं पहनाईं, फूलमालाओं से घर सजाया। पंखुड़ियों की अल्पनाएं बनाईं। फूलों का इत्र बना कर सुंगध फैलाई। फूलों से शुभकामनाएं दीं, पंखुड़ियां बिखेर कर स्वागत की रस्म निभाई। अपने घर-आगंन को फूलों से सजाया, फूलों से महकाया। दोस्तो, हमारी पूरी संस्कृति फूलों में रसी-बसी है।

प्राचीन फूलों की तलाश करते-करते वैज्ञानिकों के हाथ फूलों के करोड़ों वर्ष पुराने फॉसिल लगे हैं। उन्हें लगभग 12 करोड़ वर्ष पहले खिले एकवर्षी पौधों और करीब 9 करोड़ 30 लाख वर्ष पुराने मैग्नोलिया जैसे फूलों के पथराए अवशेष मिले हैं।

अच्छा, और सुनो। पहली सदी की बात है। रोम का सम्राट था नीरो। उसकी सेना में डायोस्कोरिडीज नामक प्रसिद्ध चिकित्सक था। उसने डी मटीरिया मेडिका नामक पुस्तक लिखी। उसमें तमाम पेड़-पौधों का वर्णन किया। फूलों के चित्र बनाए। वह पुस्तक इतनी महत्वपूर्ण थी कि 1500 साल तक वही चली। वैसी कोई दूसरी पुस्तक नहीं लिखी गई। हमारे देश में आयुर्वेद में पौधों के औषधीय महत्व का वर्णन किया गया।

हमारे देश में फूलों की खेती को मुगल सम्राटों ने बहुत बढ़ावा दिया। बाबर ने केवल हमारे देश के फूलों को गले लगाया बल्कि वह फारस और मध्य एशिया से भी एक से एक नायाब फूल लाया। सन् 1526 के आसपास वही गुलाब के पौधे हमारे देश में लाया। उसके जीवन की तमाम बातें बाबरनामा में लिखी गई हैं। चलो, बाबरनामा में हमारे देश के फूलों के बारे में उसके विचार तुम भी पढ़ लो। वह लिखता है, हिंदुस्तान में फूल बहुत तरह के हैं। एक जासून है, जिसे गुलहड़ कहते हैं। लाल गुलाब के फूल जितना होता है, पर कली गुलाब की तरह नहीं खिलती।...एक ही दिन में मुरझा जाता है।...केवड़े की महक मन को मोह लेती है।...यहां यास्मीन भी है। सफेद को चंपा कहते हैं। हमारे यास्मीन से बड़ा है। महक भी उससे बढ़ी-चढ़ी है।...

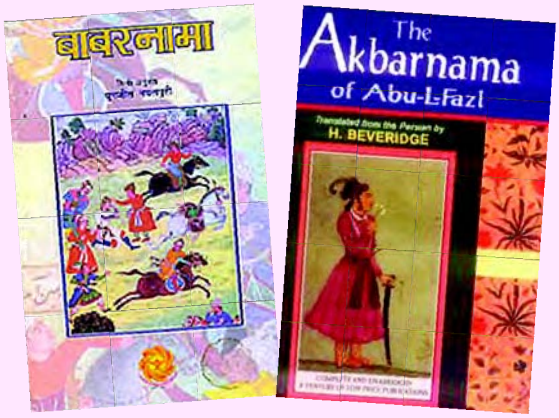

बादशाह अकबर भी बाग-बगीचों और फूलों का बड़ा शौकीन था। उसके शासनकाल की बातें अकबरनामा और आइने-अकबरी नामक ग्रंथों में लिखी हैं। जिन्हें अबुल फजल ने लिखा। अबुल-फजल ने आइने-अकबरी में 21 सुगंधित फूलदार पौधों के फूलों के रंगों और खिलने के मौसम के बारे में बताया है। इनमें सेवती, चमेली, मोगरा, चंपा, केतकी, कुजा, जुही, नर्गिस, केवड़ा आदि का वर्णन किया है। इनके अलावा सूरजमुखी, कमल, गुलहड़, मालती, कर्णफूल, कनेर, केसर, कदंब आदि 29 सुंदर फूलदार पेड़-पौधों के बारे में भी बताया है।

जहांगीर तो प्रकृति प्रेमी था ही। उसे भारत के सुगंधित फूल बहुत पसंद थे। इनमें से भी चंपा की मीठी सुगंध उसने सबसे अच्छी बताई है। वह लिखता है कि चंपा का एक ही पेड़ पूरे बाग को महका सकता है। उसने मौलश्री और केवड़े की सुगंध की भी तारीफ की है। ये बातें तुजुके जहांगीरी पुस्तक में लिखी गई हैं। यहां तुम्हें एक बात बता दूं दोस्तों। गुलाब के इत्र की खोज नूरजहां की मां ने की थी। तुम यह तो जानते ही हो ना कि नूरजहां बादशाह जहांगीर की रानी थी। नूरजहां और जहांगीर को गुलाब बहुत अच्छे लगते थे। यह आज से लगभग 400 साल पुरानी बात है।

दोस्तों, गुलाब, नरगिस, आइरिस, कार्नेशन, लिली, डेफोडिल, ट्यूलिप आदि फूल मुगल बादशाह हमारे देश में

लाए। उसके बाद जब पुर्तगाली और अंग्रेज आए तो वे भी हमारे देश में विदेशी पौधे लाए। हमारे देश से अनेक सुंदर फूलदार पेड़-पौधों को विदेश ले गए। अंग्रेज वनस्पति विज्ञानियों ने तो नए फूलों और दूसरे पेड़-पौधों की तलाश में देश का चप्पा-चप्पा छान डाला। उन्हें नए-नए सुंदर फूल मिले। जैसे प्रीइमुला, एनीमोन, आइरिस, लिलियम, एस्टर, बालसम, बिगोनिया, बुरोंश, कुंज और आर्किडों की अनेक जातियां फ्रैंक किंगडनवार्ड नामक वनस्पति विज्ञानी ने असम और वर्मा के जंगलों को छान कर पॉपी की नीले फूलों वाली नई जाति खोज डाली। हिमालय, उत्तरपूर्व और अन्य इलाकों के फूलों की तमाम जातियां वे इंगलैंड ले गए।

इसके सौ-डेढ़ सौ साल बाद सुदूर स्वीडन में एक वनस्पति विज्ञानी ने फूलों को पढ़ते-पढ़ते पता लगा लिया कि पौधों का विवाह फूलों में ही होता है। उन्हीं में पौधों के माता-पिता होते हैं। उन्हीं में बीज बनते हैं। उसने फूलों के आधार पर पेड़-पौधों का नामकरण किया। वह पौधों का पुरोहित बन गया। उस महान वैज्ञानिक का नाम था-कारोलस लिनीअस। उसने देखा, फूलों के खिलने का अपना-अपना समय होता है। इस बात को ध्यान में रख कर उसने अपने नगर उपसाला में एक फूलघड़ी बनाई। उस फूलघड़ी में सुबह सबसे पहले सैल्सिफाई पौधे के फूल खिल जाते। फिर अपने-अपने समय पर दूसरे फूल खिलते। आधी रात में टार्च थिसिल के फूलों की पंखुड़ियां बंद होने के साथ ही उस दिन का समय पूरा हो ज

हमारे देश के वे सुंदर सजीले फूल आज भी इंगलैंड के क्यू-गार्डन और एडिनबर्ग गार्डन में उग रहे हैं। वहां इन्हें बचाया जा रहा है।

हमारे देश के बाग-बगीचों और घर-आंगन की फुलवारियों में भी एक से एक सुंदर फूलों की जातियां उगाई जा रही हैं। वसंत आता है और हजारों रंग-बिरंगे फूल खिल कर खिलखिला उठते हैं। न जाने कहां-कहां से कितनी सुंदर तितलियां और भौंरे आकर उन पराग और मकरंद बटोरने लगते हैं। दोस्तो, हमें फूलों को बचाए रखना चाहिए। तभी तो तुम्हारी ही तरह कल आने वाले फूलों से बच्चे देख सकेंगे कि हमारी इस धरती में कैसे-कैसे सुंदर फूल हैं।

श्री देवेंद्र मेवाड़ी
पताः सी-22, शिव भोले अपार्टमेंट्स
प्लाट नं. 20, सैक्टर-7, द्वारका फेज-1
नई दिल्ली- 110075

रेशम की कहानी रेशम की जुबानी

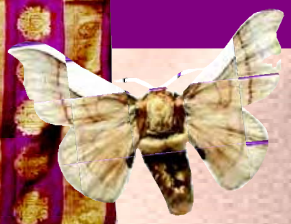

दीक्षा बिष्ट

त्योहारों का मौसम हो और कपड़ों की खरीदारी की बात न हो तो त्योहारों का मजा भी किरकिरा हो जाता है। पर आजकल बाजार भी किसी के मजे को खराब नहीं होने देते। वैसे तो आये दिन सेल के बैनर जगह-जगह लटके दिखाई देते रहते हैं। पर सितम्बर से लेकर नवम्बर तक का मौसम यानी गणेश चतुर्थी से लेकर दीवाली तक खरीदारी के लिए बाजारों में इतनी भीड़ दिखाई देती है कि पूछिए मत। किसी मॉल में चले जाइए तो डिस्काऊंट की ओर दौड़ती भीड़। और तो और सरकारी दुकानें भी उन दिनों डिस्काऊंट देती हैं बिल्कुल सही कहा है मैंने। खादी ग्रामोद्योग राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिवस पर और विभिन्न राज्यों के सरकारी एम्पोरियम त्योहारों पर विशेष छूट देते हैं और वहां से खरीदारी करने का एक विशेष उत्साह व एकमात्र लक्ष्य जो लोगों में होता है वो है सिल्क यानी रेशमी कपड़े खरीदने का।

जी हांix रेशमी कपड़े की जो चमक हजारों वर्ष पहले थी वो आज भी है। हालांकि बीच में कई तरह के सिन्थेटिक कपड़े भी चले पर सिल्क को कोई विस्थापित नहीं कर पाया और आज भी सिल्क की आसमान छूती कीमतों के बावजूद इनका चलन बढ़ता ही जा रहा है क्या कभी आपने सोचा कि इतना खूबसूरत सिल्क आता कहां से हैंi चलिए, हम ही आपको बताते हैं रेशम की कहानी रेशम की जुबानी।

मैं यानि सिल्क मजबूत चमकदार ऐसा रेशा हूं जिसका उपयोग कपड़े बनाने में किया जाता है। मुझे प्राकृतिक सुन्दरता विरासत में मिली है प्रकृति में शायद ही कोई रेशा मेरे जितना सुंदर हो। अरे, अपने मुहं मियां मिट्ठू बनने वाली बात नहीं है। यह सर्वथा सत्य है इसीलिए तो मुझे रेशों की रानी कहा जाता है। मैं शहतूत के पत्ते खाने वाले कीटों की देन हूं। मेरे तन्तु रेशमकीट की झल्लियों के कोयों या कोकूनों से बनते हैं। सभी प्राकृतिक रेशों में मेरा तन्तु सर्वाधिक मजबूत है। मेरा एक धागा उसी आकार के किसी भी प्रकार के स्टील के धागे से ज्यादा मजबूत होता है। मैं खींचने पर खिंच जाता हूं और पुनः अपने पूर्वाकार में आ जाता हूं। मुझसे बने कपड़े भार में बहुत हल्के होते हैं साथ ही सूती, लेनिन और रेयोन के कपड़ों से अधिक गर्म होते हैं। अन्य कपड़ों की अपेक्षा मुझ पर बढ़िया

चमकदार रंग चढ़ता है। मेरे कुछ नकली भाई-बंधु भी हैं पर मेरी विशेषता यह है कि मुझ पर सिलवटें नहीं पड़ती।

मेरे उत्पादन में विश्व में चीन का स्थान पहला तथा जापान का दूसरा था, पर अब भारत दुनियो में 19,000 मीट्रिक टन वार्षिक रेशम उत्पादन के साथ दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश बन गया है। मुझे पैदा करने वाले अन्य देशों में ब्राजील, दक्षिण कोरिया, सोवियत संघ तथा थाइलैंड प्रमुख है।

मेरे इतिहास का मानव के इतिहास से घनिष्ठ संबंध है। हालांकि इस विज्ञान और प्रौद्योगिकी के युग में जैसे-जैसे रहन-सहन का स्तर बढ़ा है उसी के अनुरूप रेशा उद्योग में भी पर्याप्त वृद्धि हुई है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में हथकरघा उद्योग के मशीनीकरण से तथा बीसवीं सदी के तीसरे दशक में मनुष्य द्वारा आविष्कृत कृत्रिम रेशे रेयोन के आश्चर्यजनक विकास ने पारम्परिक प्राकृतिक रेशम उद्योग में खलबली पैदा कर दी थी और मनुष्य ने कृत्रिम धागों यानि रेयोन की ओर कदम बढ़ा लिये थे।

लेकिन जहां तक मुझ रेशों की रानी रेशम का सवाल है मैं तो हमेशा रेशमी ही रही और आज भी सर्वोच्च स्थान पर विराजमान हूं। आज तक कोई भी रेशा मेरी बराबरी का नहीं बन पाया है। अरे, ये घमंड वाली बात नहीं एक सच्चाई है और सच्चाई में घमंड कैसा।

रोचक कहानियों और किंवदन्तियों से भरपूर मेरा इतिहास बड़ा ही रोमांचक और अस्पष्ट है। यद्यपि प्राचीनकाल के संस्कृत साहित्य में भारत में कुछ प्रकार के रेशम की खेती का उल्लेख है लेकिन मेरी शहतूती किस्म की खोज का श्रेय चीन को ही जाता है। मेरी खोज से जुड़ी अनेक मंत्रमुग्ध कर देने वाली रोचक

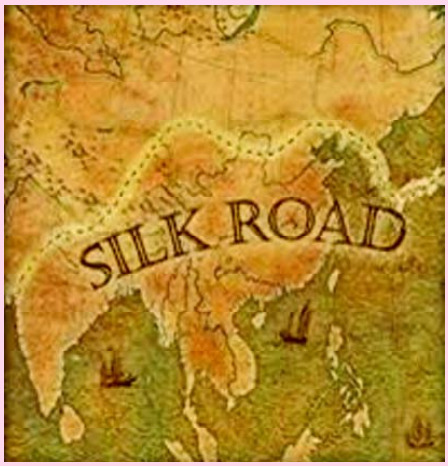

कहानियां प्रचलित हैं। ये सब कहानियां भी मेरी खोज का श्रेय चीन को ही देती हैं। इन कहानियों को यहां अगर मैंने नहीं सुनाया तो मेरी खोज की महत्व की बात ही अधूरी रह जाएगी।

मेरी खोज की सर्वाधिक प्रचलित कहानी है - चीन की महारानी हशी-लिंग-शी (शिलिंगची) की, जो सम्राट वोहांग की पत्नी थी। सम्राट ने चीन पर लगभग 2500 ईसवी पूर्व शासन किया था। एक बार जब रानी शिलिगंची अपनी सखियों के साथ अपने बगीचे में घूम रही थी तो उसकी नजर शहतूत की पत्ती खाने वाले छोटे-छोटे कीटों पर पड़ी। कुछ दिनों बाद रानी ने देखा कि छोटे-छोटे कीड़े बहुत बड़े हो गये हैं। रानी उत्सुकतावश प्रतिदिन उनकी देखरेख करने लगी और तब तक करती रही जब तक कीटों ने कोये या कोकून नहीं बना लिये।

उस समय रानी की उम्र केवल 14 वर्ष थी। उसकी जिज्ञासु प्रवृत्ति और जागृत हो उठी। रानी ने कोये लाकर अपने महल में सुरक्षित रख लिये और शलभ निकलने तक उनका निरीक्षण करती रही। एक दिन अनायास ही रानी के हाथ से ऐसा ही एक कोया नहाने के लिये रखे गर्म पानी में गिर पड़ा। उसे बचाने की कोशिश में रानी ने जब पानी से कोया निकाला तो कोये के अन्दर से चमचमाता धागे का गुच्छा निकलकर उसके हाथ में आ गिरा और इसी तरह मेरी खोज हुई।

दूसरी कहानी के अनुसार मेरी खोज इससे भी पहले चीनी राजा हुआंग-टी की पत्नी शिलिंग-ते ने की। इस कहानी के अनुसार राजा ने रानी को आदेश दिया कि वह देखे कि उसके बाग में लगे शहतूत के पेड़ों को कौन नष्ट कर रहा है। राजा के आदेश से रानी ने रोज बाग का निरीक्षण करना शुरू कर दिया। उसे देखा कि शहतूत की पत्तियों को एक सफेद कीड़ा खाता है जो बाद में चमकदार कोये बनाता है। अचानक एक कोया उसके हाथ से भी छूटकर जब गर्म पानी में गिर गया और उसने उसे पकड़ने के लिए पानी में हाथ डाला तो

इस खेल-खेल में कोये से चमकदार मुलायम पतला धागा अपने आप अलग होता चला गया। इस प्रकार अचानक प्राप्त चमकीले धागे को अधिक मात्रा में प्राप्त करने के मोह में पड़कर रानी ने राजा से एक शहतूत का बाग बनवाने की मांग कर डाली ताकि वह शहतूत के कीड़े उगाकर अधिकाधिक सुन्दर-सुन्दर कोये प्राप्त कर सके। कहते हैं कि राजा ने तुरंत रानी की मांग पूरा करने का हुक्म दे दिया। यही नहीं इस रानी ने तो सिल्क रील का भी आविष्कार किया। जिसमें मेरे रेशों को जोड़कर धागे को कातने लायक बनाया जा सकता था। इसी साम्राज्ञी को ईसा से 2,650 वर्ष पूर्व पहला करघा या लूम आविष्कृत करने का श्रेय भी जाता है। उस रानी के मेरे प्रति अत्याधिक लगाव को देखते हुए उसकी मृत्यु के बाद वहां की प्रजा ने उसकी स्मृति में वेदी बनाकर उसे रेशम कीटों की देवी के रूप में पूजना शुरू कर दिया था।

लेकिन आज भी शायद यह कोई नहीं जानता कि इनमें कोई कहानी सही भी है या नहीं। इन सब प्रचलित कहानियों के बावजूद भी असलियत अतीत के गर्भ में ही छिपी रह गई। पर इतिहासकार यह जरूर मानते हैं कि मेरा सर्वप्रथम प्रयोग चीन में ही हुआ।

मेरी खोज के लगभग 3000 वर्ष बाद तक भी रेशम के धागे की उत्पत्ति का भेद चीनवासियों ने बाहरी विश्व से छुपाये रखा। संभवतः इस डर से कि भेद बतलाने वाले को देशद्रोही न करार दिया जाए या फिर वह मौत की सजा का भागीदार न बने, क्योंकि तब तक चीन ने मेरे धागों से बने कपड़ों का व्यावसायिक उत्पादन शुरू कर दिया था।

हेन साम्राज्य (200 वर्ष ईसा पूर्व) में चीन ने मेरा यूरोपीय समुदाय को निर्यात शुरू किया। यह व्यापार तत्कालीन फारस (वर्तमान में ईरान) की मध्यस्थता में दिनदूनी रातचौगुनी प्रगति से फूला फला। इस चहुंमुखी व्यापार में चीन को तेजी से अत्याधिक आर्थिक लाभ हुआ। चीन और पश्चिमी देशों के बीच मुख्य व्यावसायिक केन्द्र बना-दमिश्क। और इस तरह दमिश्क से रोम राज्य तक मेरा विस्तार हुआ। कहते हैं ईसा से 300 वर्ष पूर्व जब पश्चिमी जगत को मुझे बनाने वाले उस आश्चर्यजनक कीड़े के बारे में खबर लगी तो काफी कोशिशों के बाद भी 550 ई. तक पश्चिमी समुदाय उस कीड़े को नहीं खोज पाया। इस तरह मेरे उद्योग पर चीन का आधिपत्य बना रहा। ईसा की मृत्यु के 550 वर्ष पश्चात् पश्चिमी सम्राट जस्टिनियन के प्रयत्नों से मेरा व्यापार फारस से हटकर इस्तांबुल में केन्द्रित हो गया। एक जनश्रुति के अनुसार इस सम्राट द्वारा दो यूरोपीय साधुओं को चीन भेजकर मेरे स्रोत और प्रकृति का पता लगाकर तथा मेरे कीटों के कुछ अंडों और शहतूत के बीजों को खोखली छड़ी में छुपाकर यूरोप लाना, एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी गई और इस प्रकार चीन देश और फारसी व्यापारियों का मेरे व्यापार से आधिपत्य समाप्त हो गया। इसके बाद अगले कुछ सौ वर्षों में कई व्यक्तियों ने कोये से मुझे बनाना सीख लिया। ईसा की मृत्यु के 1500 वर्ष बाद तो फ्रांस मेरे धागे से बने वस्त्रों में इटली को मात देने की सोचने लगा। 15वीं शताब्दी के अन्त तक इंग्लैंड में भी मेरा उत्पादन शुरू हो गया पर अमेरिका में तो मेरा उत्पादन 1810 ई. में ही आरम्भ हो सका।

द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व, रेयोन यानी मेरे नकली रूप की खोज तक हथकरघा उद्योग में मेरी धूम मच गई थी, लेकिन रेयोन की उत्पत्ति के पश्चात् मेरे साथ-साथ रेयोन से बने वस्त्रों की मांग बढ़ने लगी थी।

भारतीय महाकाव्यों में मेरा उल्लेख तो मिलता है परन्तु भारत में मेरे उत्पादन का इतिहास बहुत कम दिखाई देता है। इसके बावजूद प्रमाणिक स्रोतों के अनुसार भारतीय रेशम

उद्योग अति प्राचीन है। पश्चिमी इतिहासकारों के अनुसार भारत में शहतूत का आगमन 140 ईसवी पूर्व के आसपास चीन से श्वोतन के रास्ते हुआ और मेरा संवर्धन गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के पर्वतीय क्षेत्र में किया गया। लेकिन कुछ भारतीय विद्वानों के अनुसार सर्वप्रथम मेरे कीट बाम्बिक्स मोरी का कहीं हिमालय के अधोभाग से जन्म हुआ। सर्वप्रथम आर्यों ने उक्त हिमालयी क्षेत्रों में मेरे कीट की खोज की।

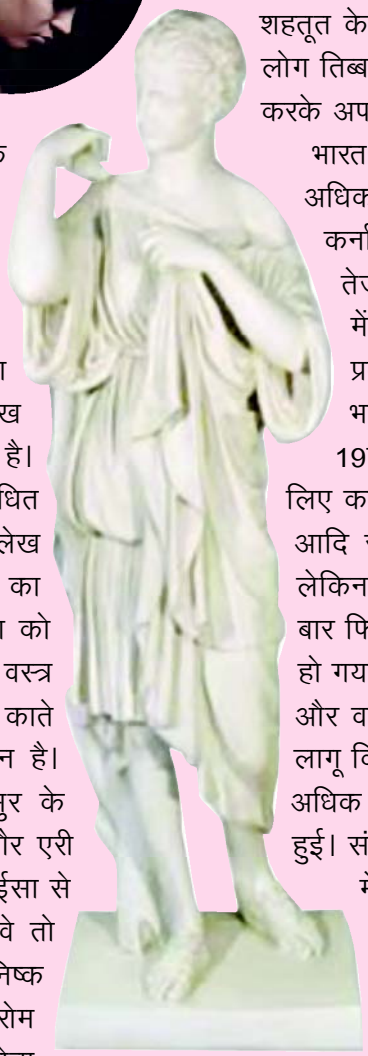

प्राचीन हिन्दी साहित्य में मेरे कीट का पालन एवं मेरे व्यापार से संबंधित अनेक विवरण मिलते हैं। आदिकाल से कश्मीर का उल्लेख रेशमी वस्त्रों के क्षेत्र में किया जाता रहा है। पौराणिक कथाओं में रेशम उत्पादों से संबंधित कौशेय, पट्टवस्त्र, चीनांकुश जैसे शब्दों का उल्लेख है। मनु स्मृति में अनेक स्थानों पर रेशमी वस्त्रों का विशेष उल्लेख है। रामायण के अनुसार सीता को विवाहोत्सव में अनेक प्रकार के रंगबिरंगे रेश्मी वस्त्र भेंट किये गये थे। महाभारत में भी कीटों द्वारा काते गए तंतुओं से निर्मित रेशमी वस्त्रों का वर्णन है। कालिका पुराण के अनुसार राजा नरकासुर के राज्यकाल में किरात रेशमकीट पालते थे और एरी रेशम उद्योग में लगे हुए थे। पुंडन क्षत्रियों में ईसा से बहुत पूर्व ही रेशम उद्योग का प्रचलन था, वे तो सुदूरवर्ती देशों को मेरा निर्यात भी करते थे। कनिष्क के राज्य काल (58 ईसवी पूर्व) में भारत से रोम को कच्चे रेशम का निर्यात वृहत मात्रा में होता था। लगभग 200 ईसवी तक भारत ने चीन तथा दक्षिण यूरोपीय क्षेत्रों के साथ कच्चे रेशम और रेशमी वस्त्रों का वैदेशिक व्यापार स्थापित कर लिया था। सीरिया में प्राचीन कब्रों की खुदाई से भारत निर्मित मेरे वस्त्रों के टुकड़े मिले, जिससे भारत तथा सीरिया के रेशमी व्यापार की प्राचीनता का पता चलता है। भारत के प्रारम्भिक मुस्लिम बादशाहों के ऐतिहासिक अभिलेखों में भी शहतूत और रेशम कीटों का यत्र-तत्र वर्णन है। 16वीं तथा 17वीं शताब्दी में मुगल बादशाहों ने रेशम उद्योग को अत्याधिक महत्व दिया। अबुल फजल की आइने अकबरी (1590 ईसवी) में वर्णन है कि उस समय शहतूत के वृक्ष बहुत अधिक संख्या में थे तथा बहुत से लोग तिब्बत से रेशम कीटों के अंडे लाकर मेरा उत्पादन करके अपनी जीविका चलाते थे।

भारत में मेरे उद्योग का महत्व 17वीं शताब्दी में अधिक बढ़ा तथा 18वीं, 19वीं शताब्दी में बंगाल, कर्नाटक और कश्मीर राज्यों में इस उद्योग की तेजी से उन्नति हुई, लेकिन 1875 में मेरे कीट में होने वाले पेबरीन रोग की उचित रोकथाम के प्रबंध न होने के कारण अन्य देशों की तुलना में भारतीय रेशम उद्योग काफी पिछड़ गया। फिर 19वीं शताब्दी के आरम्भ में इसके पुनर्स्थापन के लिए कर्नाटक, जम्मू तथा कश्मीर तथा पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में पृथक विभाग स्थापित किया गया लेकिन चौथे दशक में हुई औद्योगिक अवनति से एक बार फिर इस उद्योग के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया। मुझे खत्म होने से बचाने के लिए वर्ष 1933 और वर्ष 1938 में भारत सरकार ने संरक्षण कानून लागू किया। द्वितीय विश्वयुद्ध में इस उद्योग को इतना अधिक प्रोत्साहन मिला कि इसकी दिनानुदिन प्रगति हुई। संभवतः इसका कारण हवाई छतरियों के लिए मेरी बढ़ती हुई मांग की आपूर्ति करने वाले राष्ट्रसंघीय देशों में भारत ही एक मात्र देश था।

मेरे उद्योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1949 में केन्द्रीय रेशम बोर्ड की स्थापना हुई, जिसका मुख्य कार्य विभिन्न राज्यों में रेशम कीटों के भोज्य पौधों में सुधार, रेशम कीट पालन, रेशम की कताई

आदि से संबंधित समस्याओं में सुधार करना तथा केन्द्र सरकार को कच्चे रेशम के उत्पादन, आयात, निर्यात आदि मामलों पर सलाह भी देना था।

आज मेरा उद्योग विश्वव्यापी हो चुका है और विश्व के अधिकतम कच्चा रेशम उत्पादक देशों में भारत का स्थान पांचवां है। मुझे रेशम कीट शलभ के कोयों से निकाला जाता है जिससे बुने मुलायम चमकदार कपड़े को ही रेशम या सिल्क कहते हैं।

मैं प्रोटीन के अणुओं से बना प्राकृतिक तन्तु हूं। मेरा उत्पादन और निर्माण अत्यन्त जटिल और पेचीदा है जिसमें अत्याधिक श्रम करना पड़ता है। संभवतः मैं इसीलिए अन्य कृत्रिम संश्लेषित धागों की तुलना में काफी मंहगा हूं।

मुझे सिल्क, यूनानी में सेर, लेटिन में सेरियेकम, प्राचीन अंगेज जाति (एंग्लोसैक्सान) में सिऑल, हिम प्रदेशों में सिल्के, म्यांमार में त्सा, चीन में त्सु (कोकून) एवं त्सी (रेशमकीट) भारत में संस्कृत में पट, असमी में पट, तमिल में पट्टू, कश्मीर में क्रिमकस कहते हैं। भारतीय भाषाओं के सभी शब्द संस्कृत भाषा से उपजे शब्द हैं ओर मेरा सर्वाधिक प्रचलित नाम रेशम शब्द पारसी भाषा से लिया गया है। संस्कृत भाषा में कौशेय का अर्थ कोया और पुण्डरीक का अर्थ रेशमकीट माना गया है।

यह बात तो मैं बड़े गर्व से कहना चाहता हूं कि मेरा इतिहास चाहे कितना भी विवादास्पद रहा हो पर आज भी रेशम उद्योग विश्व में अपना अलग स्थान बनाए हुए है। वास्तव में मेरे धागे से बने रेशमी कपड़ों की तो बात ही कुछ

और है। भारत जैसे विकासशील देश में ही कई तरह का रेशम मिलता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस देश में जितने राज्य हैं उतनी तरह की मेरी क्वालिटी यहां मिलती है। साड़ियों की बात हो, तो क्या कहने, बनारसी सिल्क, बंगाल सिल्क, बंगलौरी सिल्क, मद्रासी सिल्क, मैसूर सिल्क और न जाने कितनी तरह की सिल्क की साड़ियां महिलाओं को तो लुभाती हैं ही। देवी, देवताओं की तस्वीरें देखिए, सभी के अंगवस्त्रों में मेरे रेशमी कपड़े की झलक देखने को मिलती है। ... अर्थात् भारतीय संस्कृति में रेशम प्राचीन काल से समाया है। शहतूत रेशम भारत में सबसे लोकप्रिय किस्म है।

मेरा रेशा प्राप्त करने के लिए रेशम कीट को पाला जाता है। रेशम कीट एक शलभ है, जिसकी झिल्ली शहतूत के पत्तों पर पलकर बढ़ी होती है ओर कोयों का निर्माण करती है। रेशम कीट बॉम्बिक्स मोरी को रेशम उत्पादक किसान पालते हैं क्योंकि यह जंगली रूप में नहीं मिलता है। मेरे उत्पादन के लिये रेशम कीटों को पालने की क्रिया को सेरिकल्चर कहा जाता है। लेकिन मैं यहां यह बता देना जरूरी समझता हूं कि सेरिकल्चर का कार्य इतना आसान नहीं है। अत्यधिक सफाई एवं नियंत्रित तापमान रेशम कीट को पालने के लिए अत्यन्त महत्व रखते हैं अन्यथा रेशम कीट आसानी से रोगों की चपेट में आ जाते हैं। नियंत्रित ताप से मच्छर, मक्खी एवं अन्य कीट इल्लियों को हानि नहीं पहुंचा सकते।

रेशम उद्योग को अनेक छोटी-छोटी इकाइयों में बांटा गया है। (1) बीज उत्पादन, (2) झल्लियों को भोजन उपलब्ध कराने हेतु शहतूत संवर्धन, (3) रेशम कीटों का पालन-पोषण एवं कोयों का उत्पादन, (4) प्राकृतिक रेशम तन्तु के लिए कोयों से रेशा उतारना, (5) बुनाई के लिए उपयुक्त रेशों की छंटाई, (6) वस्त्र निर्माण एवं डिगमिंग, रंगाई एवं छपाई के बाद सज्जीकरण यानी फिनिशिंग आदि।

सही मायनों में मुझे पैदा करने वाले रेशम कीट को दो प्रकारों में बांटा गया है और आज इसकी कई संकर जातियां भी हैं। पहला प्रकार है - कृष्य रेशम कीट या शहतूत पर पलने वाले रेशम कीट और वन्य रेशम कीट जो विभिन्न प्रकार के पौधों पर पलते हैं। स्पष्ट है कि पहले प्रकार पर देश-विदेश का रेशम उत्पादन निर्भर करता है क्योंकि यही कीट उत्कृष्ट

रेशम उत्पादन के लिए उत्तरदायी है। मेरे कीट की मुख्य जाति बॉम्बिक्स मोरी, जिसकी कई अन्य जातियां भी हैं, क्रीमी श्वेत रंग के रेशम का उत्पादन करती है। रेशम कीट की यह जाति पूर्णतः पालतू है और इसे रेशम उत्पादन के लिए घरों में भी पाला जाता है।

शहतूती रेशम कीट अपने जीवन में चार विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता है। पहली अवस्था में मादा शलभ अंडे देती हैं, दूसरे चरण में छोटे-छोटे लार्वा या झल्लियां निकलती हैं, जो शहतूत की पत्तियों पर पलती हैं और पूर्णतः वृद्धि को प्राप्त करने पर कोये यानी कोकून बनाती हैं। कोयों के अन्दर झल्लियां प्यूपा में परिवर्तित हो जाती हैं। ये इसके जीवन चक्र की तीसरी अवस्था होती है। चौथी अवस्था में प्यूपा शलभ में विकसित हो जाता है और कोये में छेद करके बाहर आ जाता है और नया शलभ पुनः अंडा देने योग्य हो जाता है। कोये से निकलने के 2-3 दिन के अंदर नये शलभ मेटिंग के योग्य हो जाते हैं और मादा एक बार में लगभग 400-500 अंडे देती है और अंडे देने के तुरंत बाद मादा शलभ की मृत्यु हो जाती है। रेशम कीट का जीवन चक्र कितना लंबा चलेगा, यह रेशम कीट की प्रकृति एवं जलवायु पर निर्भर करता है, हां यदि एक बार कोये के अंदर शलभ का विकास शुरू हो जाता है तो फिर कोया इस लायक नहीं रह जाता कि उससे रेशम का एक लंबा तंतु प्राप्त किया जा सके। इसलिए जिन कोयों से रेशम तंतु प्राप्त करना होता है, उन कोयो में कीट को प्यूपा अवस्था को नष्ट कर दिया जाता है। केवल उन कोयों को विकसित होने दिया जाता है जिनसे अगली बार के लिए रेशम कीट तैयार करने होते हैं।

मेरा सबसे बढ़िया तंतु उस रेशम कीट से मिलता है जिसका जीवन काल एक साल में पूर्ण होता है यानी केवल एक पीढ़ी पूरे साल में जन्म लेती है। ऐसे कीटों को यूनीवोल्टाइन कहते हैं और प्रायः इनका पालन-पोषण ठंडी जलवायु वाले क्षेत्रों में किया जाता है।

रेशम कीट द्वारा बसंत ऋतु में दिए गए अंडे अगले वर्ष बसंत ऋतु आने पर ही विकसित होते हैं। कुछ जातियों में अंडे देने के तुरंत बाद विकास शुरू हो जाता है और इस प्रकार एक साल में कीटों की कई पीढ़ियां जन्म लेती हैं। ऐसी जातियां बाईवोल्टाइन, ट्राइवोल्टाइन अथवा मल्टीवोल्टाइन कहलाती हैं। ये नाम मेरी एक वर्ष में जन्मी पीढ़ियों के आधार पर रखे जाते हैं। मल्टीवोल्टाइन जातियां उष्णकटिबंधी जलवायु वाले क्षेत्रों में पाली जाती हैं। जहां वे एक वर्ष में 5 से 6 पीढ़ियां पैदा करती हैं और प्रत्येक पीढ़ी का जीवन चक्र 5-6 सप्ताह का होता है। इनके इस जीवन काल को शीत ऋतु में शीत की तीव्रता को बढ़ाकर और लंबा किया जा सकता है।

अब तो संकर जातियों के विकास से भी मुझे प्राप्त किया जाने लगा है। इन संकरों का विकास दो शुद्ध विभेदों के संकरण से किया गया है। चुनी हुई जातियों से विकसित संकर जातियों के कोयों से शुद्ध जातियों की अपेक्षा अधिक मात्रा में एवं लंबा रेशा मिलता है लेकिन संकरण से प्राप्त पहली शुद्ध जाति के कोये ही कच्चे रेशम उत्पादन के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं क्योंकि पुनर्संकरण से कोयों में ऐसे हिटेरोजीनस यानी विजातीय गुण पैदा हो जाते हैं, जिनसे प्राप्त मेरे धागे का कोई व्यावसायिक मूल्य नहीं रह जाता, लेकिन कुछ संकर जातियां इस तरह भली-भांति स्थापित हो गई हैं कि उनके निर्धारित गुणों में स्थायित्व आ गया है। इन्हें फिक्सड हाइब्रिड नाम दिया गया है। आज इनका उत्पादन शुद्ध जातियों की भांति नियमित हो गया है, इसलिए इनका उपयोग व्यापारिक स्तर के कोयों के उत्पादन के लिए किया जाता है परंतु इसके लिए चुनी हुई शुद्ध जातियों को ही प्रयुक्त किया जाता है। मेरी ऐसी स्थापित जातियों के बीच कोयों को पाल कर संकरित कराया जाता है ताकि इनसे प्राप्त पहली पीढ़ी के कोयों को रेशम तंतु प्राप्त करने हेतु औद्योगिक स्तर पर उपलब्ध कराया जा सके।

वैसे तो जंगली रेशम कीट एवं शहतूती रेशम कीट का जीवन चक्र यूं तो लगभग समान ही होता है परंत इनके अंडों एवं लार्वा के आकार एवं आकृति तथा विभिन्न प्रावस्थाओं की समयावधि

में भिन्नता होती है। जंगली रेशम कीट बांज, अरंडी एवं अन्य पौधों पर पलता है। मेरा सर्वाधिक महत्वूपर्ण जंगली रेशम कीट है - टसर रेशम कीट (एन्थीरिया जाति), जिसमें भारतीय टसर कीट ए. माइलिटा, चीनी टसर कीट ए. पेरनाई तथा जापानी टसर कीट ए. यामामी आते हैं। भारतीय टसर कीट के कोये एक रेशम के बने सुदृढ़, वृन्त जो जाति के अनुसार भिन्नता रखते हैं, द्वारा उस पौधे से जुड़े रहते हैं जिस पर टसर कीट पलता है। लेकिन इस वृन्त का रेशम, कोये के रेशम की तुलना में रूक्ष यानी कठोर होता है। चीनी एवं जापानी टसर कीट सामान्यतः दो पत्तियों के बीच में होते हैं जो शाखा या तने से एक रेशमी रिबन द्वारा जुड़े होते हैं। यह रिबन कॉर्टेक्स का भाग होता है।

भारत में मुझे दो अन्य प्रकार के कीटों से भी प्राप्त किया जाता है - मूंगा रेशम कीट यानी एन्थीरिया असामा तथा पालतू एरी रेशम कीट यानी फिलोसेमिया रिसिनी। वन्य अथवा अशहतूती रेशम उद्योग का स्थानीय तौर पर बहुत महत्व है। यद्यपि यह रूक्ष एवं मोटाई में असमान होता है, परन्तु अपनी विशिष्टता एवं देखने में आकर्षक होने के कारण इसका महत्व भी श्रेष्ठतम माना जाता है।

जैसा कि मैं बता रहा था कि रेशम कीटों के संवर्धन को सेरिकल्चर कहते हैं। इस संवर्धन में बड़ी सावधानी और सहनशीलता की जरूरत होती है। रेशम उत्पादक, रेशम शलभ की देखभाल बिल्कुल नवजात शिशु की भांति करते हैं। स्वच्छतापूर्वक एवं नियंत्रित ताप पर इनका पालन किया जाता है। ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में मादा शलभ 300 से 500 अंडे देती है और अंडे देने के लगभग तीन दिन बाद इस शलभ की मृत्यु हो जाती है। रेशम उत्पादकों द्वारा मजदूरों को उपलब्ध कराये गये विशेष प्रकार के कागज के टुकड़ों में अंडों को उठाकर उनका परीक्षण किया जाता है तथा स्वस्थ अंडों के विकास को विलम्बित करने के लिए उन्हें शीत भंडारग्रहों में रख दिया जाता है। यूं तो सामान्य परिस्थितियों में प्राकृतिक रूप से अंडे का विकास 20-30 दिनों में हो जाता है लेकिन रेशम कीट को गर्मियों के मौसम में पर्याप्त भोजन उपलब्ध नहीं हो पाता इसलिए शरद तथा वसंत ऋतु के आरम्भ में अंडों का विकास होने दिया जाता है क्योंकि उस समय पर्याप्त मात्रा में रेशम कीटों को शहतूत की पत्तियां खाने को मिल सकती हैं।

विकास के लिए अंडों को रेशम उत्पादक शीत भंडार ग्रहों से निकालकर इंक्यूबेटर में रखते है। इंक्यूबेटर एक ऐसी मशीन होती है जिसमें अंडजोत्पति के लिए अंडों को उपयुक्त ताप मिल जाता है। लगभग 20 दिनों के बाद अंडे छोटे-छोटे रेशम कीटों में परिवर्तित हो जाते हैं।

रोगमुक्त एवं पूर्णतः सुरक्षित रखने के लिए इन रेशम कीटों को प्लेटों में रखकर इन्हें शहतूत की पत्तियां खाने को दी जाती हैं। शुरू-शुरू में हो यह इतना भुक्खड़ होता है कि पूछिए मत। दिन रात लगातार खाता रहता है। इसकी भूख मिटाने के लिए हर दूसरे तीसरे घंटे में ताजी शहतूत की पत्तियां इनके रक्षक इन्हें देते रहते हैं। अन्ततः इन रेशम कीटों का आकार अपने आरम्भिक आकार से 70 गुना बढ़ जाता है। इस दौरान यह चार बार अपनी त्वचा छोड़ता है। इस क्रिया को निर्मोचन कहते हैं। चार या पांच सप्ताह के बाद यह लगभग 8 सेंमी. मोटा हो जाता है। इधर-उधर चलने के लिए इसके शरीर में 3 जोड़ी टांगें उग आती है।

पूर्णतः विकसित होने पर रेशम कीट खाना बिल्कुल बन्द कर देता है और अब यह कोये यानि अपने लिए बाह्य आवरण बनाने के लिए तैयार हो जाता है। इसके लिए इसे उत्पादकों द्वारा बनाए गए छोटे-छोटे लकड़ी के बक्सों, जिसमें लकड़ी के टुकड़े आदि रखते होते हैं, में रख दिया जाता है। इन लकड़ी के टुकड़ों से रेशम कीट चिपक जाते हैं और कोये बनाने के लिए तैयार हो जाते हैं । वह रेशा, जिससे कोये बनते हैं, रेशम कीट के सिर पर स्थित छेद से बाहर निकलता है। इस छेद से निकले रेशे से बना कोया ही रेशम यानी मैं हूं। कोया बनाने के लिए कीट अपना सिर ऊपर उठाकर 8 (आठ) के आकार में लगातार चारों ओर घूमता है। रेशा बनाने वाला पदार्थ इल्ली

की शरीर की लम्बाई के साथ-साथ दोनों ओर स्थित एक जोड़ी ग्रन्थियों से निकलता है। इस पदार्थ को फाइब्रोइन कहते हैं। यह फाइब्रोइन, दूसरी जोड़ी ग्रन्थियों से निकलने वाले चिपचिपे द्रव सेरिसिन के साथ मिश्रित रूप से स्रवित होता है।

यह द्रव पदार्थ चारों ग्रन्थियों से एक साथ एक ही समय पर स्रवित होता है और स्पिनरेट से एक रेशे के रूप में बाहर निकलता है जो हवा के सम्पर्क में आते ही कड़ा होने लगता है। यह सेरिसिन ही कोया बनाने लिए दो रेशमी धागों को एक साथ जोड़ता है।

रेशमकीट तब तक अपने चारों ओर रेशे को बुनता रहता है जब तक कि सारा का सारा द्रव पदार्थ समाप्त न हो जाए। जब इल्ली कोया बनाना शुरू करती है तो शुरू-शुरू में निकला रेशा रूक्ष और कठोर होता है जो धीरे-धीरे मुलायम और बारीक हो जाता है। एक कोये से प्राप्त रेशा 300 से 1600 गज तक लम्बा हो सकता है। लगभग तीन दिनों में इल्ली पूरा कोया बना पाती है जिसकी लम्बाई 1.5 से 2 इंच तक होती है। कोये का रंग और बनावट रेशम कीट की जाति पर निर्भर करता है।

कोये के पूर्ण होते ही इल्ली, प्यूपा में परिवर्तित हो जाती है, जो इसके जीवन चक्र की तीसरी अवस्था है। कोया बनने के लगभग 15 दिन बाद प्यूपा, कायान्तरण के फलस्वरूप पूर्ण शलभ बन जाता है जो कोये के फटने पर बाहर निकल आता है।

लेकिन जिन कोयों से मुझे प्राप्त करना होता है उनमें शलभ विकसित नहीं होने दिया जाता और उन्हें शीघ्र ही उपचारित किया जाता है क्योंकि शलभ के निकलने पर फटे कोये का रेशमी धागा छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट जाता है जो कपड़ा बनाने के काम नहीं आता। इसलिए पूर्ण शलभ के विकसित होने से पहले ही रेशम उत्पादक कोयों को गर्म ओवन में रख देते हैं जिससे प्यूपा उनके अन्दर ही मर जाते हैं।

प्यूपा को मारने के बाद कोयों को फैक्ट्रियों में ले जाकर गर्म पानी में भरे बर्तनों में डुबो दिया जाता है। पानी में भिगोने से पहले कोयों को उनकी आकृति, आकार और रंग के आधार पर अलग-अलग छांट लिया जाता है उसके बाद अटेरने या फिलेट्यूअर (कोये से धागा निकालकर चरखी पर लपेटने का काम) के लिए फैक्ट्री में मजदूरों को दे दिया जाता है। भीगे हुए कोयों में रेशे ढीले पड़ जाते हैं जिनके सिरों को अटरने के लिए मशीन या चरखी से जोड़ दिया जाता है। सामान्यतः एक बार में 5 या 6 कोयों से एक साथ धागा अटेरा जाता है। इस प्रकार प्राप्त तंतुओं को मिलाकर एक धागा बनाकर एक रील या चरखी में लपेट लिया जाता है।

फिर इन चरखियों में धागा निकालकर बड़ी रीलों में लपेटा जाता है। इन रीलों को अट्टी या लच्छी या स्केइन कहते हैं। इन लच्छियों (15 बड़ी या 30 छोटी) को एक साथ बांधकर छोटे गट्ठर बना लिए जाते हैं जिन्हें बुक कहते हैं। इस प्रकार बनाई गई 30 बुकों को भार लगभग 7 किग्रा. होता है।

इस प्रकार प्राप्त मेरा कच्चा तंतु अभी मशीनी बुनाई के

लिए उतना मजबूत नहीं होता, इसलिए इसे मजबूत बनाने के लिए कई बार बटना होता है। बटने की क्रिया को थ्रोइंग कहते हैं।

कितने धागे एक साथ बटे जाने हैं यह बुने जाने वाले कपड़े के प्रकार पर निर्भर करता है। कच्चे रेशम को कुछ निश्चित बल देकर बाना यानि बूफ (आर-पार) बनाया जाता है लेकिन अधिककतर रेशम तानक या वार्प (लम्बे धागों) के रूप में प्रयुक्त किया जाता है और इसको बटने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती।

बटने के बाद भी धागे में काफी सेरसिन होता है, इसलिए मेरे रेशमी धागे को साबुन के गर्म पानी में उबाला जाता है। सेरिसिन को पूर्णतः हटाने के बाद ही धागे की प्राकृतिक सुन्दरता में निखार आता है। इस प्रकार प्राप्त मेरे तंतु का रंग प्रायः दूधिया सफेद होता है। सेरिसिन को कपड़ा बुनने के पहले और बाद में भी हटाया जा सकता है लेकिन यह बुने जाने वाले कपड़े के प्रकार पर निर्भर करता है। इस उबालने की प्रक्रिया में रेशम का 25 प्रतिशत भार कम हो जाता है। इस क्रिया को विगोंदन या डेग्यूमिंग कहते हैं।

इस भार की क्षतिपूर्ति के लिए धागों को रंगते समय या कपड़ा बुनते समय धात्विक लवण मिला दिए जाते हैं और इस समय मुझे भारित रेशम या वेड सिल्क कहते हैं। हालांकि ऐसा करना कुछ खराब भी नहीं माना जाता पर यह शुद्ध रंगे हुए रेशम की तुलना में कुछ हल्का माना जाता है।

बुनाई से पहले लच्छियों को आकर्षक रंगों में डालकर रंगा जाता है। इस क्रिया को लच्छी रंजन या स्केइन डाइंग कहते हैं। कभी-कभी रेशमी कपड़ों को भी रंगा जाता है इसे वस्त्र रंजन या पीस डाइंग कहते हैं

पहले तो मेरी बुनाई करघों या लूम से की जाती थी परन्तु अब विश्व के अधिकांश देशों में इनका स्थान स्वचालित विद्युत करघों ने ले लिया है। कुछ रेशमी वस्त्र सुंदर और आकर्षक नमूनों के लिए जैकार्ड करघों पर भी बुने जाते हैं।

मेरे कुछ और भी प्रकार हैं जैसेः- दौअपियोनी रेशम असमान दुहरे धागे हैं, जो दो जुड़वा रेशमकीटों द्वारा बनाए गए, एक कोये से मिलते हैं, रेशम के संसाधन में इन दुहरे धागों को अलग नहीं किया जा सकता और इन धागों से बना कपड़ा गांठदार या वेष्टित सा प्रतीत होता है। इसलिए इसका प्रयोग शांटुंग रेशम और अन्य प्रकार के हल्के कपड़ों की बुनाई में सम्मिश्र के तौर पर किया जाता है।

कता रेशम या स्पन सिल्क बुनाई के लिए प्राप्त सारे रेशम की कताई और बुनाई नहीं हो सकती। जिन कोयों से पूर्ण शलभ निकलता है उनके फटने से छोटे-लम्बे अनेक रेशमी तंतु मिलते हैं जिसे रेशम अपशिष्ट कहते हैं। इन तंतुओं की कताई करके जो रेशमी धागा बनाया जाता है। उसे स्पन सिल्क कहते हैं। इसका उपयोग रेशमी, ऊनी तथा सूती कपड़ों में पूरक के रूप में किया जाता है।

टसर या वन्य रेशम सेटर्नाइडी कुल के रेशमकीट से प्राप्त होता है जिनकी इल्लियां बांज या अन्य जंगली पौधों की पत्तियों पर पलती हैं। इस रेशम का उपयोग व्यावसायिक स्तर पर किया जाता है जबकि वन्य रेशम से बने कपड़े जैसे शांटुंग और पुंगी टिकाऊ तो होते हैं लेकिन शुद्ध रेशम जितने मुलायम नहीं।

मेरा उपयोग अधिकतर कपड़ा निर्माण में किया जाता है। क्रेप, टाफटा, शिफॉन, साटन आदि रेशम से ही बनाए जाते हैं। मेरा अन्य कृत्रिम धागों में सम्मिश्र के रूप में भी प्रयोग होता है, जिनसे संश्लेषित कपड़े बनते हैं। सभी प्रमुख रेशम उत्पादक देश मेरा आयात-निर्यात करते हैं।

भारत में रेशम उद्योग, कृषि उद्योग के सर्वाधिक महत्वपूर्ण सहायक ग्रामीण उद्योगों में से एक है जो ग्रामीणों को रोजगार के लिए व्यापक आधार प्रदान करता है।

आज भी मेरे धागे से बनी साड़ियां काफी लोकप्रिय हैं। मेरे धागे से बने कपड़े पर जरी और धागे की कढ़ाई का काम मेरी छटा को और भी निखार देता है। कांचीपुरम (कांचीवरम्) मधुबनी, पोचमपल्ली, बनारसी, बांधनी, तंछोई, कोरा, पटोला और भी कई तरह की साड़ियां और कपड़े भारत देश में मिलते हैं। यदि मेरी इन किस्मों को देखना चाहते हैं तो चलिए न आप भी कीजिए त्योहारों की खरीदारी में अपनी भी भागीदारी।

श्रीमती दीक्षा बिष्ट, वैज्ञानिक-जी
प्रमुख, पीएसडी विभाग
निस्केयर, नई दिल्ली।

विज्ञापनों से विज्ञान आन्दोलन/संचार

नीरू शर्मा

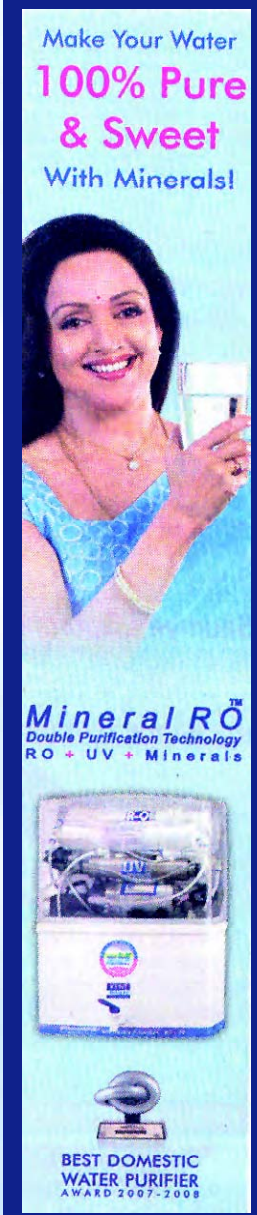

एक आम आदमी अपने लिए या सिर्फ, कुछ खास अपनों के लिए अगर कुछ वक्त निकाल लें तो उसे एक अच्छे इन्सान की उपमा मिल जाती है। आज के व्यस्त युग में (जिसे कलयुग की संज्ञा दी गई है) बहुत कम ही ऐसा हो पाता है कि कोई अपना आपको उस तरह से सहायता करे जैसा कि आप चाहते हैं। लेकिन, इस युग में भी कुछ ऐसा भी है जो हमेशा आपको कुछ न कुछ नयी वस्तुओं, सेवाओं, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं आदि के बारे में आपको अवगत कराता रहता है और बेहतर जिन्दगी जीने को प्रेरित करता है। अरेx ज्यादा सोच में मत पड़िये ये वही विज्ञापन हैं, जिन्हें आप कई बार उनको बेकार समझ महत्व नहीं देते। परन्तु जरूरत पड़ने पर आप उनका लाभ अवश्य ही उठाते हैं।

जब कभी व्यक्ति को कोई पारिवारिक, आर्थिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी या अपनी जीवनशैली को सुधारने की चेष्टा में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जैसा कि अमूमन हर एक व्यक्ति की जिन्दगी में अवश्य ही कभी न कभी होता है तब-तब वही ढाक के तीन पात, यानी कोई नहीं साथ। इस भागती-दौड़ती जिन्दगी में शायद कोई अपना साथ न दे, क्योंकि सबकी अपनी-अपनी प्राथमिकताएं हैं। परन्तु विज्ञापन आपके साथ हमेशा रहते हैं ।

विज्ञापनों का अपना एक प्रारूप होता है, एक खास लक्षण, वे तब तक विभिन्न माध्यमों से आपको लगातार आकर्षित करने की कोशिश करते रहते हैं, जब तक आप उसे और उसके संदेश को समझ नहीं लेते, और जरूरत पड़ने पर परख नहीं लेते। विज्ञापन हमेशा आपके साथ, आपके पास हैं। सवेरे से रात तक, घर से ऑफिस तक, कहीं भी-कभी भी। विज्ञापनों से ही आम आदमी की जीवनशैली बदली है। विज्ञापनों के कारण ही आम आदमी स्वस्थ और बेहतर जीवन जी रहा है। वह अपनी पुरानी रूढ़िवादी, अंधविश्वासी परम्पराओं से आगे निकल, शिक्षा और नई तकनीक और वैज्ञानिक विकल्पों को अपना रहा है।

आज मानव की सोच का दायरा बढ़ चुका है और वह विभिन्न संचार माध्यमों का सदुपयोग करने में सक्षम है। जब हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण जगाने में जन संचार माध्यमों की भूमिका की बात करते हैं तो इन माध्यमों के द्वारा जन साधारण तक पहुंचने वाले विज्ञापनों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। विज्ञापनों द्वारा आम जनता को नयी वस्तुओं, सेवाओं, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं आदि के बारे में उपलब्ध आधुनिक जानकारी मिलती है। इस तरह विज्ञापन बेहतर जिन्दगी जीने की इच्छा में मदद करते हैं, प्रेरित करते हैं। जिन विज्ञान और वैज्ञानिक खोजों से इन्सान का जीवन बेहतर होने की आशा बनती है, उन्हें जन संचार के माध्यमों द्वारा, जिसमें विज्ञापन एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं, आम जनता तक पहुंचाया जा सकता है।

भारतीय समाज में बहुत से वर्षों तक अन्धविश्वासों व रूढ़ियों का राज रहा है। काफी हद तक इसका कारण सही जानकारी का न

होना था। जैसा कि कहा गया है 'डर तब तक है जब तक उसकी जानकारी न हो,' उदाहरणतः चेचक की बीमारी। सदियों तक पूरी दुनिया में समाज इससे डरता रहा, भागता रहा और अंधविश्वासों में तब तक घिरता रहा जब तक इसके इलाज के बारे उन्हें जानकारी हासिल नहीं हुई। हालांकि चेचक के इलाज की खोज एक अंग्रेज वैज्ञानिक डॉ. एडवर्ड जेनर ने वर्ष 1796 में कर ली थी परन्तु उसके बाद भी लाखों लोग इस बीमारी के कारण काल कवलित हुए। अन्ततः वर्ष 1979 में विभिन्न संचार माध्यमों की सहायता से, जिसमें विज्ञापन भी शामिल थे, आम जनता में जागरूकता पैदा कर इस जानलेवा बीमारी को दूर करने के आह्वान द्वारा पूरी दुनिया से चेचक को लगभग समाप्त कर दिया गया।

संचार माध्यमों, चाहे वे समाचार पत्र और पत्रिकाएं हों या फिर टेलीविजन चैनल व रेडियो कार्यक्रम, सभी को बने रहने के लिये विज्ञापनों का सहारा लेना आवश्यक है। इसलिये एक निश्चित अन्तराल के बाद हमको विज्ञापन सुनना, देखना या पढ़ना ही पड़ता है। आज विज्ञापन जनसंचार माध्यमों की आय का एक बड़ा हिस्सा हैं।

संचार माध्यमों के लिये जरूरी है कि वे विज्ञापन दिखाये या सुनाये और विज्ञापनों का अपना एक लक्ष्य होता है वह यह कि तब तक आपको आकर्षित करने की कोशिश करता है जब तक आप उसमें निहित संदेश को समझ नहीं लेते।

विज्ञापनों का आम जीवन पर प्रभाव व महत्व

नकल करना मनुष्य का जन्म जात गुण है, चाहे वो माता-पिता को देख-सुन कर बोलना हो, चलना, उठना या काम करना हो, अथवा शब्दों का ज्ञान हो। वह पहले नकल ही करता है और फिर सीखता है। ऐसे में अपनी इन्द्रियों से अपने आस-पास की दुनिया को देखता और अनुभव करता है। ऐसे में उसका विज्ञापनों के सम्पर्क में आना निश्चित ही है। विभिन्न माध्यमों से थोड़े-थोड़े अन्तराल के बाद आने वाले विज्ञापन अपने खास प्रारूप और चरित्र के कारण हर एक को आकर्षित करते हैं। ऐसे में उनसे अपने आप को अलग रख पाना लगभग असंभव है। विज्ञापनों का आम जीवन पर प्रभाव विवाद का विषय है, उदाहरणतः एक बहस में धूम्रपान पर सवाल उठने पर अंततः यह माना गया कि धूम्रपान की लत पड़ने में सिगरेट के विज्ञापनों का बहुत योगदान होता है। अब इनके विज्ञापनों के प्रसारण व प्रकाशन को प्रतिबंधित कर दिया गया है।

विज्ञापनों से विज्ञान आन्दोलन/संचार

विज्ञापनों की मदद से आम आदमी अधिक संवेदनशील हो कर, नई सोच, तकनीक व विकल्पों को अपना कर देश को

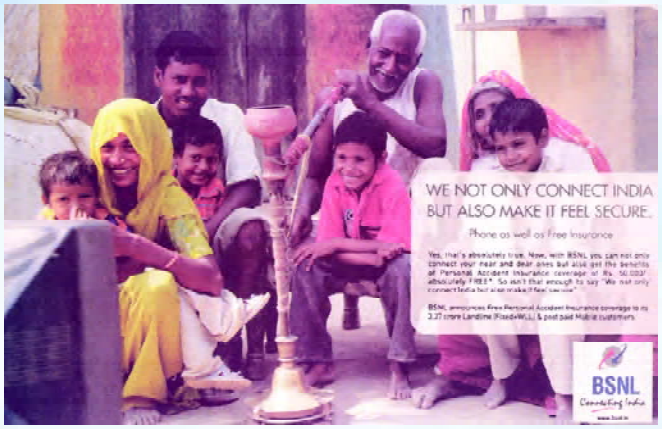

एक नई सुबह की ओर ले जाने में भी योगदान दे पा रहा है। अगर कमी है तो वह है ऐसे विज्ञापनों की जिन्हें सिर्फ वैज्ञानिक दृष्टिकोण व चेतना जगाने के उद्देश्य से बनाया व प्रसारित किया जाए। वैसे पहले की तुलना में अब विज्ञापनों में वैज्ञानिक तथ्यों का उपयोग होना शुरू हो गया है। ऐसा करने से न केवल वस्तु विशेष की सच्चाई की पुष्टि होती है बल्कि लोकप्रियता भी बढ़ती है। कुछ एक विज्ञापन जो कि बच्चों को ध्यान में रख कर निर्मित किये गये हैं, बच्चों में विश्वास की भावना जागृत करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं, उदाहरण बोर्नविटा का विज्ञापन। इसी तरह अल्ट्राटेक सीमेंट के विज्ञापन युवकों को इंजीनियरिंग की कुशलता हासिल कर देश में तकनीकी उन्नति लाने के लिये प्रेरित करते हैं। पैनासॉनिक गृह उत्पादों के विज्ञापन वातावरण को साफ रख, शुद्ध बनाये रखने पर जोर देते हैं। जल बचाओ, ऊर्जा बचाओ, पौधे लगाओ जैसे जनहित में जारी विज्ञापन आम जनता में जागृति पैदा कर जिज्ञासा भी उत्पन्न करते हैं जिनके दूरगामी किन्तु अच्छे परिणाम देखने को मिलेंगे।

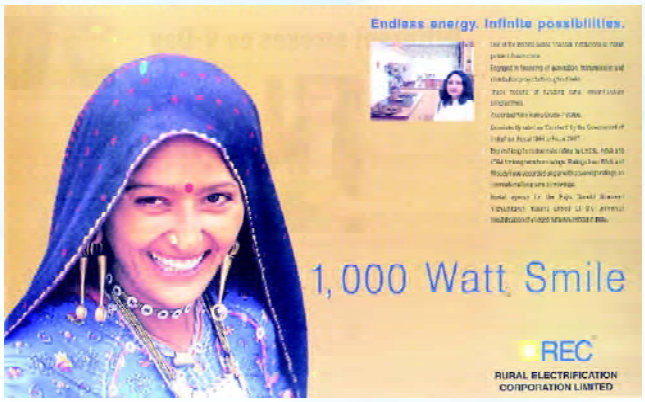

विज्ञापन संचार माध्यमों के बने रहने और शक्तिशाली बनने के लिये आवश्यक है। विज्ञापन के लक्षण व प्रारुप के चलते वे आम इंसान में वैज्ञानिक दृष्टिकोण व चेतना जगाने में अमूल्य योगदान दे सकते है। वैसे सैटेलाइट टेलीविजन के चलते अनेकों चैनल विशेषतः विज्ञान पर आधारित जैसे डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफिक आदि हैं वे बहुत अद्भुत जानकारियां भी देते हैं परन्तु यह जरूरी नहीं कि सब लोग/ आम जनता उन चैनलों को देखे या पसन्द करे, जबकि विज्ञापन आम इंसान को किसी भी चैनल, संचार माध्यम द्वारा पहुंचाया जा सकता है। विज्ञापन को माध्यम बना कर लाखों करोड़ों लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण व चेतना का विकास किया जा सकता है। हमने कुछ उपलब्धियों में विज्ञापनों का बखूबी इस्तेमाल किया है इसलिये उपलब्धियां हासिल भी हुई।

विज्ञापनों के सृजनकर्त्ता, जनसंचार के विशेषज्ञ होते हैं। उन्हें समाज के हर प्रान्त, वर्ग और उम्र की पसन्द-नापसन्द का ज्ञान होता है।

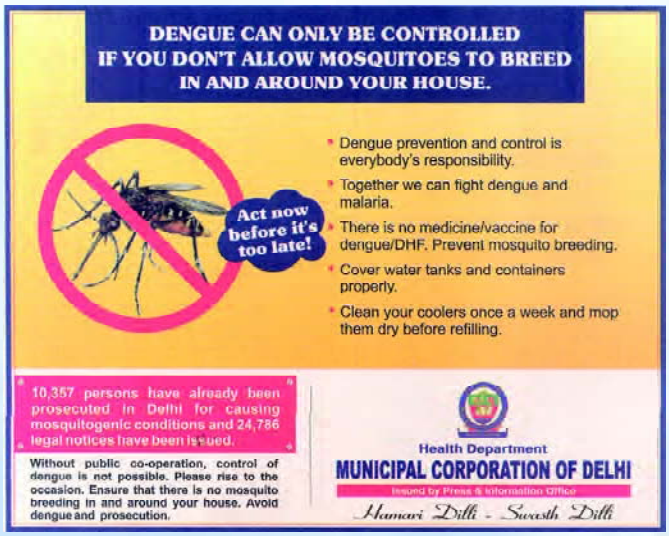

वे एक मनोवैज्ञानिक की भांति होते हैं। उनमें किसी भी वस्तु, सेवाओं, समाचारों को प्रस्तुत करने की कला होती है। ऐसे में

उनके द्वारा रचित विज्ञापन विभिन्न माध्यमों के जरिये आम आदमी तक पहुंच कर अपना प्रभाव छोड़ते हैं। विज्ञापनों के सृजनकर्त्ता आम आदमी की मानसिकता को छूने और बदलने के लिये नवरसों का उपयोग करते हैं और इन्हीं रसों को विज्ञापनों में विभिन्न रूपों से पेश करते हैं। जैसे किसी भी अच्छी कला में इन रसों का उपयोग होता है उसी तरह विज्ञापनों में भी होता है और ऐसे ही विज्ञापन इन्सान के दिल को छूकर मानसिकता और दृष्टिकोण को बदल कर वैज्ञानिक चेतना जगाने का कार्य करते हैं।

जो विज्ञापन आम जनता घर पर बैठे-बैठे सैंकड़ों बार देखती है उन विज्ञापनों को बनाने व प्रसारित करने में लाखों-करोड़ों रुपये व्यय होते हैं। इस श्रेणी में सरकार द्वारा जनहित में जारी विज्ञापन भी आते हैं। शुरू में सरकार इनके ऊपर कम व्यय करती थी फलस्वरूप उन विज्ञापनों से आशा के अनुरूप परिणाम नहीं मिल पाते थे। परन्तु अब सरकार अच्छे विज्ञापनों का महत्व समझते हुये, इनमें काफी निवेश/व्यय कर रही है जिसके अच्छे परिणाम भी सामने आ रहे हैं उदाहरणतः पोलियो का अभियान जिसमें सरकार ने बड़े कलाकारों व अच्छे विज्ञापन सर्जनकर्त्ताओं को शामिल किया और आज भारत लगभग पोलियो मुक्त हो गया है।

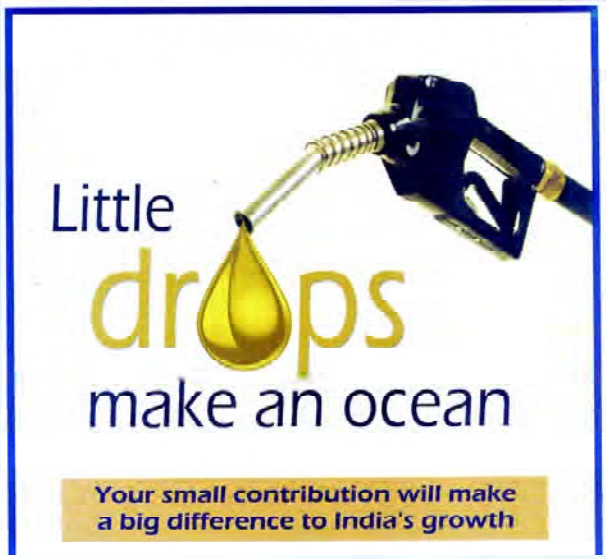

विज्ञापनों की कन्ट्रोल समिति, द एडवर्टाइजिंग स्टैन्डर्ड्स काउंसिल ऑफ इडिया (एएससीआई) है जो विज्ञापनों की विषयवस्तु की नियामक संस्था है तथा भारत में भी काफी अच्छा काम कर रही है और उपभोक्ताओं की शिकायतों को लेकर भी सजग है।

सूचनाओं के संचार में जन संचार माध्यमों की एक अहम भूमिका है और जन संचार माध्यमों के बने रहने में विज्ञापनों की। विगत 50 वर्षों में जनसंचार माध्यमों के क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई है। आज यदि सिर्फ भारत की ही बात करें तो लगभग 62,000 प्रकाशन/समाचार पत्र, लगभग 500 टेलीविजन चैनल और लगभग 500 रेडियो फ्रीक्वेन्सीज उपलब्ध हैं जिनकी मदद से जानकारियां, मनोरंजन कार्यक्रम/लेख विज्ञापनों सहित देश के किसी भी कोने तक पहुंचाये जा सकते हैं।

यदि देश के विभिन्न वैज्ञानिक संस्थान, अपने बजट में प्रावधान रख, अपने-अपने विषयों पर विज्ञापन सृजनकर्त्ताओं द्वारा विज्ञापन बनवाएं व विभिन्न संचार माध्यमों में प्रसारित व प्रकाशित करें, तो वे वैज्ञानिक चेतना जगाने में और विज्ञान आन्दोलन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

श्रीमती नीरू शर्मा, प्रधान तकनीकी अधिकारी
आर्ट एवं ग्राफिक विभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

पुतला फूंकने की परम्परा

भुवनेश कुमार उप्रेती

हमारे देश में पुतला फूंकने की परम्परा है। जब से होश संभाला तो सबसे पहले हमने रावण, मेघनाथ और कुम्भकरण का पुतला हर साल फूंकते देखा ओर आज भी यह परम्परा कायम है।

समय बीतता गया, राजनैतिक समझ भी बढ़ती गई और अब यह परम्परा पूरे विश्व में फैल चुकी है। भ्रष्टाचारियों, अत्याचारियों तथा तानाशाहों के पुतले फूंकना अब आम बात हो गई है। आजकल तो महंगाई, बेरोजगारी तथा भ्रष्ट नेताओं और राजनैतिक पार्टियों के जनता द्वारा पुतल फूंके जाना अब आम बात हो गई है।

इसी संबंध में एक घटना मुझे याद है। सन 2004 में मेरा ट्रांसफर दिल्ली से उत्तरांचल के सुदूर गांव में हो गया। कार्यकाल तीन साल का था। अपने परिवार को दिल्ली छोड़कर मैं अकेला ही गया, क्योंकि वहां बच्चों के लिए अच्छे स्कूल नहीं थे।

कुछ वक्त मैंने होटल में ही गुजारा, क्योंकि अकेले मकान में रहना मेरे लिए संभव नहीं था। कौसानी के हिलक्वीन होटल में ही मैं नाश्ता और रात्रि भोजन लेता था। होटल के मालिक श्री खुल्बे जी अच्छे इंसान थे। वह अच्छी आव-भगत करते थे। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वह मुझे एक शरीफ, मेहनती लड़का दिलवा दें ताकि वह बैंक द्वारा दिए गए मकान में मेरे साथ रहे और खाना पकाना, कपड़े धोना आदि का मेरे घर में रहकर काम करे। उन्होंने मेरी मदद की और एक लड़का जिसकी उम्र 18 साल और नाम प्रमोद था, उसको मेरे पास भेज दिया।

प्रमोद से बात करने पर वह मेरे साथ रहने को तैयार हो गया। मैंने उसको कार्य बता दिए, जो उसको करने होंगे और एक हजार रूपये तनख्वाह के रूप में देने का वादा किया। इसके बाद मैंने होटल छोड़ दिया और बैंक द्वारा दिए गए मकान में प्रमोद के साथ रहने लगा।

साथ रहने पर प्रमोद के बारे में और भी जानकारी मिली। उसने बताया कि गरीबी के कारण वह 12वीं कक्षा में फेल हो गया। घर में कमाने वाला कोई नहीं है, क्योंकि पिताजी मानसिक रूप से बीमार हैं। खेती के लिए जमीन बहुत कम है क्योंकि काफी जमीन दो बहनों की शादियों के लिए बेचनी पड़ी।

घर में खाने को अनाज तक नहीं हैं और नौकरी कोई मिल नहीं रही थी इसलिए मैंने सोच लिया था कि अब मैं घर

में नहीं रहूंगा। प्रमोद का काम देखकर मुझे वह ईमानदार और मेहनती लगा। एक दिन मैंने उसको सुझाव दिया कि यदि वह 12वीं कक्षा की पढ़ाई करना चाहता है तो वह कर ले, क्योंकि मेरे साथ रहने पर उसको ज्यादा काम भी नहीं है और बाकि समय वह पढ़ाई में लगाए और ओपन स्कूल से 12वीं कक्षा में दाखिला ले ले। मैंने उसको आर्थिक मदद की भी पेशकश रखी। उसने कहा कि पेपर के दौरान 10,15 दिन की छुट्टी देनी पड़ेगी, जिसके लिए भी मैं राजी हो गया। क्योंकि मुझे उसके भविष्य की चिन्ता थी।

प्रमोद ने ओपन स्कूल से 12वीं कक्षा के लिए प्रवेश ले लिया। दाखिले की फीस व किताबों के लिए खर्च मैंने ही दिया। किताबें आने के बाद भी वह पढ़ाई में ध्यान नहीं दे रहा था। दिन में आराम करता और रात को जल्दी सो जाता था। 12वीं तो वैसे भी बोर्ड की परीक्षा होती है जिसको पास करने के लिए प्रतिदिन 5 घंटे की पढ़ाई जरूरी है, लेकिन जब इंसान का पेट भरा होता है तो वह मेहनत की नहीं सोचता है।

कई बार मैंने उसे समझाया कि केवल दाखिला लेने से परीक्षा पास नहीं होती, उसके लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, जिस तरह से तुम पढ़ाई कर रहे हो मुझे नहीं लगता कि तुम पास कर पाओगे। लेकिन वही हुआ जिसकी मुझे आशंका थी।

प्रमोद फेल हो गया, इसकी जानकारी मुझसे हमारे बैंक के सहकर्मी श्री यादव जी ने दी। मैं जान गया था फिर भी मैंने प्रमोद से नहीं पूछा। प्रमोद सुबह शाम खाना पकाकर मुझे देता रहा, लेकिन मुझसे बात नहीं कर पा रहा था। रिजल्ट के एक सप्ताह बाद शाम को चाय के वक्त मुझे डर-डर के बताया कि साहब मेरा रिजल्ट ठीक नहीं रहा।

मैंने पूछा क्या हुआ तुम्हारे रिजल्ट कोi तो बोला - ठीक नहीं रहा। ठीक नहीं रहा का क्या मतलब। तो बोला कि मैं फेल हो गया हूं। मैंने कहा मेरे हिसाब से तुम्हारा रिजल्ट बिल्कुल ठीक है, जितनी तुमने पढ़ाई की है उसमें विद्यार्थी फेल ही होते हैं। तुम्हें विश्वास हो न हो लेकिन मुझे पूरा विश्वास था कि तुम फेल ही होगे। तुम मेरी उम्मीदों में खरे उतरे हो। जब तुम मेरे पास आये थे तो फेल होने का दोष गरीबी और घर के माहौल को दे रहे थे, लेकिन मैंने तुम्हें सारी सुविधाएं दी फिर भी तुम उत्तीर्ण नहीं हुए। क्योंकि तुम्हारी तरफ से मेहनत का अभाव था।

प्रमोद की नज़रें नीची थीं और वह मेरे से आंख नहीं मिला पा रहा था। मुझे लगा कि उसे अपनी गलती का अहसास हो रहा था। मैंने उसे समझाया कि बिना परिश्रम के कुछ भी हासिल नहीं हो सकता,जिस काम को करना है उसमें पूरी मेहनत और ईमानदारी से जुट जाओ तो वह कार्य सफल हो जाता है। उसने मुझे आश्वासन दिया कि वह इस वर्ष कड़ी मेहनत करेगा और उत्तीर्ण होकर दिखाएगा। मैंने भी उसे एक और मौका देने का वायदा किया और चेतावनी भी दी कि यदि तुम उत्तीर्ण नहीं हुए तो फिर मैं तुम्हारी पढ़ाई के लिए आर्थिक मदद नहीं करूंगा और फेल होने पर तुम्हारी पढ़ाई पर किया गया खर्चा तुम्हारी तनख्वाह से काट लिया जायेगा।

प्रमोद ने पढ़ाई में ध्यान देना शुरू कर दिया था। वह बिना कहे रात को देर से सोता और सुबह 4 बजे उठकर पढ़ाई शुरू कर देता था। कुछ दिन ठीक तरह से पढ़ाई करने के बाद वह फिर गांव के आवारा बच्चों के साथ खेलने लग गया। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे की 12 दिन के शोक के बाद वह अपने पुराने रंग-ढंग में दिखाई दे रहा था।

वर्ष 2007 का क्रिकेट का वर्ल्ड कप शुरू हो पाया था। हर तरफ क्रिकेट की चर्चा हो रही थी। चार साल बाद यह मौका आता है तो कोई भी इसको गवांना नहीं चाहता है। हमारा देश क्रिकेट प्रेमियों की अव्वल श्रेणी में आता है, ऐसे में प्रमोद कहां पीछे रहने वाला था। दिन रात क्रिकेट मैच देखना और उसी के बारे में चर्चा करने में दिन निकल जाता था। यदि भारत कोई मैच जीत जाता तो खुशियां मनाई जाती और हार जाता तो खिलाड़ियों और सलेक्शन बोर्ड के सदस्यों को कोसना शुरू हो जाता था। गांव के सभी लोग आस लगाये हुए थे कि इस बार का वर्ल्ड कप भारत को ही मिलेगा। लेकिन जो हुआ उसकी भारतवासियों को उम्मीद नहीं थी। हमारी क्रिकेट की टीम सेमीफाइनल में ही हार गई। ऐसी शर्मनाक हार से पूरे देश में शोक की लहर छा गई। टीवी चैनल/अखबार/गांव/शहर/कस्बा और तो और संसद में भी यही विषय हॉट-टॉपिक बन गया।

टीवी चैनल/मीडिया की रिपोर्ट के मुताबिक पूरा देश इस हार की चपेट से ग्रस्त था। रोष इस कदर भड़का कि जगह-जगह क्रिकेट खिलाड़ियों के पुतले फूंके जा रहे थे। कुछ शीर्ष खिलाड़ियों के पुतले फूंके जा रहे थे। कुछ शीर्ष खिलाड़ियों के घर के बाहर प्रदर्शन किए जा रहे थे। उनके घर तोड़े जा रहे थे और कई जगह सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाया जा रहा था। लोग भारतीय कोच और बीसीसीआई को भी नहीं बख्श रहे थे। जब ऐसी गर्म हवा पूरे देश में फैली हुई थी

जिसकी हर पल की खबर मीडिया दे रहा था तो ऐसे में उत्तरांचल का छोटा-सा गांव चनौदा कैसे अछूता रहता। यहां भी प्रदर्शन करने की सुगबुगाहट शुरू हो गई जिसकी कमान प्रमोद और गांव के कुछ आवारा लड़कों ने अपने हाथ में ले ली।

मैं सुबह सैर करके घर में आया ही था कि प्रमोद मेरे पास आकर बैठ गया और बोलाx आपके लिए अदरक वाली चाय बना दूं। आज रविवार है आप दूसरी बार चाय पीते हैं। मैंने भी चाय के लिए हां कह दिया।

वह थोड़ी देर में चाय बना लाया और खुद भी मेरे साथ बैठ गया। मुझे लग गया था कि आज इसे कुछ फरियाद करनी है। वह मुझसे पूछने लगा, चाय कैसी हो रही है। मैंने इसमें काली मिर्च और चाय का मसाला भी डाला है, क्योंकि आपको जुक़ाम लगा है। मैंने कहा चाय बढ़िया हो रही है। मैंने प्रमोद से पूछा तुमने चाय क्यों नहीं लीi बोला मेरा मन नहीं कर रहा है। मैंने पूछा ऐसा क्या हुआi उसने हल्का सा हंस दिया और फिर शान्त हो गया। कुछ देर बाद बोला आपसे एक परमिशन चाहिए। मैंने पूछा किस बात की परमिशन चाहिएi ऐसी कोई खास बात नहीं है, लेकिन कुछ दिन से मेरा मन उदास है।

क्या तुम घर जाना चाहते होi नहीं ऐसा नहीं है। मैंने उसे पूछा ऐसा भी नहीं है और वैसा भी नहीं है तो क्या बात हैi सही तरह तो बताओ। तो वह बोला भारत वर्ल्ड कप से बाहर हो गया है इसलिए मै उदास हूं।

तो यह बात हैx

कल हम गांव के क्रिकेट प्रेमी इस हार के विरोध में प्रदर्शन करना चाहते हैं हम सबने मिलकर एक कमेटी बनाई है, जिसकी कमान मुझे दी है। हम सब चनौदा से लेकर कौसानी तक पद यात्रा करेंगे और भारतीय क्रिकेट टीम के कैप्टन तथा शीर्ष खिलाड़ियों का पुतला जलाएंगे और हाय-हाय के नारे लगाएंगे। मुझे आप इस प्रदर्शन के लिए परमिशन दे दीजिए। मैंने उसे समझाया कि हार और जीत जीवन का हिस्सा है और एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इस हार को दिल से इतना लगाना नहीं चाहिए कि हम अपना होश ही खो बैठें। खेल को खेल की भावना के साथ खेलना चाहिए। हर खेल में एक पक्ष की हार निश्चित होती है। प्रमोद ने पूछा, क्या आपको इस हार का दुख नहीं है। तो मैंने कहा दुख हुआ लेकिन इस दुख का पागलपन मुझ पर सवार नहीं है जिस तरह से पूरे देश में पागलपन आगज़नी का माहौल बना हुआ है। जो अच्छा खेलता है जीत उसी की ही होती है। हार से हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और जीत का घमण्ड हमें ढोना नहीं चाहिए।

प्रमोद को मेरी बात रास नहीं आ रही थी। फिर बोला मुझे तो पूरा विश्वास था इस बार का वर्ल्ड कप हमारी क्रिकेट टीम की जीत कर लाएगी, लेकिन इस हार से मैं बहुत निराश हो गया हूं। मुझे आप परमिशन दें ताकि कल हम भी अपना रोष प्रकट करें। हमने पत्रकार को भी सूचित किया है उसने आश्वासन दिया है कि इस प्रदर्शन की रिपोर्ट अखबार में छापेगा।

प्रमोद अपनी दलीलें देकर किसी भी तरह से इस प्रदर्शन की परमिशन मुझसे मांग रहा था जो कि मुझे गंवारा नहीं थी।

मैंने प्रमोद से कहा यदि तुम्हें भारतीय टीम की जीत की उम्मीद थी तो मैं भी यह उम्मीद लगाए हुए था कि तुम जरूर इस बार 12वीं कक्षा में उत्तीर्ण होंगे। लेकिन तुमने मेरी तथा अपनी माता-पिता की उम्मीदों पर पानी फेरा है। हम लोगों में यही कमी है कि हम अपनी कमियों/खामियों को नजर अंदाज करते हैं और दूसरे की कमियों का ढिंढोरा पीटते हैं। भारतीय टीम के हारने से तुम्हें कोई निजी हानि नहीं हुई है लेकिन 12वीं कक्षा में फेल होने से तुम्हारा एक साल का कीमती वक्त बर्बाद हुआ है। मेरे विचार से तुम और तुम्हारे साथी जो इस वर्ष फेल हुए हैं उनको नैतिक दृष्टि से कोई हक नहीं है कि वह वर्ल्ड कप में भारतीय क्रिकेट टीम की हार के लिए प्रदर्शन करें। हमें दूसरों की कमियों/बुराइयों/खामियों को आंकलन करने से पहले अपनी कमजोरियों/खामियों/बुराईयों का पुतला फूंकना चाहिए।

यदि अभी भी तुम प्रदर्शन करना चाहते हो तो मेरी भी एक शर्त है। वह यह है कि यदि तुम अगले वर्ष 12वीं कक्षा में फेल हुए तो मैं भी तुम्हारा पुतला फूंकूंगा। इतना सुनने के बाद वह सिर झुकाकर बैठा रहा और कुछ समय बाद अपने काम में जुट गया।

इस बात का असर यह हुआ कि गांव में भारतीय टीम की हार का प्रदर्शन नहीं हुआ और पप्पू (प्रमोद) अच्छे नम्बरों से 12वीं पास हो गया।

श्री भुवनेश कुमार उप्रेती
सी-22, एश्वर्यम अपार्टमेन्ट, प्लाट नं.17, सेक्टर-4,
द्वारका, नई दिल्ली - 110075

कृषि के माध्यम से पर्यावरण का संतुलन

मनोज कुमार एंव ओमप्रकाश जोशी

आधुनिक समय की जरूरतों को पूरा करने की होड़ में मानव द्वारा चालित विभिन्न कार्यो से धरती की जलवायु में तेजी से बदलाव हो रहा है। आज वातावरण में ग्रीन हाऊस गैसों की मात्रा काफी बढ़ गई है और बढ़ती हुई गरमी से अनेक परिवर्तन हो रहे हैं। तापमान में बढ़ती गर्मी से फसलों की बढ़वार, आकार'प्रकार आदि परिवर्तन होने की आशा है। ऐसे समय में कृषि को सुरक्षित बनाने के साथ-साथ इसे पर्यावरण के अनुकूल बनाने की भी जरूरत है।

प्राकृतिक संसाधन देश की अमूल्य सम्पदा हैं और इन पर देश के प्रत्येक नागरिक का समान अधिकार है इस कारण इन संसाधनों का संरक्षण करना देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य हैं तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव काफी बढ़ गया है। प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध इस्तेमाल के कारण धरती की उर्वरता में कमी, मूल्यवान जल संसाधनों में नियमित गिरावट, तथा सूखे और बाढ़ जैसी प्रतिकूल स्थितियां प्रकट हुई हैं। यह चिंता का विषय है जो हमें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व प्रबंधन पर ध्यान देने को मजबूर करता है। भारत सरकार ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व उचित प्रबंधन पर समुचित विचार-विमर्श के बाद विभिन्न मंत्रालयों द्वारा अनेक योजनाएं चलाई हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय देश के नीति-निर्माताओं के सामने देश की तेजी से बढ़ती जनसंख्या को भरपेट भोजन उपलब्ध कराना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। देश की खाद्यान्न जरूरत को पूरा करने तथा पैदावार बढ़ाने के लिए फसलों की बीमारियों पर नियंत्रण के लिए रसायनों तथा नाशी जीवनाशी आदि का अव्यवस्थित रूप से अंधाधुंध उपयोग किया है इसके फलस्वरूप पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। कृषि क्रियाओं में रसायनों के संतुलित उपयोग के साथ-साथ जैव रसायनों का इस्तेमाल करना पर्यावरण संतुलन की

दृष्टि से तर्कसंगत है। जैविक तरीकों से फसलों की सहिष्णु किस्मों का सृजन करने की जरूरत है जो रोग प्रतिरोधी होने के साथ साथ नाशी जीवनाशी सहिष्णु हो जिससे रसायनों का कम व संतुलित मात्रा में इस्तेमाल करना पड़े और पर्यावरण सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। खाद्य फसलों, सब्जी तथा फल वाली किस्मों में उन्नत जैव प्रजनन द्वारा सुधार के साथ पर्यावरण को संरक्षित किया जा सकता है।

विभिन्न कृषि कार्यों में ऊर्जा के लिए ईंधन का इस्तेमाल होता है जिससे पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है। अलग-अलग प्रकार के कृषि कार्यों में ऊर्जा की बहुत मात्रा में खपत होती है अतः इस प्रकार की कृषि मशीनरी के सृजन व इस्तेमाल की जरूरत है जिसमें कम से कम ऊर्जा का इस्तेमाल करना पड़े। इस प्रकार विभिन्न कृषि मशीनरी से निकलने वाले प्रदूषण से पर्यावरण की सुरक्षा की जा सकती है। जैविक तरीकों से ईंधन तैयार करना भी इसका विकल्प हो सकता है जिसमें जैट्रोफा, शैवालों, मक्का से इथेनाल, ज्वार बायोमास किण्वन द्वारा इथेनाल तैयार करना आदि विधियां शामिल हैं। इस प्रकार के ईंधन का उपयोग करने से ग्रीन हाऊस गैसों के उत्सर्जन में गिरावट आएगी। टिकाऊ कृषि के लिए पर्यावरण अनुकूल तकनीकों का उपयोग करना जरूरी है

इस संदर्भ में भारतीय संस्कृति के प्राचीन काल में अपनाई गई कृषि क्रियाओं पर ध्यान देना काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि प्राचीन काल की कृषि क्रियाएं और तकनीकें पूरी तरह से पर्यावरण अनुकूल थी। इसमें जैविक कृषि सबसे महत्वपूर्ण है भारतीय संस्कृति के वैदिक साहित्य के अनुसार भारत भूमि को भारतमाता माना जाता है तथा पर्वतों, नदियों व जलाशयों को देवी-देवता के रूप में श्रद्धाभाव प्रकट किए गए हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार कृषि था तथा काफी लम्बे समय तक व्यवसाय का मुख्य साधन कृषि ही था। खेती - बाड़ी के कार्यों से लोग अपना पेट भरने के अलावा अन्य सामाजिक व्यापारिक व आर्थिक कार्यों में खाद्य फसलों का आदान प्रदान भी करते थे। इसका प्रमाण मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा सभ्यता के साक्ष्य हैं जिसमें कृषि के उपकरण, खाद्यान्न व अनाज को भंडारित करने के स्थान, ईंटों के मकान, दैनिक उपयोग के बर्तन आदि शामिल हैं। प्राचीन भारतीय सभ्यता में प्राकृतिक संसाधनों जीव-जन्तुओं, वृक्ष व वन संरक्षण आदि का व्यापक उल्लेख मिलता है। इससे पता लगता है कि प्राचीन भारतीय समाज में संरक्षणवादी अवधारणा का बहुत महत्व था।

आधुनिक कृषि में इस परिवेश में भारी बदलाव आ गया है। आज भी भारत विविध जैव व जलवायु विविधता से सम्पन्न है तथा अनेक कृषि जलवायु क्षेत्रों में बंटा हुआ है। पिछले 5-6 दशक से अपनाई गई रसायनिक उर्वरकों के उपयोग वाली खेती से निसंदेह उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है लेकिन इससे पर्यावरण संकट, भूमि के उपजाऊपन में गिरावट जैसी अनेक समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। प्राचीन काल में अपनाई गई प्रणाली इस आधुनिक रासायनिक उर्वरक उपयोग वाली कृषि तुलना में संकुचित लगने लगी। इसी दौरान अधिक उत्पादन की होड़ में कृषि प्रणाली में रासायनिक उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग किया गया। खेत पर आने वाले कीट और खरपतवार के रूप में आस-पास उगने वाली वनस्पति को समाप्त करने के लिए रासायनिक उर्वरक, कवकनाशी व कीटनाशी रसायनों का अधिक अंधाधुंध इस्तेमाल किया गया। जगह-जगह बोरवैल खोदने से जल प्रबंध पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। कृषि कार्यों में गाय-बैल की जगह ट्रैक्टर का इस्तेमाल होने लगा। मशीनरी के अधिक उपयोग से भूमिहीन व गरीब कृषि श्रमिकों के रोजगार प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुए। इसी दौरान कृषि कार्यों में बिजली, पानी, यूरिया, डीजल-पेट्रोल, कीटनाशक तथा

रासायनिक उर्वरकों की प्रधानता हो गई। जब कृषि के अधिकांश कार्य डीजल-पेट्रोल पर आधारित हो गए तो उसके बाद डीजल-पेट्रोल के दामों मे तीव्र वृद्धि होने लगी और खेती बाड़ी के कार्य गरीब व छोटे किसानों की क्षमता से परे होने लगे। समय-समय पर भारतीय वैज्ञानिकों ने रासायनिक उर्वरकों के असंतुलित उपयोग से भूमि के उपजाऊपन को कायम रखने तथा खाद्यानों में अनेक प्रकार के पोषक तत्वों की कमी के बारे में चिंता व्यक्त की है। इन रासायनिक पदार्थों में कीटनाशक, रासायनिक-खादें,, खरपतवार नाशक, चूहे मारने की दवाएं, कृमि नाशक, फफूंदीनाशक तथा अन्य रसायन शामिल हैं। इन रासायनिक पदार्थों के असंतुलित उपयोग से जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण तथा वायु प्रदूषण में वृद्धि हुई है।

पृथ्वी पर जल के मुख्य स्रोतों में नदियां, झील तथा वर्षा से प्राप्त होने वाला जल शामिल है। कृषि में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न प्रकार के रसायनों से जल प्रदूषण की समस्या बड़ रही है। इसके अलावा तेजी से बढ़ते शहरीकरण व औद्योगिकीकरण से हमारी पवित्र नदियां प्रदूषित हुई हैं। इन नदियों के आस-पास का भूजल दूषित हो रहा है। इससे पेयजल का संकट बढ़ता जा रहा है। इसके लिए कृषि कार्यों में रसायनों के संतुलित इस्तेमाल के साथ वर्षा जल को एकत्र करने के लिए जल संग्रहण की वैज्ञानिक तकनीकों का इस्तेमाल करना होगा। प्रदूषित जल से मलेरिया, डेंगू, पीत-ज्वर जैसी बीमारियां फैलती हैं। जल प्रदूषण से पर्यावरण एवं स्वास्थ्य दोनों को ही खतरा है। इसके लिए शिक्षा, जागरूकता, प्रशिक्षण व चेतना बहुत जरूरी है। हमें प्राचीन काल की भांति इस प्रकार की अवधारणा विकसित करनी होगी जिसमें लोग अतिक्रमण को अपराध मानते थे, वृक्षारोपण करना तथा तालाब आदि का निर्माण तथा नलकूप खनन करना अपना संस्कृति कर्तव्य समझते थे, नदियों को साफ व सुरक्षित रखने में सहयोग करते थे।

उपरोक्त तथ्यों से यह पता लगता है कि कृषि की प्रगति के साथ पर्यावरण सुरक्षा बहुत जरूरी है अन्यथा विष्व में मानव जाति को प्रर्यावरण प्रदूषण के प्रतिकूल प्रभाव से सुरक्षित रखना संभव नहीं होगा। इसके लिए अनाज सब्जी तथा फलों में परम्परागत प्रजनन तकनीकों व जैव प्रौद्योगिकी तकनीकों द्वारा सुधरी व उन्नतशील किस्मों का विकास करके पर्यावरण प्रदूषण को कम किया जा सकता है। प्रजनन के वैज्ञानिक तरीकों द्वारा रोग-प्रतिरोधी किस्मों के विकास से कीट-फंफूद नाशक के रसायनों के इस्तेमाल को कम करके भी पर्यावरण प्रदूषण कम किया जा सकता है। अन्य खाद्यान्न फसलों में नाईट्रोजन स्थिरीकरण प्रक्रिया में वृद्धि करके रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल में कमी की जा सकती है जिससे प्रदूषण में कमी होती है। इसी तरह उचित किस्म की घासों के चयन व सुधार द्वारा नदियों के तहबंधी पहाड़ी क्षेत्रों में फल बागानों तथा मैदानी क्षेत्रों के चरागाहों के मृदा कटाव तथा भूस्खलन जैसी समस्याओं से निपटा जा सकता है। इनके अलावा कृषि को पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए टिकाऊ खेती की तकनीक के साथ-साथ, पारम्परिक खेती के साथ-साथ कृषि वानिकी, जैविक खेती, रसायनों का संतुलित इस्तेमाल, जल प्रबंधन तकनीकों को अपनाना जरूरी है। इसके लिए वैज्ञानिकों, किसानों, नीति निर्माताओं, अनुसंधानकर्ताओं, सार्वजनिक व निजी क्षेत्र सभी को मिलकर एकजुट प्रयास करने होंगें।

मनोज कुमार एंव ओमप्रकाश जोशी
तकनीकी अधिकारी,
हिन्दी अनुभाग, भा.कृ.अनु.प.,
कृषि भवन, नई दिल्ली

भविष्य में कैसी होंगी भाषायें

ज्ञानेन्द्र मिश्र

प्रसिद्ध सिने अभिनेता अक्षय कुमार खतरों के खिलाड़ी नामक टी.वी. धारावाहिक में किसी भी खतरे के लिये अभिनेत्रियों की तैयारी एक मंत्र पाठ से करते थे ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धीयो यो नः प्रचोदयात्।।। यह प्रसिद्ध 'गायत्री-मंत्र' है जो वैदिक संस्कृत में लिखा गया है। वैदिक संस्कृत आज से लगभग 4500 सौ वर्ष पहले बोली जाती थी। यह भारतीय यूरोपीय भाषाओं के भारतीय-ईरानी शाखा की लगभग सबसे पुरानी भाषा है। लगभग 600 वर्ष ईसा पूर्व इसका स्थान संस्कृत भाषा ने ले लिया। जिसकी पहचान पाणिनी के व्याकरण से होती है। पाणिनी की संस्कृत तथा आजकल की संस्कृत भाषा अब शायद ही कहीं आम बोलचाल की भाषा हो। इतने सशक्त व्याकरण एवं इतिहास के होते हुये भी, धीरे धीरे यह भाषा सामान्य आदमी के प्रयोग से दूर हो गयी। लगभग यही हाल सभी प्राचीन भाषाओं का है। या तो उन्होंने नयी परिवर्तित भाषाओं के लिए जगह छोड़ दी है या उनका इस हद तक सरलीकरण हो गया है कि वे लगभग नयी भाषाओं की तरह बन गईं हैं।

भाषाओं के भविष्य की अनिश्चितता की चर्चा करते हुए भाषा विज्ञानी डेविड ग्रेडाल प्रसिद्ध वैज्ञानिक पत्रिका साइंस के अपने लेख में एक घटना का हवाला देते हैं। सन् 1980 में प्रसिद्ध अमेरिकी भाषा विज्ञानी थॉमस सीबाक से इस बारे में राय मांगी गयी कि लगभग 10,000 वर्ष बाद की पीढ़ी को उन जगहों की सूचना कैसे दी जाये जहाँ खतरनाक नाभिकीय उत्सर्जनों को छुपाया गया है। 'थॉमस सीबाक' की स्पष्ट राय थी कि ऐसी कोई भाषा या साधन नहीं है जिससे 300 पीढ़ी बाद कोई सूचना प्रामाणिक रूप से बताई जा सके। अंग्रेजी भाषा अधिक से अधिक तीन पीढ़ी या 100 वर्ष तक के लिये ही सुरक्षित भाषा है। उन्होंने इस संबंध में रिले-प्रणाली की सलाह दी। जैसे ही भाषा में अपेक्षित परिवर्तन हो जाये, पुरानी सूचनाओं को नयी परिवर्तित भाषा में पुनः लिखा जाये, यह

प्रक्रिया हर बार दुहरायी जाये। अन्यथा आने वाली पीढ़ियाँ हमारी सूचनायें एवं साहित्य, उनके मूल संदर्भों के सापेक्ष, ग्रहण नहीं कर पायेंगी।

समय के साथ-साथ शब्दों के अर्थ बदलते रहते हैं। जिन शब्दों का प्रयोग कम होता है, कालान्तर में उनके अर्थ बदल जाते हैं। इतना ही नहीं भाषा धीरे-धीरे बोलचाल की भाषा के सुविधानुसार सरलीकृत होती जाती है। इसका असर तुरन्त नहीं दिखता पर समय की लम्बी पृष्ठभूमि में ये अन्तर मुखर हो उठते हैं। संस्कृत जब संभ्रान्त समाज की भाषा थी तो संस्कृत का सरलीकृत रूप प्राकृत जन सामान्य की भाषा थी। कालान्तर में जब प्राकृत साहित्य की भाषा हो गयी तो इसका सरलीकृत रूप अवहट्ट जन सामान्य की भाषा हो गयी। धीरे-धीरे इसी प्रक्रिया से अपभ्रंष तथा पुनः आधुनिक हिन्दी विकसित हुयी। नाथ सम्प्रदाय के संतों की अवहट्ट में लिखी कवितायें आज के हिन्दी पाठकों के लिये दुरूह होती हैं, जैसे कि वे हिन्दी में न होकर किसी अन्य भाषा में लिखी गयी हों। जबकि वे कवितायें आधुनिक हिन्दी के पूर्ववर्तीस्वरूप में ही लिखी गयी हैं।

यदि भाषाओं के वैश्विक परिदृश्य पर ध्यान दें तो विश्व की 10 सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में दो भारतीय भाषायें हिन्दी एवं बंगाली क्रमशः तीसरे और आठवें स्थान पर हैं। चीनी भाषा 'मंदारिन' सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। अंग्रेजी दूसरे स्थान पर है, अंग्रेजी विज्ञान एवं तकनीकी की भाषा बनी हुई है। विकासशील देशों में, आर्थिक कारणों से, इसे सीखने की जबरदस्त होड़ मची हुयी है।

विश्व की 10 प्रमुख भाषायें एवं उनके बोलने वाले लोग

क्र.सं.	प्रमुख भाषायें	बोलने वालों की संख्या (लाख में)
1	चीनी	11130
2	अंग्रेजी	3720
3	हिन्दी/उर्दू	3160
4	स्पेनी	3040
5	अरबी	2010
6	पुर्तगाली	1650
7	रूसी	1550
8	बंगाली	1250
9	जापानी	1230
10	जर्मन	1020

वर्ष 2050 में 15 से 24 वर्ष आयु वर्ग में बोली जाने वाली भाषाओं का अनुमान

क्र.सं.	प्रमुख भाषायें	बोलने वालों की संख्या (लाख में)
1	चीनी	1660
2	हिन्दी/उर्दू	737
3	अरबी	722
4	अंग्रेजी	650
5	स्पेनी	628
6	पुर्तगाली	325
7	बंगाली	316
8	रसियन	148
9	जापानी	113
10	मलायी	105

नोटः सभी आंकड़े 'साइंस' 27 फरवरी 2004 पृष्ठ संख्या 1329 से उद्धृत हैं।

भाषा विज्ञानियों ने वर्ष 2050 के लिये युवा वर्ग (15 से 24 आयु वर्ग) द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं के अनुमान दिये हैं जो अंग्रेजी भाषा के वर्तमान विस्तारवादी प्रवृत्ति को देखते हुये चौंकाने वाले लगते हैं। अंग्रेजी भाषा अब के अपने 9 प्रतिशत के आँकड़े से नीचे खिसकने वाली है। सन् 2050 में उसके मातृभाषी सम्प्रदाय की संख्या मात्र 5 प्रतिशत ही होगी। जबकि हिन्दी दूसरे स्थान पर पहुचने वाली है। यह विश्व में दूसरे स्थान की भाषा होने वाली है। अरबी भाषा तीसरे स्थान पर होगी और अंग्रेजी चौथे स्थान पर। इतना ही नहीं अन्य भारतीय भाषाओं बंगाली, तमिल एवं मलयालम बोलने वालों की संख्या बढ़ने की प्रचुर संभावना है।

इस नयी प्रवृत्ति की थोड़ी बहुत झलक अमेरिकी राष्ट्रपति के शपथ ग्रहण के बाद के संदेशों को पहली बार हिन्दी में अनुवादित करने में दिख रही है। इससे पहले इतनी महत्ता

हिन्दी को कभी भी प्राप्त नहीं थी। यह इंगित करता है कि भविष्य में हिन्दी, वंचितों की भाषा से समृद्धों एवं शासकों की भाषा की दूरी को अधिक तेजी से तय करेगी ।

भाषा के सरलीकरण की प्रवृत्ति, जो अब तक धीमी रही है, भविष्य में और अधिक तेज होने वाली है। वर्तनी की दूरूहता धीरे-धीरे कम होगी। अमेरिकी एवं ब्रिटिश अंगेजी का विवाद सर्वविदित है, अमेरिकी अंग्रेजी वर्तनी शब्दों के उच्चारण के अधिक नजदीक है जबकि ब्रिटिश अंगेजी वर्तनी पारम्परिक अंग्रेजी वर्तनी का ही प्रयोग करती है, पर अब ब्रिटिश अंग्रेजी भी अमेरिकी अंग्रेजी वर्तनी का प्रयोग कर रही है। कमोवेश यही प्रवृत्ति अन्यत्र भी देखने को मिल रही है।

पुर्तगाल के सात पूर्व औपनिवेशिक देशों ने पुर्तगाली भाषा के वर्तनी में सुधार के लिये विगत वर्ष समझौता किया था। पहली जनवरी, 2009 से इसमें से सबसे बड़े देश ब्राजील ने इस समझौते को लागू भी कर दिया है। ब्राजील के निवासी पुर्तगाली भाषा अपने मातृभाषा की तरह बोलते हैं जैसे आम भारतीय अंग्रेजी शब्दों का उच्चारण हिन्दी की तरह करते हैं। पर वहां अभी भी कुछ लोगों का आग्रह है कि पुर्तगाली, ब्राजील में भी, वैसे ही बोली जाये जैसे पुर्तगाल में बोली जाती है। अब इन नये परिवर्तनों के कारण ब्राजील में पुर्तगाली की वर्तनी वैसे ही हो जायेगी जैसे यह भाषा वहां बोली जाती है। पुर्तगाली में भी, अंग्रेजी की तरह वर्तनी में ऐसे व्यंजनों की परम्परा है जिनका उच्चारण नहीं किया जाता, अर्थात जैसे नॉलेज की अंग्रेजी वर्तनी में ''के'' का उच्चारण नहीं किया जाता। पर अब वो सभी वर्तनियां इस प्रकार परिवर्तित की जा रही हैं जिससे शब्दों की वर्तनी उनके उच्चारण के अनुकूल हों।

भविष्य की पीढ़ियाँ आज के भाषायी धरोहर, लगभग 6000 भाषाओं में से अधिकांश से वंचित होने वाली हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि वर्तमान में लगभग 6000 भाषायें बोली जाती हैं जिनमें से 90 प्रतिशत भाषायें विलुप्त होने वाली हैं। जिसमें से अधिकांश आदिवासियों द्वारा बोली जाने वाली भाषायें हैं। जो अपने साथ उनकी समृद्ध सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं वैज्ञानिक विरासत भी विलुप्त कर देंगी। अगली पीढ़ियाँ इनके अर्जित ज्ञान से वंचित हो जायेंगी। भाषाओं का विलुप्त होना प्रजातियों के विलुप्त होने के समान ही है। वैज्ञानिक इसके लिये आस्ट्रेलियाई मेढक का उदाहरण देते हैं जो अपने नवजात शिशुओं को निगल लेता था। जब आमाशय में शिशु बड़े हो जाते थे तो उनको उगल देता था। उसमें एक ऐसी प्रणाली थी कि वो अपने आमाशय से अम्ल के उत्सर्जन को नियंत्रित कर सकता था। जब बच्चे आमाशय में होते तो मेढक अम्ल का उत्सर्जन रोक देता था। इससे बच्चे जीवित रहते थे अन्यथा वो भी भोजन की तरह पच जाते। पर जब तक वैज्ञानिक इन बातों को पूरी तरह समझ पाते वह प्रजाति विलुप्त हो गयी। आज विश्व की अधिकांश आबादी अम्ल के अनियंत्रित स्राव से पीड़ित है। अम्लीय नियंत्रण की इस प्रणाली के नये सिरे से खोज की जा रही है जिस पर अरबों की राशि खर्च होने का अनुमान है। वस्तुतः भाषाएं एवं प्रजातियां उन संदर्भ ग्रन्थों की तरह है जिनका मतलब जब तक हम समझेंगे तब तक समय की दीमक उनको चट कर जायेगी।

भविष्य में भाषाएं, भाषायी पीठों के नियंत्रण से मुक्त होती जायेंगी। भाषाओं के हजारों रूप होंगे तथा उनका मानक स्वरूप में बने रहना मुश्किल होगा। भाषा विज्ञानियों के लिए भाषा को व्याकरण सम्मत रखना दिन-प्रतिदिन दुरूह होता जायेगा। भाषाएं कमोवेश बोलचाल की भाषा जैसी होंगी। तकनीकी के विकास तथा बाजार मूल्यों के दबाव में भाषा और सरल हो जायेगी। इन्टरनेट के त्वरित विकास से लिखने एवं पढ़ने की नयी आदतें विकसित होंगी। शब्दकोशों में ई-मेल तथा एसएमएस के शब्दों का प्रयोग कमोवेश होने लगेगा। शब्दकोश दिन प्रतिदिन और उदारता से नये शब्दों को परिभाषित करेंगे।

पर सबसे दिलचस्प पहलू होगा भविष्य का बहुभाषी होना। यद्यपि अंग्रेजी के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकेगा पर अधिकांश लोग द्विभाषी या बहुभाषी होंगे। एक देश एक भाषा का सिद्धान्त समाप्तप्राय होगा। भाषाएं बाजार के मांग के हिसाब से पढ़ी और सीखी जायेंगी। जिसका जितना बड़ा बाजार होगा वह भाषा ही दूसरी भाषा के रूप में पढ़ी जायेगी। अनुमान है कि चीन की भाषा अन्य भाषाओं की तुलना में सबसे अधिक पढ़ी एवं सीखी जायेगी। इतना ही नहीं भाषा के पढ़ने लिखने के संदर्भ बदल जायेंगे, सोच बदल जायेगी और

भारतीयों में बहुभाषीय प्रवृत्ति

भाषा	(करोड़ लोग)			
	प्रथम भाषा (मातृभाषा)	द्वितीय भाषा	तृतीय भाषा	कुल संख्या
हिन्दी	42.4	9.82	3.12	55.14
अंग्रेजी	0.20	8.50	3.80	12.50
कन्नड़	3.79	1.15	0.14	5.08
उड़िया	2.98	0.33	0.32	3.63

भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाएँ (करोड़ लोग)	
हिन्दी	55.14
अंग्रेजी	12.53
बंगाली	9.11
तेलगू	8.50
मराठी	8.42

विश्व के पाँच बड़े अंग्रेजी भाषी देष (करोड़ लोग)	
सं्युक्त राज्य अमेरिका	26.3
भारत	12.5
नाईजीरिया	7.9
ब्रिटेन	6.0
रूस	6.0

शायद सभी भाषायी विवाद भी समाप्त हो जायेंगे।

हाल ही में 2001 जनगणना के भाषा संबंधी आँकड़े जारी हुए हैं। ये आँकड़े भारतीय संदर्भ में भाषा के भविष्य की झलक देते हैं। 25.5 करोड़ भारतीय कम से कम दो भाषायें बोलते हैं। 9.5 करोड़ लोग तीन या इससे अधिक भाषायें बोलते हैं। अर्थात प्रत्येक चार में से लगभग एक भारतीय बहुभाषी है। अमेरिका को छोड़कर भारत विष्व में सबसे बड़ा अंग्रेजी भाषी देष है। साढ़े बारह करोड़ लोग भारत में अंग्रेजी भाषी हैं। इनमें से मात्र 2.3 करोड़ लोगों की ही अंग्रेजी मातृभाषा है जबकि 8.6 करोड़ लोगों के लिए ये दूसरी तथा लगभग पौने चार करोड़ लोगों के लिए तीसरी भाषा है। लगभग एक चौथाई कन्नड़ भाषी लोगों ने कन्नड़ को अपनी दूसरी भाषा बताया अर्थात उनकी मातृभाषा कोई दूसरी भाषा है। मात्र शहरों के लोग ही नहीं गाँवों में भी अब बहुभाषी लोगों की संख्या चौंकाने वाली है। साढ़े तेरह करोड़ ग्रामीण भारतीय ऐसे हैं जो कम से कम दो भाषायें बोलते हैं। यह स्थिति आज के 10 वर्ष पूर्व की है जब आर्थिक विकास की दर इतनी नहीं थी। अब 10 वर्षीय उदारवाद के चलते यह बहुभाषावाद अब वास्तविकता में अधिक ही होगा।

भविष्य की भाषायें जहाँ वैश्विक वाणिज्यिक प्रभाव से अधिक परिवर्तनशील होंगी वहीं सम्प्रदाय बहुभाषी होगा। पर जिन भाषाओं का बाजार मूल्य नहीं होगा वो लुप्तप्राय हो जायेंगी। भविष्य का यह परिदृश्य भारत की संस्कृति एवं भाषायी विविधता से समृद्ध विरासत के संरक्षण की आवश्यकता को जहाँ नये सिरे से रेखांकित करता है, वहीं आश्वस्त भी करता है कि प्रमुख भारतीय भाषाएं हिन्दी, उर्दू, बंगाली, तमिल एवं मलयालम धीरे-धीरे नयी ऊँचाईओं को छूने वाली हैं।

डॉ. ज्ञानेन्द्र मिश्र, वित्त एवं लेखा अधिकारी
वित्त एवं लेखा अनुभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ला

सौन्दर्यवर्धक वनस्पतियां

निधि चौधरी

हमारा भारतवर्ष एशियाई महाद्वीप के उन अग्रणी देशों में से एक है जहां पर पेड़-पौधों से प्राप्त पारम्परिक औषधियों की सम्पदा है। यहां प्राचीनकाल से ही विभिन्न रोगों एवं सौन्दर्य प्रसाधनों के रूप में वनस्पतियों का उपयोग विश्व-विख्यात है।

आज के आधुनिक युग में उत्पादनकर्ता अपने मुनाफे एवं प्रतिस्पर्धा के हित उपभोक्ताओं को विभिन्न तरह के सौन्दर्य उत्पाद उपलब्ध कराते हैं और उन्हें भ्रमित करने के लिए रासायनिक संघटकों को प्राकृतिक गुणों के समकक्ष बताते हैं। उन लुभावने प्रस्तावों के जाल में फंसकर आम आदमी उनका प्रयोग करता है तथा सौन्दर्य को बढ़ाने के स्थान पर अपना नुकसान कर लेता है।

अतः अगर इन रासायनिक प्रसाधनों की अपेक्षा प्राकृतिक प्रसाधनों का उपयोग किया जाए, जो बेहद कम खर्च और सुगमता से उपलब्ध हैं, हितकर होगा तथा उनके दुष्प्रभावों की सम्भावनाएं भी नगण्य होंगी।

हमारे देश में आज भी बहुत-सी जगहों पर लोग प्राकृतिक वनस्पतियों का उपयोग सौन्दर्य प्रसाधनों में ज्यों का त्यों ही करते हैं, वे लोग प्रशंसनीय हैं जिन्होंने सौन्दर्य प्रसाधनों, औषधियों तथा स्वास्थ्यवर्धक वनस्पतियों के प्रयोग की कला को आज भी संजोकर रखा है।

ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण एवं अत्यन्त गुणकारी पेड-पौधों का वर्णन सूचीबद्ध है जिनका प्रयोग सौन्दर्य प्रसाधनों के तौर पर किया जा सकता है।

1. भ्रंगराज (Eclipta alba) - इस पौधे के सम्पूर्ण भाग से नीले-काले रंग की डाई प्राप्त की जाती है जिसे नरियल तेल के साथ मिश्रित कर बालों को रंगने के काम में लाया जाता है। इसे नवजात शिशुओं के सिर पर बालों को घना करने के लिए भी उपयोग किया जाता है।
2. तुलसी (Ocimum sanctum) - तुलसी की पत्तियों का लेप त्वचा को मुलायम तथा दाग-धब्बे मिटाने के लिए लगाया जाता है। इसके बीजों के तेल को मुहांसों को दूर करने में बेहद असरकारक माना गया है।
3. मेथी (Trigonella foenum-graecum) - मेथी के बीजों

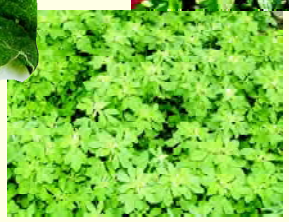

के सार से बाल मुलायम, चमकदार तथा मजबूत बनते हैं।

4. कमल (Nelumbo nucifera) - कमल के फूल, पत्तियों तथा बीजों के सार को त्वचा की रंगत निखारने एवं झुर्रियों को मिटाने के लिए उपयुक्त माना गया है।
5. चावल (ग्द्धन्न्ह्ल ह्लद्यध्ह्ल) - चावल के पानी (चावल धोने से प्राप्त) से बालों को धोने से बाल लम्बे, घने तथा लचीले बनते हैं। जापान में प्राचीन काल से यह प्रथा प्रचलित है।
6. गुड़हल (Hibiscus rosa-sinensis) - गुड़हल की पत्तियों और फूलों का सार बालों को लम्बा करने में बहुत उपयोगी है तथा यह फोड़े-फुंसियों को भी ठीक करता है।
7. खजूर (Phoenix dactylifera) - खजूर की गिरी को झुरियां मिटाने के काम में लाया जाता है तथा त्वचा से सम्बन्धित अनेकों उत्पादों में इसका प्रयोग किया जाता है।
8. हल्दी (Curcuma longa) - हल्दी की जड़ को अरण्ड के तेल तथा नींबू के रस के साथ मिश्रित कर लगाने से फटी हुई एड़ियां ठीक होती हैं तथा कोमल हो जाती हैं।
9. जामुन (Syzygium cumini) - काली जामुन के बीजों को पानी में घिसकर लगाने से मुंहासे दूर होते हैं और चेहरा कांतिमय बनता है।
10. पहाड़ी पुदीना (Mentha spicata) - पुदीने के ताजे रस को प्रतिदिन चेहरे पर लगाने से मुहांसों से मुक्ति मिलती है तथा त्वचा का रुखापन समाप्त होता है।
11. लटजीरा (Achyranthes aspera) - इस पौधे की ताजी जड़ का लेप बालों की रूसी मिटाने के तथा उन्हें लम्बा करने के काम आता है।
12. आंवला (Emblica officinalis) - आंवले के फलों के चूर्ण को तिल के तेल में मिलाकर बालों को रंगने (डाई) के काम में लिया जाता है।

हमारी प्रकृति के पास वह अनमोल खजाना है जिससे हमारी हर जरूरत पूरी होती है जिसमें वनस्पतियां मुख्य भूमिका निभाती हैं। किन्तु आज के युग में युवा वर्ग या यह कहिए कि हर आयु वर्ग के लोग बाहरी चमक-धमक की ओर आकर्षित होकर और विभिन्न प्रकार के कृत्रिम उत्पादों के जाल में फंसकर अपने प्राकृतिक निखार को खो देते हैं जो बाद में उनको तनावग्रस्त करता है।

अतः हमें चाहिए कि हम किसी भी तरह के प्रलोभन में न फंसे और अपने खानपान को संतुलित रखें जिससे स्वतः ही रंग-रूप कांतिमय बनता है।

श्रीमती निधि चौधरी, रिसर्च इंटर्न
वैल्थ ऑफ इंडिया विभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

होम... ग्रीन होम

विनीता सिंघल

जब प्रागैतिहासिक मानव ने धूप और बारिश से अपनी रक्षा के लिए पहली बार बांस के पेड़ों और नारियल की पत्तियों को काट कर झोंपड़ी बनाई, तो यह अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रकृति के दोहन की ओर उसका पहला कदम था। पेड़ों को काटने के अतिरिक्त उसने न जाने कितने पक्षियों और कीड़ों-मकोड़ों के आवास नष्ट कर दिए, इसका उसे आभास ही नहीं था। लेकिन यह तो बस एक शुरूआत थी। आज, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती कि नदियों से पानी और बालू, पहाड़ों से पत्थर, जमीन से खोदे गए अनेक घटकों से बनाए गए सीमेंट का प्रयोग कर विभिन्न प्रकार की इमारतों को बनाने में उसने पृथ्वी को कितनी क्षति पहुंचाई। यहां तक कि इस निर्माण प्रक्रिया में निकले कार्बन से वायुमंडल को भी गर्मा दिया। लेकिन पर्यावरण के प्रति आई चेतना और उसके प्रति अपने दायित्व का अनुभव करने के बाद, मानव ने इस समस्या का हल ढूंढना शुरू किया। इसी पहल की एक आधुनिकतम संकल्पना है 'ग्रीन बिल्डिंग'। इसके मुख्य उद्देश्य हैः

एक्रास फुकुओका प्रीफेक्चुरल इंटरनेशनल हॉल

- जल, ऊर्जा और निर्माण पदार्थों की बचत करना,
- बिल्डिंग में रहने वालों के स्वास्थ्य की सुरक्षा करना तथा उनकी कार्य क्षमता को बढ़ाना,
- पर्यावरण पर होने वाले विपरीत प्रभाव को कम से कम करना।

ग्रीन बिल्डिंग डिजाइन कोई नई संकल्पना नहीं है लेकिन आज इनका महत्व बढ़ गया है। बेबिलॉन के हैंगिंग गार्डन, पेरिस का ली म्यूजी डू क्यूआई ब्रेनली, एक्रास फुकुओका प्रीफेक्चुरल इंटरनेशनल हॉल, मेड्रिड, स्पेन का कैक्सा फोरम और लीज हाल्स इसके कुछ उदाहरण है। प्राचीन काल से ही भारत में भी स्मारकों और भवनों का निर्माण सस्ते और ऐसे

पदार्थों से होता रहा है जिनके उपयोग से ऊर्जा का अधिक से अधिक संरक्षण किया जा सके। जलवायविक परिस्थितियां मुख्य रूप से भवनों में ऊर्जा के निष्पादन पर प्रभाव डालती हैं। भवनों में छतों, दीवारों और खिड़कियों की सही व्यवस्था, भवनों की उपयुक्त रूप रेखा, दिन के प्रकाश का पर्याप्त प्रावधान और इसके साथ साथ भवन निर्माण के लिए सामग्री और तकनीक का विवेकपूर्ण चयन भवनों की ऊर्जा क्षमता में सुधार करने के अतिरिक्त भवनों में प्रदूषण की मात्रा को काफी कम करके उनमें रहने वालों को स्वस्थ रहने में सहायता कर सकता है। आजकल पर्यावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की बढ़ती मात्रा के कारण बढ़ते प्रदूषण को कम करने के लिए ऐसे भवनों के निर्माण पर जोर दिया जा रहा है जिनमें ऊर्जा की खपत को कम किया जा सके। हालांकि अभी यह संकल्पना अपनी प्रारंभिक अवस्था में है और इसे अपनी उपयोगिता भी सिद्ध करनी है। भवनों में ऊर्जा निष्पादन क्षमता मुख्यतः निर्माण स्थल, जल की उपलब्धता, भवन निर्माण में उपयोग की गई सामग्री, खिड़कियों की व्यवस्था और आकार, भीतरी पर्यावरण, आदि पर निर्भर करती है। भवन का मूल आकार भवन में ऊर्जा के कुल उपयोग को प्रभावित करता है। आमतौर पर भवनों का आकार एच, एल या यू आकार का होता है। भवन के आकार को इस प्रकार अभिकल्पित करने की आवश्यकता होती है जिससे सूर्य के प्रकाश की समुचित व्यवस्था की जा सके। इसके अतिरिक्त,

ग्रीन बिल्डिंग का अर्थ है जल, ऊर्जा और पदार्थों का पुर्नउपयोग, पुनर्चक्रण और किफायती उपयोग

पेरिस का ली म्यूजी डू क्यूआई ब्रेनली

भवन का आकार ही हवा के भवन में प्रवेश को निर्धारित करता है।

स्थानीय पर्यावरणीय कारक ग्रीन बिल्डिंग के निष्पादन को काफी हद तक प्रभावित करते हैं। ऐसी किसी भी संरचना के निर्माण के लिए पदार्थों और तकनीक के चुनाव में भी ये कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन कारकों में आस पास की इमारतें, उद्योग, आस पास से गुजरने वाले वाहनों की संख्या, जनसंख्या तथा अन्य प्रदूषण उत्पन्न करने वाले कारक शामिल हैं। उद्यागों से निकलने वाले प्रदूषक वायु, जल और भूमि क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं। प्रदूषित वायु में मौजूद अमोनिया, सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन के कण, रेडियो सक्रिय तत्व और गैसों आदि से निर्माण सामग्री का विघटन, दृश्यता में धुंधलापन, धात्विक संरचनाओं पर जंग लगना जैसे प्रभाव होते हैं। इससे बिल्डिंग के बिजली के तार, पेंट, कोटिंग आदि भी जल्दी खराब हो जाते हैं।

विभिन्न उद्योगों से निकलने वाला बहिःस्राव अनेक बीमारियों का जनक होता है। इसके अतिरिक्त वाहनों से निकलने वाला

धुआं तो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता ही है साथ ही बहुत अधिक टैफिक के कारण होने वाला शोर भी ध्वनि प्रदूषण का कारण होता है। बहुत भीड़-भाड़ वाले क्षेत्र भी पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। आस पास ऊंची ऊंची इमारतें होने का सीधा प्रभाव हवा के प्रवाह और सूर्य के प्रकाश पर पड़ता है। जब बहती हुई हवा किसी ऊंची इमारत से टकराती है तो न केवल उसके प्रवाह में कमी आ जाती है बल्कि उसकी दिशा भी बदल जाती है। इसी प्रकार किसी इमारत में रोशनी सीधे सूर्य से विसरित होकर, किसी गवाक्ष या खिड़की से परावर्तित होकर, बाहर किसी धरातल या किसी दूसरी इमारत से परावर्तित होकर या भीतरी दीवारों, छत या अन्य किसी भीतरी सतह से परावर्तित होकर आती है। दूसरी इमारतों या धरातल से परावर्तित होकर आने वाला प्रकाश अकसर तेज चमक उत्पन्न करता है। भीतरी रूप से परावर्तित प्रकाश ही दिन में रोशनी का उत्तम साधन हो सकता है।

ग्रीन बिल्डिंग के निर्माण के लिए प्रयुक्त पदार्थों के लिए सबसे पहली शर्त यह है कि वे किसी भी अवस्था में - अपरिष्कृत से लेकर तैयार उत्पाद तक - पर्यावरण के लिए हानिकारक नहीं होने चाहिए। उनसे किसी भी प्रकार का प्रदूषण या ग्रीन हाउस गैसें नहीं निकलनी चाहिए जो पर्यावरण को हानि पहुंचा सकें। उत्पाद क्षमता वर्तमान में मौजूद राष्ट्रीय मानकों के अनुसार होनी चाहिए यथा उनमें से किसी प्रकार की रेडियो सक्रिय किरणें नहीं निकलनी चाहिए; उनमें एन्वायरन्मेंट प्रोटेक्शन एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा प्रतिबंधित विषैले पदार्थ नहीं होने चाहिए और उनमें से मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल द्वारा प्रतिबंधित अकार्बनिक हैलाइड या अन्य कोई हानिकारक रसायन नहीं उत्सर्जित होने चाहिए।

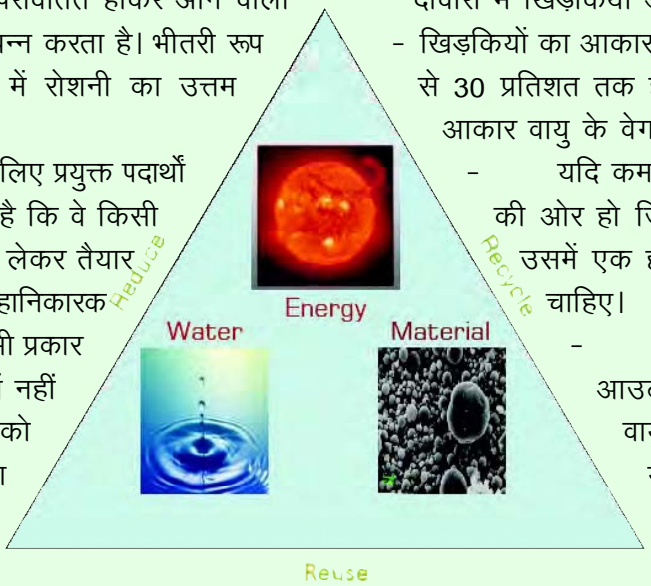

ग्रीन बिल्डिंग को एनर्जी एफिशिएन्ट अर्थात ऊर्जा सक्षम बिल्डिंग भी कहा जा सकता है। किसी भी बिल्डिंग में ऊर्जा का निष्पादन खिड़कियों की व्यवस्था और उन्मुखीकरण से सीधे ही प्रभावित होता है क्योंकि इससे बिल्डिंग में सूर्य के प्रकाश के आने पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। भवनों के लिए सबसे अच्छी संरचना वह होती है जब सर्दियों में अधिकतम और गर्मियों में न्यूनतम गर्मी का प्रवेश होता है। इमारत में हवा का सही प्रवेश हो सके, इसके लिए बताए गए कुछ दिशा निर्देश इस प्रकार हैः

- हवा की दिशा वाली दीवार में कम से कम एक खिड़की और उसके सामने वाली दीवार में भी एक खिड़की होनी चाहिए जिससे हवा का प्रवाह बना रहे। आमने सामने की दीवारों में खिड़कियां अंदर वायु की गति को बढ़ाती हैं।
- खिड़कियों का आकार, फर्श के क्षेत्रफल का लगभग 20 से 30 प्रतिशत तक होना चाहिए। खिड़कियों का बड़ा आकार वायु के वेग को बढ़ाता है।
- यदि कमरे की केवल एक ही दीवार बाहर की ओर हो जिसमें खिड़की बन सकती हो तो उसमें एक ही दीवार में दो खिड़कियां बनानी चाहिए।
- भवन को वायु उन्मुख होना चाहिए। आउटलेट की तुलना में छोटे इनलेट वायु की दिशा में परिवर्तन के संबंध में अधिक संवेदनशील होते हैं। इसलिए जहां वायु की दिशा और वेग में बार बार परिवर्तन होता हो वहां समान आकार की खिड़कियां लगानी चाहिए।
- तीन दिशाओं से खुला बरामदा भी घर को ठंडा रखता है क्योंकि इससे सभी दिशाओं में वायु की गति में वृद्धि होती है।

दिन में इमारतों में समुचित प्रकाश रहने और विद्युत भार को कम करने के लिए, इमारतों को संरचनात्मक, मैकेनिकल, इलैक्ट्रिकल और वास्तुकलात्मक दृष्टि से अभिकल्पित किया जाता है। सूर्य के प्रकाश के सीधे अंदर आने का एक लाभ यह भी होता है कि उससे घर में रहने वालों को बाहर के मौसम

और समय का अनुमान होता रहता है। अधिक से अधिक रोशनी अंदर आ सके इसके लिए खिड़कियों की ऊंचाई धरातल से 1200 मिमी या उससे कुछ अधिक होनी चाहिए साथ ही उन्हें इस प्रकार लगाना चाहिए ताकि कमरे में प्रकाश का प्रसार एक समान हो सके। घर में प्रकाश की उपलब्धता बनाए रखने का खिड़कियों के अतिरिक्त एक अन्य साधन होता है स्काईलाइट बनाना। अगर इनका निर्माण सही ढंग से किया जाए तो ये घर में प्रकाश की सबसे बेहतर व्यवस्था सिद्ध हो सकती हैं क्योंकि ये आकाश से 180 डिग्री पर बनाई जाती हैं। विद्युत द्वारा प्रकाश की व्यवस्था के स्थान पर प्राकृतिक सूर्य के प्रकाश के उपयोग से विद्युत की लागत में भी बचत होती है।

खिड़कियों के अतिरिक्त छत और दीवारें भी किसी भवन का महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं जो ऊर्जा क्षमता को प्रभावित करती हैं। गर्मियों के मौसम में दीवारों की गर्मी भंडारण क्षमता, तापीय रोधकता बढ़ाने और तापीय प्रवाह को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसको एचवीएसी अर्थात हीटिंग, वेन्टीलेशन एंड एयर कंडीशनिंग प्रणाली या प्राकृतिक संवातन विधि द्वारा नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अलावा परंपरागत रूप से बनाई गई दीवार के दोनों ओर सीमेंट के मसाले की 12.5 मिमी मोटी परत के साथ पॉलिथीन, नियोपोर, पेरिपोर, आइसोबोर्ड, फाइबर ग्लास, तथा फोम कंक्रीट लगाना भी प्रभावी देखा गया है।

बिल्डिंगों की छतें दिनभर धूप में तपती रहती हैं जिसका प्रभाव अंदर के तापमान पर भी होता है जो दिन चढ़ने के साथ साथ बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वातानुकूलन पर भार बढ़ता जाता है। आर सी सी अर्थात रेनफोर्स्ड सीमेंट कंक्रीट से बनी छतें धूप में बहुत गर्म हो जाती हैं। यदि छत को गर्मी से बचाने के लिए समुचित रोधन का प्रयोग किया जाता है तो अंदर के तापमान को काफी हद तक कम किया जा सकता है ताकि इमारत के अंदर का तापमान दिन भर परिवेशी तापमान से कम रहे। इसके लिए परंपरागत आरसीसी की सामान्य मोटाई वाली छत पर मड फस्क या ताप रोधन सामग्रियों जैसे कि पॉलीस्टाइरिन, पॉलीयूरिथेन, फाइबर ग्लास एवं फोम कंक्रीट आदि का उपयोग प्रभावी देखा गया है।

सूर्य की ऊर्जा का मानव की जरूरत के लिए इस्तेमाल करने के भी अनेक उपाय हैं। इसकी मदद से घरेलू तथा औद्योगिक उद्देश्यों के लिए गर्म पानी की आपूर्ति कर पाना अब संभव हो गया है। छत पर लगे सौर जल तापक अब एक आम बात है। इनका उपयोग होटलों, अस्पतालों, ऑद्योगिक संयंत्रों और आवासीय मकानों में व्यापक रूप से हो रहा है। ठंडे देशों में घरों और कार्यालयों को सौर ऊर्जा से गर्म किया जा रहा है। भारत जैसे गर्म देशों में घरों को गर्म करने के बजाय उन्हें वातानुकूलित करने में अधिक रुचि होती है।

ग्रीन बिल्डिंग के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है पानी की खपत को कम करना और उसकी गुणवत्ता को बनाए रखना। दूसरे शब्दों में कहें तो जल का सही प्रबंधन ही ग्रीन बिल्डिंग की विशेषता है। आने वाली पीढ़ियों के लिए जल की उपलब्धता बनी रहे, इसके लिए जरूरी है कि पारिस्थितिकी से जल के निकास की दर, जल के प्राकृतिक संभरण से अधिक न हो। पानी खींचने, आपूर्ति और व्यर्थ जल उपचार आदि सुविधाओं में भी ऊर्जा का एक बहुत बड़ा भाग खर्च होता है। एक अध्ययन के अनुसार, बिजली की कुल खपत का 15 प्रतिशत इसी काम में खर्च होता है। जल की खपत जितनी कम होगी

जलजीवों के विहार भी सुरक्षित रहेंगे साथ ही साथ नए बांध आदि बनाने की जरूरत भी नहीं रहेगी।

घरों में पानी बचाने की कुछ तकनीकें इस प्रकार है:

- स्वचालित नल
- व्यर्थ जल का पुनः उपयोग या पुनर्चक्रण
  - पौधों में पानी देने में या टॉयलेट में
  - जल उपचार संयंत्र में व्यर्थ जल का पुनर्चक्रण
- वर्षा के जल का संभरण
- मौसम आधारित सिंचाई नियंत्रक
- अधिक क्षमता वाली वाशिंग मशीनों का उपयोग
- कम-बहाव वाले शावर जिन्हें ऊर्जा-क्षम शावर हेड्स भी कहते हैं क्योंकि इनमें बिजली कम खर्च होती है।
- लो-फ्लश टॉयलेट और कंपोस्टिंग टॉयलेट क्योंकि पारंपरिक पश्चिमी शैली के टॉयलेट में पानी की खपत बहुत ज्यादा होती है।
- समुद्र के खारे जल को उपचारित कर उसका उपयोग करना
- स्विमिंग पूल को ढक कर रखना। इससे पानी का वाष्पन कम हो जाता है और पानी गर्म भी रहता है। फलस्वरूप जल, ऊर्जा और रसायनों का खर्च कम हो जाता है।
- कूलिंग टावर संवहन नियंत्रक
- इन्फ्रारेड या पद-चालित नल जिससे रसोई और बाथरूम में जल को फालतू बहने से रोका जा सकता है।

अंततः, किसी भी बिल्डिंग का निर्माण करवाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:

- निर्माण स्थल को कम से कम क्षतिग्रस्त करते हुए बिल्डिंग का निर्माण करना चाहिए।
- बिल्डिंग बनाने के लिए पुनचक्रण किए जा सकने योग्य तथा पर्यावरण के अनुकूल निर्माण सामग्री का प्रयोग करना चाहिए।
- निर्माण कार्यों में अविषालु पदार्थों का उपयोग करना चाहिए।
- घर के लिए पेंट का चुनाव करते समय देखें कि पेंट में वीओसी अर्थात वॉलेटाइल आर्गेनिक कंपाउंड्स का उपयोग न किया गया हो। ये पर्यावरण और स्वास्थ्य दोनों के लिए ही हानिकारक होते हैं।
- जल का दुरूपयोग नहीं करना चाहिए तथा जल संभरण के प्रभावी उपाय अपनाने चाहिए।
- ऊर्जा प्रभावी तथा पर्यावरण अनुकूल उपकरणों का उपयोग करने से बिजली की बचत होती है।
- घर के अंदर तापन और शीतलन को केवल 3 डिग्री समायोजित करके आप एक वर्ष में लगभग 1000 पाउंड कार्बन के उत्सर्जन को रोक सकते हैं।
- नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करें।
- पारंपरिक बिजली के बल्बों के स्थान पर सीएफएल के उपयोग से 75 प्रतिशत तक ऊर्जा बचाने के साथ साथ पैसे की भी बचत की जा सकती है।
- कपड़ों को गर्म पानी के स्थान पर ठंडे पानी में धोएं और बिजली का उपयोग कर सुखाने के बजाए हवा में सुखाएं।
- घर के अंदर लोगों की स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए स्वच्छ प्राणवायु उपलब्धता आवश्यक है।
- प्रभावी नियंत्रण एवं बिल्डिंग मैनेजमेंट सिस्टम अपनाएं।

इस प्रकार, ग्रीन बिल्डिंग पर्यावरण के अनुकूल जीवन जीने का ही दूसरा नाम है। यह मानवीय क्रियाकलापों के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को कम करने, ऊर्जा क्षमता के जरिए संपन्नता बढ़ाने में सहायता करने तथा संसाधनों के सही उपयोग करने की दिशा में एक कदम है जिसके प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनेक लाभ होते हैं। इसका सबसे बड़ा लाभ है ऊर्जा और जल के खर्च में कमी जो बिल्डिंग बनने के पहले दिन से लेकर बिल्डिंग के रहने तक यथावत बनी रहती है। यह कमी 25 से 40 प्रतिशत तक हो सकती है। इन इमारतों का अप्रत्यक्ष लाभ है उसमें रहने या काम करने वालों का अच्छा स्वास्थ्य जिससे उनके काम करने की क्षमता कई गुना बढ़ जाती है।

डॉ. विनीता सिंघल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
लोकप्रिय विज्ञान विभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

परेशान आत्मा

सुनील खन्ना

साढ़े दस बजने को थे, दफ्तर खुले घंटा बीत चुका था पर अभी काम शुरू नहीं हुआ था। दूर से आने वाले टिफिन खोलकर नाश्ता कर रहे थे या फिर चाय की चुस्कियां लेते हुए एक दूसरे की टेबलों पर बैठ कर काम का माहौल बना रहे थे। शर्मा जी भी उस दिन सैक्शन में बैठकर हम लोगों के साथ चाय पी रहे थे कि अचानक उन्हें कुछ घबराहट सी महसूस हुई, उनके चेहरे पर पसीने की बूंदे दिखने लगीं जबकि कमरे में लगे एसी में तापमान बीस डिग्री दिख रहा था। पहले तो उन्होंने उसे चाय से हुई गर्मी सोचा। लेकिन, जब उन्हें दिल में भारीपन महसूस हुआ तो चाय छोड़कर बाथरूम जाने लगे। अपनी सीट से उठे ही थे कि अचानक लड़खड़ाकर गिर पड़े। फर्श पर एकदम से लेट गए थे। लोग उनकी ओर दौड़े, मैडमें बदहवास-सी चीखने लगीं। दूसरे कमरों से भी लोग उठकर आ गए। कोई पानी का छींटा मारने लगा तो कोई पंखा झलने लगा। किसी ने सीने पर दबाव देकर सांस देने की कोशिश की। एक मिनट में पूरे दफ्तर में अफरातफरी मच गयी। इस बीच किसी ने एम्बुलेंस को फ़ोन कर दिया था। दस मिनट के अन्दर एम्बुलेंस आ गयी थी और शर्मा जी को राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले जाया गया। डाक्टरों ने बताया कि उन्हें गहरा हार्ट-अटैक हुआ था। हंसते बोलते आदमी के साथ अचानक से ऐसी घटना से दफ्तर के लोग दहशत में थे। शर्मा जी को इससे पहले कभी न तो ब्लड-प्रेशर की शिकायत थी, न तो उन्हें शुगर था और न ही वे जल्दी कभी बीमार ही पड़ते थे।

शर्मा जी को पूरे एक दिन बाद होश आया था और जब उनकी आंख खुली तो वे आई सी यू में थे। जब दोपहर में डाक्टर आया तो उसने बताया 'शर्मा जी आप बिलकुल ठीक हैं, खतरे से बाहर हैं पर अब ज्यादा स्ट्रेस नहीं चलेगा। मेजर अटैक था पर अब घबराने की कोई बात नहीं।'

शर्मा जी मिनिस्ट्री ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी में राजपत्रित अधिकारी हैं। शरीर ने अभी कुल बावन बसंत ही देखे थे पर झुके हुए कंधे, बालों की सफेदी और चेहरों के पीछे से झांकती झुर्रियां उन्हें सीनियर सिटिजन सा आभास कराती थीं। शरीर पर कोई ध्यान ही नहीं देते। रात-दिन काम के पीछे दीवाने बने घूमते रहते। काम में इतना माहिर कि मिनिस्ट्री के लिए संकट-मोचक माने जाते थे। जिन्दादिली उनके रग-रग में भरी थी और मौके-बेमौके अपना मजाक बनाने से भी नहीं चूकते

थे। हमेशा लोगों को हंसाते रहते थे। सबसे ज्यादा चुटकुला उनका अपने ऊपर ही होता था। तनाव उन्हें छूता भी नहीं, ऐसा लगता था पर काम का दबाव उन पर हमेशा हावी रहता था। मिनिस्ट्री में उन्होंने डेली वेजर की तरह से काम शुरू किया था। फिर अपने मेहनत के बल पर स्टेनो बने। बहुत दिनों तक पी ए का भी काम किया। जिस भी आफिसर के साथ रहते, वही उनका दीवाना हो जाता। उन्हें हमेशा अपनी पोजीशन से बड़ा काम मिलता रहा, और हर बार उन्होंने अपने को खरा साबित किया। जब वे स्टेनो से बाबू बन गए तब भी उन्हें हमेशा स्वतंत्र प्रभार मिलता रहा। कामों को निबटाने की उनकी कला के सभी दीवाने और कायल थे।

अपना काम निकलवाने के लिए वे बहुत शोर मचाते और तरह तरह से लोगों को प्रभावित करते रहते। बात-बात में 'डाइरेक्टर साहब नाराज़ हैं', 'यह काम अर्जेंट है, आज ही होना है', 'महीने के अंत में सर्टिफिकेट देना है कि अमुक के पास कुछ भी पेंडिंग नहीं है', 'हेड साहब का फोन आया है, काम आज ही खत्म करना है'। उनके सारे जुमले इतने चल चुके थे कि अब अधीनस्थों पर कोई असर भी नहीं होता था, लेकिन उनकी आदत थी वे दुहराते रहते थे। काम के प्रति उतावलेपन को देखकर आफिस में उनका नाम लोगों ने पी ए रख दिया था। पी ए पद वाला नहीं बल्कि पी ए का मतलब था 'परेशान आत्मा'। केवल आफिस ही नहीं बल्कि घर में भी उनके अपने काम रहते थे। घर में पिताजी के नाम पर एक रेस्टोरेंट भी था, इसके अलावा उनका अपना कंस्ट्रक्शन का काम भी चलता रहता था। उनके हाथों में जैसे जादू था, घर ऐसा बनाते थे कि लोगबाग़ देखते रह जाते थे। लोग उनके सामने अपने-अपने घर बनवाने के लिए मिन्नतें करते थे पर उन्हें समय ही नहीं मिलता था। हाथों में यश के कारण वे लगातार व्यस्त रहते और फोन पर भी लगातार परेशान रहते थे।

हम जब उस दिन उन्हें देखने अस्पताल पहुंचे तो आई सी यू में वे अकेले ही थे। आँखों के कोर भीगे हुए थे, जैसे कि अभी रोकर शांत हुए हों। हम लोग पास में चुपचाप बैठ गए और कुछ बोल नहीं सके। उन्होंने हंसने की कोशिश की, बोले, 'देखने आये हो, कुछ फल-वल लेकर नहीं आयेi' पर मजाक भी उनसे नहीं हो सका और आँखे छलछला आयीं। उनका हाथ उठकर हमारे कंधे पर आ गया और आँखों से आंसू बह निकले। इस एक झटके ने उन्हें मौत की आहट दे दी थी, मौत अपनी झलक दिखा गयी थी। आज तक 'मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया' वाली मस्ती में चलने वाला इन्सान इस तरह रो रहा था, हम लोगों को तो सांत्वना देने के लिए शब्द भी नहीं मिल रहे थे।

धीरे-धीरे बात होने लगी। बड़ी कसक भरी आवाज में वे पूछ रहे थे, 'क्या इस जीवन का यही सार हैi, क्या इसी तरह बिना किसी चेतावनी के, बिना किसी संकेत के अंतिम दिन आ जायेगाi क्या इसी तरह देखते-देखते दुनिया को अलविदा कह देंगेi ऐसा क्यूँ हुआi अभी तो ठीक से बैठा भी नहीं, अभी तो सोचना शुरू किया था कि जीवन का आनंद उठाना है और तभी चलने का बुलावा आ गयाi इन सबके बीच वे अपने जीवन की कहानी बताते रहे। उस दिन हमें पता चला कि इस हँसते बोलते चेहरे के पीछे इतना दर्द, इतना दुःख छिपा हुआ हैx

बंटवारे के बाद भारत आये लोगों की तीसरी पीढ़ी के सदस्य थे शर्मा जी। उनके दादाजी का बसा बसाया घर बंटवारे में उजड़ गया था और बचे-खुचे सामानों के साथ भारत आये थे। पहले पहल हरियाणा में कहीं बसने की कोशिश की थी। हरियाणा में रहते हुए छोटे-मोटे काम करके घर का खर्चा चलता था। उसी बीच दादी जी घर छोड़ गयीं तो गृहस्थी एक बार फिर बिखर गयी। उनके पिताजी को लेकर दादाजी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गए। उन दिनों बढ़ती जनसंख्या और आजादी के बाद के उत्साह के चलते पक्के मकानों का दौर शुरू हुआ था और ईंट का भट्ठा लगाना मुनाफे का काम था। उनके दादाजी ने वही काम शुरू किया और काम चल निकला पर अगले ही साल जब ईंटों के पकने का समय था, इतनी जोर की तूफानी बारिश आयी कि पूरा भट्ठा ही खत्म हो गया। जिन्दगी को फिर से शुरू करने के लिए वे दिल्ली आ गए। यहाँ भी संघर्ष चलता रहा फिर बाद में शर्मा जी के पिताजी ने टाइपिंग सीख ली और उन्हें कुछ-कुछ काम मिलने लगा था। शर्मा जी के बचपन के शुरूआती दिनों में घर में गरीबी व्याप्त थी। अगले वक्त घर में क्या पकेगा, पकेगा भी

या नहीं यह तक पता नहीं होता था। उसके साथ पहले की छूटी हुई समृद्धि के चर्चे उस गरीबी को और भी कष्टकारी बना देते थे।

शर्माजी स्कूल सामान्य ढंग से गए पर बचपन से एक टीस मन में थी कि बसे बसाए परिवार को उजाड़कर इस तरह दर-दर की ठोकरें खाने के लिए क्यों छोड़ दिया गयाi इन सबके लिए जिम्मेदार कौन हैi कुछ लोगों के निर्णय से इतने लोगों का जीवन क्यों बर्बाद हो जाता हैi और सबसे बढ़कर यह कि किसी के अपनी मेहनत से बनायीं हुई चीज़ों को कोई भी सरकार या सत्ता क्यों छीन लेती हैi फिर से स्थायी रूप से बसने और मिटटी से जुड़ने की तड़प ने शर्मा जी को कभी चैन नहीं लेने दिया। कालेज में एडमिशन के साथ उन्होंने शार्टहैण्ड सीख लिया पर उस समय कोई काम नहीं मिल सका। कालेज के दिनों में जब दिल्ली में एशियाड खेल हो रहे थे तो शर्मा जी होटलों में काम करने चले गए और वहीँ से उनके संघर्ष की शुरुआत हो गयी थी। तभी से शर्मा जी कभी रुके नहीं, कभी एक काम नहीं किया बल्कि हमेशा दो-तीन काम हाथ में लिए रहते। उनके अवचेतन में हमेशा भय बना रहता था कि सब कुछ छिन न जाये।

अपने संघर्ष की बातें बताते हुए शर्माजी दुःख के गहरे सागर में डूब गए थे पर प्रियंका का नाम आते ही उनकी आँखे चमक उठीं। कालेज के समय उस के साथ शार्टहैण्ड सीखने जाते थे। हाथों में हाथ डाले दिल्ली की सड़कों पर घूमना, बे-सर पैर के सपने देखना, आइस क्रीम खाना, पार्कों में घूमना ये सब बातें शर्माजी ने ऐसे बतायीं जैसे अभी कल की ही बात हो। उसके साथ देखे सपने, झूठे वादे और मस्ती शर्माजी के जीवन में प्यार, दोस्ती के नाम जमा कुल पूँजी है। जीवन की दौड़ में प्रियंका कहीं बहुत पीछे छूट गयी। शर्माजी ने बताया था कि जब भी उस दौर की फ़िल्मी धुनें बजतीं थीं तो शर्माजी का मन झूम उठता था, वे खुश भी होते थे, मस्ती भी करते थे पर काम का दबाव इतना रहता था कि मस्ती भी साक्षी भाव से करते थे और डूबकर आनंद नहीं ले पाते। पिताजी के कहने पर उन्होंने सुनीता से शादी कर ली पर काम के धुन में शादी भी सामाजिक संस्कार ही ज्यादा रहा। एक बेटे और एक बेटी के पिता हैं शर्माजी पर वो कैसे बड़े हो गए, कब स्कूल गए, कैसे पढ़े, कहाँ पढ़े उन्हें इन बातों की कोई खबर नहीं। बस जो जरूरत होती उसे पूरा करते जाते, बाकी घर में क्या हो रहा है, इसकी खबर उन्हें नहीं रहती थी। पत्नी के जन्मदिन पर, शादी की सालगिरह पर सुनिताजी उनका इंतज़ार करती रहतीं, आंसू बहाती रहतीं पर वो घर आते और पकवान खाकर सो जाते। उन्हें कुछ याद नहीं रहता था। इतना ही नहीं एक बार पूछने की जहमत भी नहीं उठाते थे कि आखिर कुछ विशेष क्यों बना है।

जब जिंदगी कुछ आसान होने लगी तो भाई की लाइलाज बीमारी ने पूरे परिवार को गहरे सदमे में डाल दिया। बीमार भाई की तीमारदारी ने उनका बनता हुआ सुख चैन फिर से छीन लिया। वही उनकी जवानी के खूबसूरत दिन थे जिन्हें शर्माजी ने काम के बोझ के नीचे दबाकर कुचल डाला। दवा, इलाज और हमेशा उसके साथ रहने की जरूरत ने उन्हें कैरियर से समझौता करने के लिए मजबूर कर दिया। विदेश जाने के मौके छोड़ दिए, अपना प्रमोशन तक ठुकरा दिया जिससे कि दिल्ली न छोड़नी पड़े पर होनी को कुछ और ही मंजूर था। भाई को वे बचा न सके। भाई के जाने के बाद उसके परिवार के देखभाल की जिम्मेदारी उनके कन्धों पर आ गयी। इस दौर में काम करने के लिए शर्माजी ने न दिन देखा न रात। सुबह से शाम आफिस के बाद, शाम 7 बजे के बाद ओवर टाइम और फिर रात में कहीं और नौकरी। बीच में जब फ़ोन की शुरुआत हुई तो शर्माजी ने अपने इलाके में पहला-पहला एस टी डी पी सी ओ खोला और रात-रात भर वे पी सी ओ चलाते और सुबह होते ही आफिस के लिए निकल जाते। मन का भय उन्हें इतने पर भी चैन नहीं लेने देता था। जब पिताजी आफिस से रिटायर होने को हुए तो शर्माजी ने उनके लिए एक ढाबा खोल दिया। उसकी खरीददारी, उसका प्रबंध, उसकी देखभाल भी खुद करते। इतने कठिन संघर्ष के बाद दिल्ली के सबसे पाश इलाकों में से एक में उनकी अपनी कोठी बनी, घर में एक नहीं बल्कि तीन-तीन गाड़ियाँ आयीं और पिताजी के नाम पर एक शानदार होटल बना जो अपने इलाके में एक अलग पहचान रखता है। लेकिन शर्माजी को चैन नहीं था। अक्सर मजाक में वे कहते थे कि क्या करें शादी में ससुराल वालों ने 'चैन' दिया ही नहीं। पर इसके पीछे

उनका भय हावी रहता था। वे अक्सर कहते रहते थे कि जब हम किसी की मरनी पर श्मशान जाते हैं तो वहाँ से लौटते ही पूछते हैं क्या छोड़ गयाi शायद इसके पीछे उनका भय ही बोलता था और उसी के चलते वे इतना कुछ छोड़कर जाना चाहते थे कि किसी को उनके जितनी परेशानी न हो।

पिछले साल नवम्बर में शर्माजी ने अपनी बेटी की शादी की और उसके बाद से सोचते रहते थे कि जिंदगी का लुत्फ़ उठाएंगे पर आठ महीने बाद ही अटैक ने उन्हें गहरे सदमे में डाल दिया। उनकी सारी योजनायें धरी रह गयीं। उन्हें बस बेटे की चिंता रह गयी थी पर उन्हें लगता था कि वह भी अपना मन होटल के काम में लगा ही लेगा इसलिए वे अब छुट्टियां लेकर घूमेंगे। पर इंसान जो जो सोचता है कहाँ कर पाता है। पूरे एक हफ्ते के बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिली थी, हम लोग मिलने गए थे पर वे शर्मा जी पुराने वाले शर्माजी नहीं रह गए थे। उन 10 दिनों में उनका पूरा कायाकल्प हो गया था। वे और भी बूढ़े लगने लगे थे। जीवन के चिह्न जैसे चुकते जा रहे थे। पहले से बहुत शांत हो गए थे। बार-बार फ़िल्मी गानों की पंक्तियाँ सुनाने की बजाय दर्शन की बात करने लगे थे। आफिस में, घर में, शर्माजी हमेशा जीवन की अरसता पर लगातार मजाक करते रहते थे पर जब मौत की झलक मिली तो वे तिनका-तिनका बिखर गए। घर में पिचासी साल के बाबूजी, पत्नी और जवान होता बेटा थे और उनके लिए ऐसे ही बिना किसी चेतावनी के बुलावा आ गया था, वे हतप्रभ थे। अब उन्हें जीवन का सार पता करना था।

कुछ दिनों बाद खबर मिली कि शर्माजी एक दिन चुपके से आफिस आये थे और स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति का आवेदन देकर चले गए थे। पूरा आफिस उनके इस निर्णय पर आश्चर्यचकित था। लोगों को विश्वास ही नहीं हो रहा था। उनके घर वाले भी परेशान थे। शर्माजी ने घर की दोनों गाड़ियाँ बेंच दी थीं। होटल को बेटे के नाम करवा दिया था, आफिस से जो पैसा मिला उसे लेकर और अपनी सब चल-अचल संपत्ति मिलाकर अपनी माँ के नाम पर एक ट्रस्ट बनाया और अपनी पत्नी को उसका ट्रस्टी तथा बेटे को नामिनी बना दिया। यह सब काम शर्माजी ने एक महीने में कर लिया था। उस समय कुछ पूछने पर यही कहते थे कि डाक्टर ने पैदल चलने को कहा है इसलिए गाड़ियाँ बेंच दी, तनाव लेने से मना किया है इसलिए सेवा निवृत्ति ले ली और होटल का सारा काम बेटे को सौंप दिया है। पर उनके मन में क्या चल रहा था कोई जान नहीं सका।

एक दिन शर्माजी से बात करने के लिए जब उनके घर फोन किया तो वहाँ का समाचार स्तब्ध करने वाला था। उनके बेटे ने जो बताया उससे हम सब अवाक रह गए। शायद पंद्रह दिन पहले की बात थी शर्मा जी हरिद्वार गए थे, वहाँ उनका दो कमरों का छोटा सा घर था जिसे उन्होंने किसी को देखभाल के लिए सौंप रखा था और धर्मशाला की तरह प्रयोग होता था। हम लोग भी कई बार वहाँ रुक चुके थे। शर्माजी वहीं गए थे पर दो दिन रहने के बाद वह घर उन्होंने देखभाल करने वाले के नाम कर दिया और खुद हिमालय की ओर निकल गए। फ़ोन बंद कर दिया और उससे इतना बोलकर गए कि 'कुछ दिनों के लिए हिमालय की गोद में जा रहा हूँ, जवाब मिल गया तो वापस आ जाऊंगा'। मैं निढाल होकर फ़ोन पर उनके बेटे की बात सुनता रहा और स्मृतियों में एक महीने पहले शर्मा जी से हुई बात गूंजने लगी। उन्होंने उस दिन कुछ दार्शनिक भाव में कहा था, 'यार, उजड़ना, बसना सब मन की अवस्था है। मैं अपने जीवन भर इन बातों से डरता रहा पर बीमारी के दस दिनों में पता चल गया कि पूरा जीवन ही यात्रा है, इसमें बसने का कोई अर्थ ही नहीं है, स्थिरता भी बस मरीचिका है। यह सब मन का फितूर है। मुझे तो सोचकर हैरानी होती है कि मैं जो अब तक करता रहा क्या उसी के लिए जीवन मिला थाi या मेरे जीवन का कुछ और उद्देश्य था और मैं कहीं और भटकता रहाi यह जीवन आखिर मुझे क्यों मिला थाi मैं जीवन भर सबको बसाने की कोशिश करता रहा पर खुद कहाँ बस पायाi' शर्माजी के इन शब्दों को याद करते हुए धीरे-धीरे चेहरे पर एक मुस्कान तिर गयी और बंद आँखों के सामने दो शब्द उभर आये, जिससे हम उन्हें आफिस में बुलाते रहते थे - 'परेशान आत्मा'।

श्री सुनील खन्ना, अनुभाग अधिकारी
भंडार एवं क्रय अनुभाग,
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

डबलरोटी

डॉ. अमिय बिन्दु गुप्ता

सुबह-सुबह तैयार होकर चिन्टू बरामदे में आया, आकाश अखबार पढ़ रहे थे। वह आकाश के पीठ पर लटक गया और गुड मार्निंग बोलकर कहने लगा 'पापा कुछ पैसे दे दो, मैं क्रिकेट खेलने जा रहा हूं।'

आकाश ने अखबार से बिना नजर उठाए जेब से दस रुपये का नोट निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया।

'इतने में क्या होता है पापा' कहते हुए चिन्टू वहीं खड़ा रहा।

'चलो जाओ, इतना बहुत है बच्चों के लिए'

'लो यह भी रख लो' कहते हुए चिन्टू ने दस का नोट वहीं अखबार पर फेंक दिया।

अचानक 'चटाक' की आवाज गूंजी। चिन्टू अपना गाल पकड़े हुए आंखे फाड़े देख रहा था। उसे कुछ समझ नहीं आया। आंखों के आगे अंधेरा छा गया था। रुलाई फूट रही थी पर अपने को रोककर वह जोर से चीखा 'पापा'

तब तक अगले 'चटाक' ने मानों उसे दिन में तारे दिखा दिए। वह चीखता हुआ वहां से भागा। भीतर से दौड़ती हुई अनीता वहां पहुंची। आकाश अभी भी अखबार में नजरें गड़ाए हुए जैसे कुछ ढूंढ़ रहे थे। दस का नोट वहीं अखबार पर पड़ा हुआ था।

'अरे, क्या बात हो गई, इतनी जोर से चिन्टू को क्यों मारा' अनीता के बात का जवाब आकाश ने उसी तरह अखबार में नजरें जमाए हुए दिया 'बदतमीज हो गया है, जबान लड़ाता है। उसे किसी चीज की कदर ही नहीं है।'

'आज तक तो ऐसा नहीं था, आज अचानक उसे कदर सिखाने लग गए। वह भी दस रुपये के लिए' अनीता ने एक सांस में अपनी बात पूरी की।

आकाश ने सीधे जवाब नहीं दिया कुछ प्रवचनी अन्दाज में बोलने लगे 'तुम सबको मुफ्त का खाने की आदत लग गई है। सब कुछ मिल जाता है न, इसलिए किसी चीज की कीमत नहीं मालूम। गरीबी क्या होती है यह भी नहीं मालूम। अरे, मैंने झेली है गरीबी, मुझे पता है भूख क्या होती हैi मुझे पता है दस रुपये की कीमत क्या होती है'

'ये क्या बात हुई, क्या हो गया है आपको, अगर चिन्टू या मैं गरीब घर में नहीं पैदा हुए तो इसमें हमारी क्या गलती हैi गरीब होना कौन सी अच्छी बात है। आपको तो खुश होना चाहिए कि आपका परिवार गरीब नहीं है।'

'यार ठीक है, मैं बहस नहीं करना चाहता। मुझे एक गिलास पानी ला दो और देखो वह कहां गया', कहकर आकाश ने ऊपर-ऊपर शांत होने की कोशिश की पर अन्दर कोई तूफान मचा हुआ था। वे समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर क्या हुआ उन्हेंi कल शाम से वे अजीब सी उलझन में थे। उनका मन नहीं लग रहा था। पत्नी अनीता उन्हें अपने से बहुत दूर और अजनबी जैसी लग रही थी। आज सुबह भी जब उन्होंने चिन्टू को चांटा मारा तो उनके मन में कहीं गहरे यह सोच थी कि जैसे उन्होंने अनीता के बेटे को मारा हो। व्यक्तित्व के इस द्वन्द्व पर उन्हें खुद आश्चर्य हो रहा था। यह भी अजीब लग रहा था

कि चिन्टू को उन्होंने इतनी बेरहमी से मारा जबकि उन्होंने उसके ऊपर पहले कब हाथ उठाया था, यह भी ठीक से याद नहीं था। इस द्वन्द्व से वे कल शाम से जूझ रहे थे। उन्हें लग रहा था जैसे उन्हें कोई नहीं समझता। अब तक वे यही मानते थे कि अनीता उन्हीं की तरह सोचती है, उनकी तरह ही आदर्शवादी है और जमीन पर रहती है पर कल शाम के दृश्य किसी फिल्म की तरह उनके जेहन में चल रहे थे और वे अनीता का वह रुप स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। उन्हें यह भी महसूस हो रहा था कि सारी बातों के लिए केवल अनीता ही जिम्मेदार नहीं है, लेकिन वे इस बात से हैरान थे कि सब कुछ जानते बूझते हुए वे खुद कैसे सबकी और अनीता की बातों में फंस गए।

अनीता की जिद पर कल वे महीने भर के राशन की खरीददारी करने फूड बाजार चले गये थे। वहां बाजार का लुभावनापन, उनकी बेचने की रणनीति देखकर वे खुद को ठगा महसूस कर रहे थे। वहां जाने को लेकर अनीता से उनकी कई बार बहस हुई पर वे अपनी बात समझा नहीं सके। महीने के शुरुआती हफ्ते में फूड बाजार में ऑफरों की भरमार होती है और लोग उन्हीं ऑफरों में उलझे हुए थे। आकाश पहले तो सामानों के चुनाव पर बड़बड़ाते रहे पर बाद में रणनीति के आगे हारकर चुप्पी साध ली जैसे गुलामी में लोग शासक की इच्छा को अपना शौक बना लेते हैं।

आकाश का मन पहले पहल चीनी का भाव देखकर उखड़ा था। जो चीनी वे गली वाले बनिया की दुकान से बत्तीस रुपये किलो लाते थे वही वहां पर सैंतालीस रुपये किलो था। पूरे पन्द्रह रुपये का अन्तर उन्हें बर्दाश्त नहीं हो रहा था। फिर उन्हें बाजार की रणनीति समझ आ गई क्योंकि हर जगह ऑफर के साथ चीनी मुफ्त मिल रही थी। पांच किलो तेल और पांच किलो चावल के साथ पांच किलो चीनी नौ सौ रुपये में था। दौ सौ पैंसठ रुपये में बासमती चावल के पांच किलो पैक के साथ एक किलो चीनी मुफ्त थी तथा पन्द्रह सौ रुपये तक का कुल बिल होने पर दो किलो चीनी मुफ्त थी। आकाश ने केवल अपनी जरूरत के सामान लिए और बिना चीनी लिए बिल बनवाने पहुंच गए पर अनीता चीनी लेने के लिए अड़ी थी। फूड बाजार के लोग और बिल बनाने वाले मिलकर आकाश को समझाने लगे और अन्त में आकाश को झुकना पड़ा। उन्होंने कुछ कोल्ड ड्रिंक्स, नमकीन और बासमती चावल का बैग ले लिया जिससे पूरा बिल पन्द्रह सौ का बन गया और कुल तीन किलो चीनी मुफ्त में मिल गई।

अनीता चहक रही थी कि उसने फूड बाजार वालों की रणनीति से उन्हीं को मात दे दी और महीने भर की चीनी मुफ्त ले आई। उसे अपने कुशल गृहणी होने पर नाज हो रहा था। लेकिन आकाश खुश नहीं था। उसे लग रहा था कि जितना सामान लिया उनमें से बहुत से सामानों की जरूरत नहीं थी पर अनीता ने मेहमानों की या लोगों की बात करके उन्हें चुप करा दिया था। आकाश को महसूस हो रहा था कि उनकी अपनी घरेलू जरूरत, बाजार की रणनीति के आगे हार गई थी। वे कुछ बोले नहीं, बहस नहीं की क्योंकि वहां खड़े लड़के भी उन्हें समझाने लग रहे थे। यह बात उन्हें नागवार गुजरी थी कि दुकानदार उन्हें समझाए कि उन्हें अपने घर के लिए क्या खरीदना चाहिए। सबसे ज्यादा आश्चर्य तो उन्हें अपनी पत्नी अनीता के व्यवहार पर हुआ था। जिसे वे इतने दिनों से संजीदा, मितव्ययी और कुशल गृहणी मान रहे थे वह भी भीतर से कितनी दिखावा पसन्द, लालची व स्वार्थी है यह देखकर उन्हें हैरत हुई थी।

सामानों का टोकरा धकेलते हुए पार्किंग तक पहुंचे और सामान डिग्गी में रखने लगे कि आकाश की नजर फूड बाजार के सामने सड़क उस पार बने कूड़ाघर पर पड़ी। दो लड़के पीठ पर बोरा लटकाए कूड़े से कुछ ढूंढ़ने की कोशिश कर रहे थे। बोतल, पॉलीथिन जो उन्हें साबुत मिलता, वे सब अपने बोरे में डालते जा रहे थे। उनके शरीर पर शर्ट नहीं थी और पैंट भी पता नहीं कितनी जगह से फटी थी। आकाश, अनीता की बातों की ओर ध्यान न देकर उन्हीं लड़कों की गतिविधियों को देखे जा रहे थे। एक ने कूड़े से एक पॉलीथिन निकाली और उसे खोलने लगा। दूर से उसमें कोई खाने की चीज नजर आ रही थी। शायद उसमें डबलरोटी थी। दोनों लड़के उसी पर अपनी नजरें गड़ाए हुए थे। दोनों बहुत उत्साह से पॉलीथिन खोलने में लगे थे और कूड़ा बीनने का काम बन्द कर दिया था कि अचानक पास में खड़ा कुत्ता उन पर भौंकने लगा। उन्होंने जब उसे भगाने की कोशिश की तो कुत्ता बड़ी तेजी से उन पर झपटा और पॉलीथिन उनके हाथ से झपटकर भागने लगा। दोनों लड़के बेतहाशा उसके पीछे भागने लगे, सड़क पर गाड़ियों की भीड़ थी, हार्न की जोरदार शोर थी पर उन्हें जैसे कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा था। आगे-आगे कुत्ता और

पीछे-पीछे दोनों लड़के भागे जा रहे थे, भागे जा रहे थे। कुत्ता आगे जाकर एक गली में घुस गया। दोनों लड़के भी गली में मुड़े ही थे कि गली के मुहाने पर लगे बिजली के खंभे से आगे वाला लड़का बड़ी जोर से टकराया। टक्कर इतनी तेज थी कि उसकी आवाज आकाश को भी सुनाई पड़ी। लड़का जमीन पर गिर पड़ा। दूसरा लड़का उसे उठाने के लिए झुका तो उसने उसे इशारे से कुत्ते का पीछा करने के लिए भेज दिया। दूसरा लड़का दौड़ते हुए गली में गायब हो गया था। दो चार लोग वहां जुट गए थे और लड़के को उठाने की कोशिश कर रहे थे। आकाश भी वहां जाना चाहता था, लड़के को देखना चाहता था पर अनीता ने रोक दिया 'ऐसा तो रोज होता रहता है। चलो घर चलो, जल्दी पहुंचना है। आज शनिवार है, शनि मन्दिर भी जाना है।'

आकाश ने कार स्टार्ट कर दी और आगे बढ़ गया। आगे से यू-टर्न लेकर वह गली के सामने पहुंचा और कार रोककर उतरने लगा। अनीता उसे रोक रही थी 'तुम्हें क्या जरुरत आ पड़ी, सरकार है न, नगरपालिका वाले अभी खुद हटा देंगे। वैसे भी बिग बाजार वाले अपने शोरूम के सामने 'गन्दगी' नहीं पड़ी रहने देंगे। इनकी नगरपालिका वालों से अच्छी सांठगांठ होती है। देखते नहीं, इनके सामने की सड़कें, नालियां सब कैसे चमचमाती रहती हैं।'

अनीता की बातें सुनकर आकाश का सिर घूमा जा रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अनीता की बातों का क्या जवाब दे। वह तो अभी भी अनीता के व्यवहार को लेकर चकित था। आकाश कार से उतरा तो अनीता भी उतर गई। लड़के के इलाज के नाम पर वहां एक आदमी लोगों से चन्दे इकट्ठे कर रहा था। आकाश ने पर्स खोला और पैसे देखने लगा, तब तक अनीता ने उसके हाथ से पर्स छीन लिया और दस का एक नोट निकाल कर आगे बढ़ा दिया। अनीता ने फिर आकाश को लगभग धकेलते हुए कार में बिठा दिया और खुद आकर कार में बैठ गई। आकाश सड़क पर कोई तमाशा नहीं करना चाहता था इसलिए चुपचाप कार में बैठ गया। वह चुप था पर अनीता अभी भी बोले जा रही थी 'अब चलो भी, ये इलाज उलाज कुछ नहीं कराएगा, अपनी जेबें भरेगा बस। इन सबका यही धन्धा है। हर बात में चन्दा मांगने लगेंगे। आजकल भीख मांगने का यह नया तरीका निकाला है।'

आकाश ने कार स्टार्ट कर दी। वह अब भी चुप था। भीड़ से उठने वाले कुछ शब्द 'गरीब', 'भूख', 'डबलरोटी', 'मौत' उसकी कानों में लगातार गूंज रहे थे। आकाश घर लौट आया था पर उसके अन्दर कुछ गहरा घटित हो चुका था। वह शनि मन्दिर भी नहीं गया, थकने की बात करके चुपचाप लेटा रहा। अपनी पत्नी अनीता उसे अनजानी सी लग रही थी। उसे अपने आप पर भी गुस्सा आ रहा था कि वह कितना बदल गया है। जब उसने सरकारी नौकरी शुरु की थी तो कितने अरमान थे उसके। वह हमेशा से खुद को लोगों की सेवा में लगा हुआ देखना चाहता था। परन्तु वही नौकरी, अब उसकी जीविका और स्टेटस सिम्बल बनकर रह गयी थी। उसे लग रहा था कि ऊपर से वह जितना शान्त हैं उसके अन्दर उतना ही गुबार भरा हुआ है। उसकी आंखों के सामने डबलरोटी की तस्वीर घूम गई कि ऊपर से चिकनी डबलरोटी के अन्दर कितने छेद होते हैं और वह कितनी जगह से कटी फटी होती है। वह अखबार में नजरें गड़ाये अभी भी कुछ ढूढ़ रहा था। अनीता किचन से पानी लेकर आ चुकी थी। आकाश के व्यवहार से वह भी स्तब्ध थी। उसने पानी का गिलास बढ़ाया, पानी का गिलास पकड़ते हुए आकाश बोला 'जानती हो, दस रुपये में डबलरोटी मिल जाती है।'

'उससे क्या होता है',

'क्या होता है, अरे, उससे किसी की भूख मिट जाती है, कोई मरने से बच जाता है। लेकिन तुम्हें यह बात समझ नहीं आएगी।'

आकाश पानी पी रहा था और उसके चेहरे का भाव लगातार बदल रहा था। उसके शान्त चित्त चेहरे पर एक पल के लिए घृणा तिर गई। वह बड़बड़ाया 'सरकार, बाजार, खुद हम लोग सब मिले हुए हैं, और अब तो यह अखबार भी।' आकाश ने अखबार को मरोड़कर बाहर फेंक दिया और उसका बड़बड़ाना जारी रहा 'तीन-तीन पेज बिग बाजार के ऑफरों से भरे पड़े हैं, पर कल एक लड़का डबलरोटी के लिए मर गया, उसके लिए एक लाइन भी जगह नहीं है इनके पास।'

डॉ. अमिय बिन्दु गुप्ता, अनुभाग अधिकारी
भण्डार एवं क्रय अनुभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली. 110012

जो बोया सो काटा

श्री भुवनेश उप्रेती

अक्सर हम अपनी खामियों (गलतियों) को समझ या यूं कहें पहचान नहीं पाते हैं।

यह घटना उस समय की है जब मैं उत्तरांचल के एक गांव में बैंक प्रबन्धक के पद पर कार्यरत था। हमारी शाखा में लालू नाम के एक व्यक्ति का खाता था, लालू की उम्र लगभग 35 वर्ष के आस-पास की होगी। लालू अक्खड़/दबंग किस्म का इंसान था। गांव के लोगों से तथा अपने नजदीकी लोगों से अक्सर लड़ाई की चर्चे हर 10-15 दिन के अन्तराल में सुनने को मिल जाते थे। जब भी वह बैंक में किसी काम से आता था तो अकड़कर ही बात करता था और सिर्फ बैंक में कार्यरत श्री यादव जी से ही बात करता था। वह मुझको भी नमस्ते/अभिवादन नहीं करता था और अपने ही घमण्ड में रहता था।

मैंने अपने सहकर्मी श्री यादव जी से इसके बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि इस गांव का मवाली है, इसके राजनैतिक संबंध भी हैं और यह शराब की तस्करी और जुए के अड्डे भी चलाता है। इसके पास खेती के लिए काफी जमीन है तथा ठेकेदारी भी करता हैं। पैसे तथा बल का धनी है इसलिए सब ग्रामवासियों को डरा-धमका के रखता है। यादव जी ने मुझे सलाह दी की इसको ज्यादा मुंह न लगाएं।

अक्सर शाम को जब भी मैं सैर करने जाता था तो रास्ते में सभी ग्रामवासी मेरा अभिनन्दन करते थे, लेकिन लालू मुंह मोड़ लेता था। आज शेरसिंह चाय वाले की दुकान में 8-10 लोग जमा थे। मुझे देखकर वह चौंक गए। सबने मेरा अभिवादन किया और मैंने उनसे दुकान में बैठने का कारण पूछा तो वह शर्मा गए और वह कुछ छुपा रहे थे। उन्होंने बताया की वह आज शराब पीने के लिए इक्ट्ठे हुए हैं। मैंने उन्हें बताया कि एक तो तुम सब गरीब हो फिर भी शराब पीने की हिम्मत कर रहे हो। यह आपके स्वास्थ्य और परिवार के लिए ठीक नहीं है। यदि आप शराब पीने में खर्चा करोगे तो घर का खर्च कैसे चलाओगे। मैं बैंक का प्रबंधक होकर अच्छा पैसा कमाता हूं और फिर भी शराब नहीं पीता हूं। यदि शराब का खर्चा घर के काम में उपयोग होगा तो घर स्वर्ग बन जाएगा। अभी में उनको समझा ही रहा था कि पीछे से लालू बोल पड़ा, आप इनको शराब पीने से मना कर रहे हैं, यदि मना करना है तो सरकार को मनाओ की वह शराब न बेचे। सरकार खुद शराब बेच रही है क्योंकि उसको इससे टैक्स के रूप में मोटी आमदनी होती है और आप बेकार में इन लोगों के पीछे पड़े हैं।

लालू को मैंने बताया कि सरकार भी मजबूरी में शराब बेच रही है क्योंकि जब भी शराब पर बैन लगाया गया तो शराब की तस्करी तथा कच्ची शराब का धंधा फूलने फलने लगा जो आपने आपमें बड़ी समस्या बन गई। इसलिए सरकार चेतावनी के साथ शराब बेच रही है और हर बोतल में लिखा है कि शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

यदि हम समझदार हैं तो अपने सेहत और धन का ख्याल रखते हुए इसका उपयोग नहीं करना चाहिए। लालू को मैंने बताया कि मैं इनके हाथ से शराब का गिलास नहीं छीन रहा हूं सिर्फ अपने विचार व्यक्त कर रहा हूं और फिर भी यदि यह शराब पीना चाहते हैं तो पियेंx मैं ग्रामवासियों को अपना समझ कर कह रहा हूं, ताकि वह इस बुराई से

बचें। इतना कहकर मैं आगे सैर को चल दिया। यह मेरी लालू से पहली भिड़ंत थी।

हफ्ते बाद आज फिर लालू बैंक में आया। यादव जी के ही पास गया और बोला की मेरा 50,000/- का फिक्स डिपोजिट समय से पहले तोड़ दो। यादव जी ने समय से पहले फिक्स डिपोजिट तोड़ने का कारण पूछा तो बोला कि मुझे ठेके के टेन्डर के लिए पैसा जमा कराने हैं। बताया कि मैं इस डिपोजिट को तोड़ना नहीं चाहता था लेकिन अपने मित्र और ग्रामवासियों से 50,000/- की मदद की पेशकश रखी तो कोई भी मेरी मदद के लिए आगे नहीं आया। मेरी दस दिन में धान की कटाई हो जाती तो मैं उनके पैसे लौटा देता और फिक्स डिपोजिट भी नहीं तोड़ना पड़ता।

मैं अपने काम में व्यस्त था लेकिन लालू की बातें सुन रहा था। यादव जी लालू को मेरे पास लाये, सामने आते ही लालू ने नमस्ते की। मवाली के मुख से नमस्ते सुनकर मैं हैरान हो गया। मेरी दो साल के कार्यकाल में लालू की पहली नमस्ते थी। आने का कारण पूछा तो बताया कि गांव वालों ने मेरी मदद नहीं की, जिस कारण मुझे अपना फिक्स डिपोजिट समय से पहले तोड़ना पड़ रहा है। इन गांव वालों को चुन-चुन कर ठिकाने लगाऊंगा।

अभी 10 दिन में मेरी धान की कटाई होगी तब मैं धान बेचकर फिर आपके बैंक में फिक्स डिपोजिट करा दूंगा। मैंने लालू से पूछा आपके धान के खेत कहां हैं। लालू बहुत प्यार से बोला साहब जहां आप दो हफ्ता पहले शेरसिंह की दुकान के पास खड़े थे वह सब मेरे खेत हैं। धान की फसल बस तैयार है। मैंने लालू को कहा उन खेतों में तो मैंने घास उगी देखी है और तुम धान की फसल की बात कर रहे हो, लालू बहुत विश्वास के साथ बोला, नहीं साहब आपको धान की पहचान नहीं है। क्योंकि आप शहर के जो ठहरे। मैंने अपने खेत में धान बोया है और फसल भी तैयार है। मैंने लालू को फिर कहा कि शेर सिंह की दुकान के सामने खेतों को रोज देखता हूं, उन सब खेतों में धान नहीं घास उगी हुई है। मेरी बात सुनकर लालू हंस रहा था और उसने कहा की शाम को जब आप सैर करने आओगे तो मैं आपका इन्तजार करूंगा और आपको शेर सिंह की दुकान में चाय भी पिलाऊंगा और धान के खेत भी दिखाऊंगा अपने।

शाम को हर दिन की तरह मैं सैर को निकल पड़ा, शेर सिंह की दुकान के पास लालू खड़ा था, मुझे देखते ही लालू जोर से बोला, मैनेजर साहब नमस्तेx यह लालू की दो साल में एक ही दिन में दूसरी नमस्ते थी। लालू की मुस्काराहट देखकर उसके मवाली/दबंगी चेहरे में चमक नजर आ रही थी। आइए, साहब मैं अपने खेत दिखाता हूं। यह देखिए, यह सब मेरे खेत हैं, जिसको आप घास कह रहे थे वह घास नहीं धान हैं। इन खेतों में ही आप कह रहे थे कि घास उगी हुई है।

देखिए, ध्यान से देखिए सर यह धान हैं जब सर मैंने अपने खेत में अपने हाथ से धान बोये हैं तो फिर घास उगने का मतलब ही नहीं ठहरा। फिर मैंने एक बार फिर लालू से पूछा कि आपने धान ही बोये थे, तो लालू बोला हां सर आपके सामने हैं प्रत्यक्ष को भी प्रमाण की जरूरत है क्या सरx

लालू की बात सुनकर मैं मंद-मंद मुस्करा रहा था। लालू का चेहरा भी महक रहा था, मैंने लालू से कहा लालू तुम ठीक हो कल तुमने धान बोये आज तुम धान काटोगे। हां सर धान ही काटूंगा। यही बात हमारे जीवन में भी लागू होती है।

आज जब तुम बैंक में आए थे तो कह रहे थे कि मुसीबत के क्षण में गांव वाले तुम्हारी मदद नहीं कर रहे हैं। वास्तव में तुमने भी कभी किसी की मदद नहीं की है। तुम गांव वालों और सगे-संबंधियों से अच्छा आचरण नहीं करते हो, जुए में पैसा गवांते हो, दारू पीकर दंगा करते हो, जिससे काम करवाते हो उसका पूरा पैसा नहीं देते हो, अपने परिवार के सदस्यों तक का ख्याल नहीं रखते हो।

काश, तुमने अच्छा आचरण और मधुर संबंध अपने परिवार एवं ग्रामवासियों से रखा होता तो आज तुम्हें यह दिन नहीं देखना पड़ता और लोग स्वयं तुम्हारी मदद के लिए आते। यदि तुमने लोगों की मदद की होती तो आज मुसीबत के क्षण में मदद की बम्पर फसल तुम्हारे सामने खड़ी होती, जैसे धान की बम्पर फसल आपके खेतों में तैयार खड़ी है। मेरे लाख कहने पर भी तुम्हारी धान की खेती घास में नहीं बदली, हम खेतों में जो भी बोते हैं वही कुछ समय बाद काटते हैं। वैसा ही हमारे जीवन में होता है। यदि हम प्यार, दया, मेहनत और ईमानदारी से जीवन जीते हैं तो वह भी हमें वापस मिलता है।

मेरी बातें सुनकर लालू की आंखें नम और झुकी हुई थी। लालू के हाव-भाव में मवालीपन आज कम नजर आ रहा था। लालू ने आश्वासन दिया कि वह इन बातों पर जरूर ध्यान देगा। इतना कहकर मैं आगे सैर के लिए चल दिया, जाते-जाते लालू ने फिर जोर से कहा। साहब नमस्ते। यह लालू की एक ही दिन में तीसरी नमस्ते थी।

अगले दिन जब मैं शाम को सैर के लिए जा रहा था तो वहां लालू खड़ा था और ऐसा लग रहा था कि वह मुझे अभिवादन करने के लिए खड़ा है। उसने मुझे नमस्ते की और उसके अभिवादन में पश्चाताप का भाव साफ झलक रहा था।

श्री भुवनेश कुमार उप्रेती
सी-22, एश्वर्यम अपार्टमेन्ट, प्लाट नं.17, सेक्टर-4,
द्वारका, नई दिल्ली - 110075

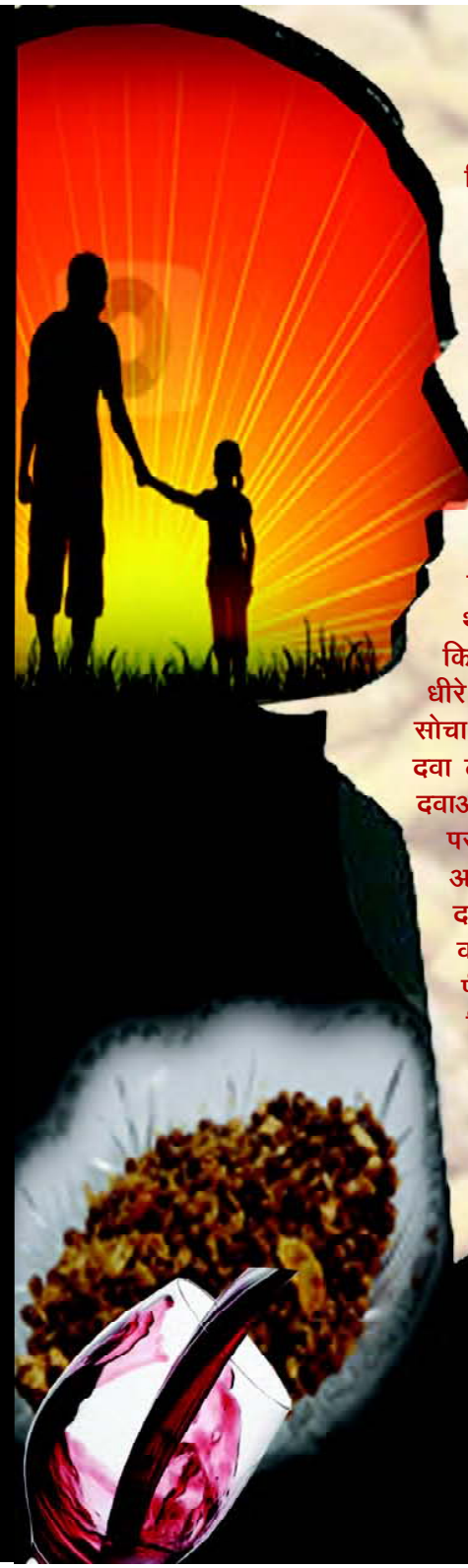

दालमोट

दिल्ली की मई की गर्मी और पूरे दिन की भागदौड़। वो पूरी तरह से थक चुका था। गेस्ट हाउस पहुँचते पहुंचते दस बज चुके थे। शरीर बुरी तरह टूट रहा था। उसने ए.सी. चला दिया। कमरे की ठंडक से थोड़ी राहत पहुंची। उसने अपना बैग खोला। बिटिया ने करीने से सारा सामान लगा रखा था। उसकी छोटी सी सात साल की बेटी थी। उसकी हमेशा जिद रहती थी कि पापा का सामान वही रखेगी। उसकी दवाईयों का हमेशा ध्यान रखती थी। इन्सुलिन के इन्जेक्शन प्रतिदिन के हिसाब से, हृदय की बीमारी की दवाईयां सुबह शाम के लिये अलग अलग प्लास्टिक की छोटी छोटी थैलियों में, जिससे किसी दवा के भूलने की संभावना न हो। उसने दूसरे बैग से रॉयल चेलेन्जर की बोतल निकाली। यूं तो अकेले पीने का मजा नहीं होता पर एक दो पैग से थकान तो कम हो ही जाती है। उसने कैन्टीन फोन किया एक आमलेट और सलाद के लिये। पर कैन्टीन वाला खाना परोसने में व्यस्त था। उसने फ्रिज से बर्फ निकाली और एक पैग बनाया। उसकी बेटी हमेशा पीने का विरोध करती थी। अक्सर पीकर घर आने पर उससे झगड़ा होता था। क्या पापा आज फिर पीकर आ गये।'' वो उसकी गोद में नहीं आती थी। काफी मिन्नतें करने के बाद नाक बन्द कर उसके पास आती थी। अक्सर उसे लगता था कि जब वो नशे में बेसुध सो जाता था तो वो उसके पास आकर बैठ जाती थी। उसके बालों में धीरे धीरे अंगुलियां फिराती थी और वो चुपचाप बेटी के बेपनाह प्यार के झकोलों में सो जाता था। उसने सोचा पैग लगने से पहले दवाएं निकाल लें नहीं तो एक दो पैग के बाद पता नहीं दवा लेना उसे याद भी रहेगा या नहीं। उसने फिर से बैग खोला, दवाएं निकाली। दवाओं के साथ एक छोटा सा दालमोट का पैकेट पड़ा था। उसे दालमोट बहुत पसन्द था। पीने की शुरूआत अक्सर दालमोट खा कर ही करता था। उसकी आखें भर आयी। बिटिया ने सोचा होगा कि रात को थके हारे आने पर पापा दालमोट कहाँ पायेंगे। फिर उन्हें ऐसे ही पीनी पड़ेगी। दालमोट लेकर वापस सोफे पर बैठते-बैठते उसके हाथों पर आंसू टपक पड़े। उसके पीने से लाख घृणा करने के बावजूद भी वो नन्हीं परी उसका कितना ध्यान रखती है। उसने भीगे हाथों से एक पैग बनाया। दालमोट का पैकेट खोला, और एक फांक लगायी। दालमोट खाते हुये उसने आंखे बन्द कर ली। उसे लगा बिटिया उसके पीछे खड़ी है और उसके बालों में अंगुलियां फिरा रही है। उसकी थकान उतरने लगी। उसने कभी सोचा नहीं था कि दालमोट में भी इतना नशा होता है। उसने दूसरी फांक लगायी दालमोट का नशा हावी होने लगा। उसका सिर सोफे पर लुढ़क गया और वो गहरी नींद में खो गया।

डॉ. ज्ञानेन्द्र मिश्र, वित्त एवं लेखा अधिकारी
वित्त एवं लेखा अनुभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

आप जीतेंगे पापा

लड़की को स्कूल के लिये देर हो रही थी। वह साईकिल के पैडल पर जोर लगाये जा रही थी। जल्दी-जल्दी, क्योंकि देर होने पर स्कूल का गेट बन्द हो जाता और प्रवेश नहीं मिलता था और पूरा दिन बेकार हो जाता था, अर्थदण्ड अलग से। बेख्याली में उसने ध्यान नहीं दिया पर पीछे से किसी छोटे बच्चे की आवाज आ रही थी ''पापा और तेज''। ''पापा और तेज''। जब यह आवाज आती ही रही तो उसने पीछे मुड़ कर देखा। एक अधेड़ आदमी छोटे बच्चे को साईकिल पर बिठाये था शायद स्कूल छोड़ने जा रहा था। छोटा बच्चा जोर-जोर से चिल्ला रहा था ''पापा और तेज'', ''पापा और तेज''। शायद वो चाहता था कि उसके पापा की साईकिल उसकी साईकिल से आगे निकल जाये। अधेड़ आदमी पसीने पसीने हो रहा था। लड़की ने अपनी साईकिल धीमी करनी शुरू कर दी इस तरह, कि छोटा लड़का यह न समझ पाये कि वो जानबूझकर साईकिल धीरे कर रही है। थोड़ी देर में अधेड़ आदमी की साईकिल उसके बगल से गुजर गयी। लड़का जोर से चिल्लाया ''पापा आप जीत गये'' ''पापा जीत गये''। लड़की का चेहरा खुशी से दमकने लगा। कितना अच्छा लगता है जब पापा जीतते हैं। उसके सामने पापा का चेहरा आ गया। पापा हर दिन को लड़ाई की तरह लेते हैं। सुबह खुशी-खुशी निकलना और शाम को थके हारे आना। वो समझती है पापा की जिम्मेदारियां, उनका दुःख और दर्द, वो लड़ेगी उनके साथ मिलकर और जितायेगी उन्हें।

उसने भरी आंखों से दूर जाती साईकिल को देखा। बच्चा अभी भी चिल्ला रहा था ''पापा आप जीत गये'', ''पापा आप जीत गये''। लड़की जोर से चिल्लाई ''आप जरूर जीतेंगे पापा''।

डॉ. ज्ञानेन्द्र मिश्र, वित्त एवं लेखा अधिकारी
वित्त एवं लेखा अनुभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

फौजी

यह कहानी एक फौजी की है जो कई साल युद्ध में लड़ने के बाद अपने घर लौट रहा है। फौजी ने घर आने से पहले अपने माता-पिता को फोन किया। पिताजी मैं घर आ रहा हूं, पर आपसे एक बात पूछना चाहता हूं।

मेरा एक फौजी मित्र है जिसे मैं अपने साथ घर लाना चाहता हूं। जरूर-जरूर, बेटा जरूर लाओ - उन्होंने कहा। हम उससे मिलकर बहुत खुश होंगे। लेकिन एक ऐसी बात जिसे मैं आपको आवश्यक रूप से बता देना चाहता हूं कि ... हां-हां बेटा आगे बोलो - पिताजी मेरा मित्र लड़ाई में बुरी तरह जख्मी हो गया था। उसका पैर जमीन के अन्दर छिपे एक विस्फोटक पर पड़ गया जिससे उसकी एक बांह और एक पैर उड़ गया। अब वह एक तरह से अपाहिज हो गया है उसे सहारे की जरूरत है पर सहारा देने वाला कोई नहीं है और मैं चाहता हूं कि वह मेरे ही साथ रहे।

पिताजी ने सहानुभूति जताते हुए कहा - ओह हमें ये सुनकर अफसोस हुआ। बेटा, हम एक काम कर सकते हैं उसके रहने के लिए हम कोई जगह ढूंढ़ लेंगे। पीछे से मां की आवाज आई - हां बेटा हम उसके लिए कोई और इंतजाम कर लेंगे। नहीं मां, नहीं पिताजी, मैं चाहता हूं कि वह हमारे साथ ही रहे,, बेटा कातर स्वर में बोला। बेटा, तुम नहीं जानते तुम क्या चाह रहे हो तुम्हारे दोस्त की इतनी बड़ी समस्या है, फिर वह तो हमारे ऊपर बोझ बन जाएगा। आखिर हमारी अपनी जिन्दगी भी तो है और हम ऐसी चीज को जो हमारी अपनी नहीं है, अपनी जिन्दगी में कैसे दखल देने दे सकते हैं। मेरे विचार में तो तुम्हें अपने दोस्त को भूलकर भी साथ नहीं लाना चाहिए। निश्चित रूप से वह जीने का खुद कोई तरीका ढूंढ ही लेगा, निराश स्वर में अच्छा कहकर बेटे ने फोन काट दिया।

कई दिन हो गये, माता-पिता को फिर बेटे का कोई सन्देश नहीं मिला। वे सोचते रहे कि आने वाला होगा। लेकिन, कुछ दिन बाद पुलिस का फोन आया। पुलिस वाले ने बताया कि उनका बेटा मकान की छत से गिरकर मर गया है। पुलिस वालों का मानना था कि उसने आत्महत्या की है। गहरे सदमे में डूबे मां-बाप वहां पहुंचे, जहां उनके बेटे का शव रखा था। पुलिस ने उनसे शव की पहचान करने को कहा गया। वे अपने बेटे को शीघ्र पहचान गये, पर उन्हें तभी बहुत भयानक सच का भी पता चला जो उन्हें अभी तक नहीं मालूम था उनके बेटे का एक ही हाथ, और एक ही पैर था। यह देखते ही मां-बाप फूट-फूटकर रोने लगे। तब उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ।

अतः इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें निस्वार्थ होकर दूसरों की मदद करनी चाहिए, न कि स्वार्थी बनकर, हमें हर समय अपने बारे में न सोचकर देश के बारे में सोचना चाहिए और बिना किसी स्वार्थ के देश की उन्नति के लिए बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए तथा इस तरह असहाय लोगों की जो कि अपने सगे नहीं हैं तो भी सच्चे मन से उनकी मदद करनी चाहिए तथा हमें अपनी विकंलागताओं को सहर्ष स्वीकार कर स्वावलम्बी और और स्वाभिमानी जीवन जीने का प्रयत्न करना चाहिए।

श्री वीर सिंह, सेवानिवृत्त भंडार विभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली

पूजनीय

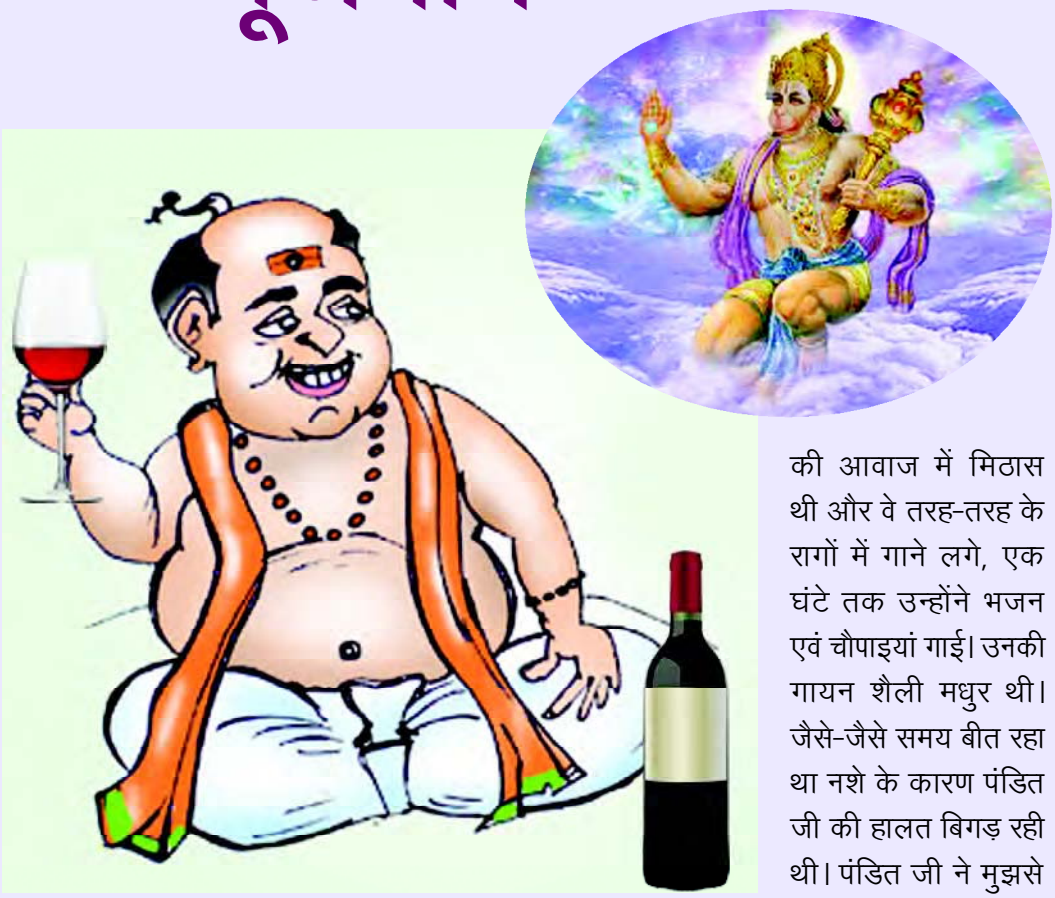

यह घटना उस समय की है कि जब मैं उत्तरांचल के एक गांव चनौदा में बैंक की शाखा में कार्यरत था। मेरी शाखा के सामने पंडित जी की चाय/पकौड़ी की दुकान थी। रिटायरमेंट के बाद पंडित जी चाय की दुकान चलाते थे। शाम होने तक, जितना कमाते थे उतने की शराब पी जाते थे।

हर साल मैं अपने घर में सुन्दर काण्ड का पाठ कराया करता था और सभी ग्रामवासियों को प्रसाद एवं बह्मभोज के लिए निमन्त्रण देता था। पंडित जी को बुलाने से कतराता था क्योंकि शाम के वक्त उनकी हालत शराब पीने के कारण ठीक नहीं होती थी।

मेरे घर में सुन्दर काण्ड का कार्यक्रम चल रहा था। तबला और हारमोनियम की आवाज सुनकर पंडित जी शराब के नशे में भी आ गए। उन्हें देखकर मुझे गुस्सा आया कि लोग धार्मिक कार्यक्रमों में भी इस अवस्था में आ जाते हैं और सात्विक माहौल को खराब करते हैं। कुछ देर बैठने के बाद पंडित जी ने हारमोनियम बजाना शुरू किया और सुर एवं ताल में सुन्दर काण्ड की चौपाइयां गाने लगे। पंडित जी की आवाज में मिठास थी और वे तरह-तरह के रागों में गाने लगे, एक घंटे तक उन्होंने भजन एवं चौपाइयां गाई। उनकी गायन शैली मधुर थी। जैसे-जैसे समय बीत रहा था नशे के कारण पंडित जी की हालत बिगड़ रही थी। पंडित जी ने मुझसे जाने की आज्ञा चाही और माफी भी मांगी कि वह इस हालत में भी आ गए। पंडित जी की हालत देखते हुए मैंने उनको जाने के लिए कहा और अपनी टॉर्च दे दी क्योंकि अंधेरा हो गया था ताकि वह घर सुरक्षित पहुंच जाए।

अगले दिन पंडित जी टॉर्च लौटाने आए और उन्होंने कार्यक्रम की प्रशंसा की। मै भी पंडित जी के गायन की प्रशंसा की और कहा कि आपकी गायन शैली मधुर है।

इतना कहना था कि पंडित जी ने बताया कि गांव के दूसरे लोग बिना लय और ताल में गा रहे थे। मैंने तो गायन का तीन साल का कोर्स किया है। मैं राग, मल्हार, दरबारी,

मालकोश सभी गा सकता हूं। सुन्दर काण्ड मुझे कण्ठस्थ है। गीता, रामायण, भागवत तथा कर्मकाण्ड के मंत्र एवं श्लोक मुझे याद है। पंडित अक्सर शादी ब्याह के कर्मकाण्ड किताब पढ़कर करते हैं लेकिन मुझ सब कण्ठस्थ हैं। उपनिषद एवं वेद भी मैंने पढ़े हैं। संस्कृत भाषा में मेरी पूरी कमाण्ड है। बीस कोस तक मुझ जैसा पंडित नहीं मिलेगा। गांव वाले तो मुझे कुछ समझते ही नहीं, न ही किसी कार्यक्रम में मुझे बुलाते हैं। वे मुझे वह सम्मान नहीं देते जिसका मैं हकदार हूं। वैसे भी बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

मैंने पंडित जी से अनुरोध किया कि मेरी भी एक शंका का समाधान करो। पंडित जी बोले, पूछिए जितना मेरे पास ज्ञान है मैं भरसक आपकी शंका का समाधान करूंगा। पंडित जी को मैंने बताया कि मेरे पास 2 स्वर्ण कलश है। एक में गंगाजल भरा है और दूसरे में शराब भरी है, आप बताएं कौन-सा कलश, पूजा/मंदिर में रखा जाएगा पंडित जी को बात समझ में आ गई थी, लेकिन उत्तर देने में कतरा रहे थे। मैंने फिर उनसे उत्तर चाहा तो वो बोल पड़े, पूजा में तो गंगाजल वाला स्वर्ण कलश ही रखा जाएगा और वही कलश पूजनीय होगा। आइए इस पर विचार करें।

पंडित जी की समस्या हम सबकी समस्या है। जरा सोचें क्या यह मानव शरीर हमें शराब नशे या भोग और विलासत में जीने के लिए मिला है। जब हम ही अपने शरीर की इज्जत नहीं करेंगे तो समाज के लोग हमारी क्या इज्जत करेंगे। यह शरीर हमें देश, धर्म, समाज तथा परिवार की सेवा के लिए मिला है जिसने भी इसका सदुपयोग किया वह इस संसार से जाने के बाद भी पूजनीय है जैसे महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, भगतसिंह, सुभाष चन्द्र बोस, मां टेरेसा, गुरूनानक देव, महात्मा बुद्ध ऐसे असंख्य उदाहरण हैं।

गोस्वामी तुलसी दास जी ने लिखा है

बड़े भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सबग्रथन्हि गावा।।
साधन धाम मोक्ष कर द्वारा। पाइ न जेहिं परलोक संवारा।।

बड़े भाग्य से यह मनुष्य शरीर मिला है। सभी धर्मग्रन्थों ने कहा है कि यह शरीर देवताओं को भी दुर्लभ है। यह साधना का धाम और मोक्ष का दरवाजा है। जो लोग मनुष्य शरीर पाकर विषयों में मन लगा लेते हैं वह अमृत को विष में बदल रहे हैं।

अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं, आइए, तुरन्त अपनी गलती सुधारे और पूजनीय बने।

श्री हरिलक्ष्मी सेवा
सी-22, एश्वर्यम अपार्टमेन्ट
प्लाट नं.17, सेक्टर-4,
द्वारका, नई दिल्ली - 110075

बेचारा पति

एक सहेली ने अपने पड़ोस की बात व इससे उपजे हुए अपने प्रश्नों के बारे में यह बताया.....

एक पड़ोसी दम्पत्ति हैं। दोनो ही नौकरी करते हैं। तीन महीने पहले उनका बच्चा पैदा हुआ। पत्नी घर से ही काम यानी वर्क फ्रॉम होम कर रही है। वैसे तो, पहले से ही चाभी लेकर उनकी अनुपस्थिति में भी काम करने वाली एक महरी व एक कुक हैं। बच्चे के आगमन के बाद उसकी देखभाल के लिए भी एक आया रख ली गई। किन्तु कोई आया टिकती ही नहीं। हर कुछ दिन बाद एक नई आया खोजी जाती है।

अभी कल ही पति ने किसी काम से फोन किया तो पुरुष ने फोन नहीं उठाया। बाद में पति ने उनके घर की घंटी बजाई। दरवाजा खोलने पर उसने अपना दुखड़ा बताया कि घर आते से ही पत्नी आया का रोना लेकर बैठ गई। फिर वह बोला, बाद में बात करेंगे और स्नान करने चला गया। फिर कुछ खा पीकर अपनी समस्या के बारे में मेरे पति को बताने आया। उसने बताया कि अब कल या तो उसके माता पिता, या उसके सास ससुर आकर बच्चे को सम्भालेंगे या फिर पत्नी ही मायके या ससुराल चली जाएगी। जब आया मिलेगी तो वापिस आ जाएगी।

उसके जाते ही मेरे पति बोले, 'बेचारा.....(पति)'x फिर उन्होंने उसे सारा किस्सा सुनाया। उनकी सारी सहानुभूति उस युवा पति के साथ थी। वह बोली कि एक अट्ठाइस-तीस वर्ष का हट्टा कट्टा नवयुवक जो पूरा दिन दफ्तर में था, जिसने बच्चे को स्तनपान नहीं कराया, लंगोट नहीं बदले, रोने पर चुप नहीं कराया, जिसने कई बार आया को सोते से नहीं जगाया, बार बार जगाकर आया के क्रोध व काम छोड़ देने की धमकी और अन्त में अपना हिसाब माँगती आया को नहीं झेला, और इस तनाव भरे वातावरण में कम्प्यूटर पर अपना काम भी नहीं निपटाया। दफ्तर से टिप्पणी करने वाले व फेसबुक आदि पर टिपियाने, बतियाने वाले सभी मित्र दफ्तर जाने व वहाँ काम करने की भयंकर थकान के बारे में उससे बेहतर जानते हैं।

पत्नी ने नौ माह गर्भ में सन्तान को पाला पोसा, दफ्तर

भी गई, फिर प्रसव पीड़ा सही, स्तनपान करा रही है, घर से दफ्तर का काम कर रही है, आया, महरी, कुक से काम भी करवा रही है, एक आँख बच्चे पर भी रख रही है। गर्भावस्था, प्रसव व स्तनपान का उसके शरीर व मन पर कुछ तो प्रभाव पड़ता होगा। दो कोशिकाओं से एक 20 या 21 इंच के 3 से 4 किलो के बच्चे को अपने अंदर रचना, विकसित करना शरीर से क्या मूल्य वसूलता होगा, यह कल्पना ही किसी संवेदनशील व्यक्ति को हिला सकती है। किन्तु स्त्री न जाने क्यों वज्र की बनी मानी जाती है।

यदि वह टोके तो... 'क्या तुम मजाक भी नहीं समझ पातीi'

वह बोली, 'न जाने स्त्री के प्रति असंवेदनशीलता यदि टोक दी जाए तो वह मजाक कैसे बन जाती हैi क्यों स्त्री सम्बन्धित बातें मजाक हैंi उसका थकना मजाक, उसकी आवश्यकताएँ मजाक, उसका कष्ट, उसका मोटा होना, पतला होना, गुस्सा होना, अपने अधिकारों को माँगना, सब मजाक।'

मैं सोचती हूँ.....

समाजशास्त्री शायद इस मजाक की क्रिया, उसके पात्रों, पात्रों की समाज, संसाधनों व सत्ता में स्थिति, उनकी श्रेष्ठता या हीनता पर कुछ लिख चुके होंगे। मैं भी इसे समझना चाहती हूँ।

क्यों चुटकुलों में पति ही पत्नी के घर से कुछ दिन के लिए बाहर यानी मायके जाने पर, उसके मरने पर, किसी के साथ चले(भाग) जाने पर, खुश होता हैi क्यों चुटकुले में पत्नी चाहिए विज्ञापन निकलने पर हजारों पति उसके उत्तर में लिखते हैं, मेरी पत्नी ले लो, मेरी पत्नी ले लोi

कुछ दिन मित्र लोग जब स्त्री पुरुष, पति पत्नी वाले चुटकुले पढ़ें तो उनमें पति के स्थान पर पत्नी और पत्नी के स्थान पर पति पढ़कर देखें। तब जब वहाँ किसी पत्नी को पति के न मरने पर बिलखते देखें, दफ्तर में ही पड़े रहते, सहेलियों के साथ भटकते (ताकि पति को झेलना न पड़े) देखें, पड़ोसी के सौन्दर्य पर लट्टू होते देखें तो बताइए कि क्या यह सब सुनना पढ़ना भौंडापन, लगभग अश्लील नहीं लगताi क्या हँसी आती है या उबकाईi

यह भी सोच रही हूँ कि क्या सच में उसका पति मजाक कर रहा था या उसे सच में सहानुभूति युवा पति से थीi क्या उसे युवा पत्नी की थकान का अनुमान नहीं थाi या क्या वह उस विषय में सोचना ही नहीं चाहता थाi क्योंकि पत्नियाँ थकने लगेंगी तो जब भी घर में पैर रखें तो स्वयं को थका मानने व परिवार को ऐसा मनवाने वाले पति का क्या होगाi प्रबंधन गुरु व शिव खेरा जो कई पुस्तकें लिख चुके हैं एशियन मेल की बात करते हैं। वे घर पर सदा थके रहने वाले एशियन मेल की बात करते हैं।

और यह सच है। बचपन से हमें सिखाया जाता था कि पुरुष दफ्तर, कारखाने, दुकान, स्कूल आदि से थका आता है। सहेलियों, मित्रों के पिता जब घर आ जाएँ या उनकी छुट्टी के दिन उनके घर जाने को मना किया जाता था क्योंकि उनके पिता आराम कर रहे होंगे। बाद में स्त्रियों को भी काम पर जाते और वहाँ से वापिस आते देखा। एक बार भी नहीं कहा गया कि मित्र की माँ आराम कर रही होगी। उन्हें दफ्तर, स्कूल से आते ही कपड़े बदल रसोई में घुसते, बच्चों को होमवर्क कराते देखती । पत्नी के साथ ही काम करने वाले पति को पत्नी पानी, चाय, नाश्ता देती और फिर खाना बनाने लगती। उसी दफ्तर से वही काम करके आए पुरुष को आराम चाहिए और स्त्री को नहीं। और फिर भी सुनती हूँ, बेचारा पुरुषx

पुनश्चः सुखद बात यह है कि नई पीढ़ी के बहुत से दम्पत्तियों को मिलकर रसोई सम्भालते देखती हूँ, गर्भवती पत्नी के लिए खाना बनाते, उसका मन प्राण से ध्यान रखते देखती हूँ तो लगता है कि भविष्य शायद बेहतर हो, कि शायद मेरी पीढ़ी की, एक वर्ग की माँओं ने अपने बेटों को अच्छे जीवन मूल्य दिए हैं, कि शायद स्त्रियाँ अब जीवन में आगे बढ़ने का उतना मूल्य न चुकाएँ जितना अब तक चुकाती रही हैं, शायद अब वे भी काम से आकर कभी कभार कह सकें, 'मैं आज बहुत थकी हूँ।'

साभार : घुघूती बासूती ब्लॉग से

थोड़ा अमल करके तो देखें

खुद पर हसें और निरोग रहे।

स्वस्थ मजाक वह है, जो अपने पर किया जाता है। दूसरों पर हंसना रोग है। खुद पर हंसना आरोग्यकारी होता है। अंग्रेजी में इसे सेंस ऑफ ह्यूमर कहते हैं। इसे सकुशल जीवन पार करने की नैया भी कहा जा सकता है। हास्य में अद्‌भुत क्षमता है, सेहत दुरुस्त करने की और ध्यान में डुबोने की भी। वह निश्चित ही शरीर के भीतर के तत्वों और मस्तिष्क की विद्युत-तरंगों में परिवर्तन लाता है। प्रतिभा को जगाता है। आप ज्यादा बुद्धिमान हो जाते हैं। मन के वह हिस्से जो सोए पड़े होते हैं, अनायास जाग उठते हैं। हंसी आपके दिलो दिमाग की गहराइयों में प्रवेश कर जाती है। देखा गया है कि हंसने वाले लोग आत्महत्या नहीं करते, उन्हें दिल का दौरा भी नहीं पड़ता। वे सहज ही मौन के जगत को जान जाते हैं, क्योंकि हंसी के थमते ही अचानक मन भी थम जाता है।

डॉक्टरों ने भी हास्य को बहुत स्वास्थ्यदायी माना है। चिकित्सा विज्ञान ने भी हंसीं को मनुष्य को प्रकृति से भेंट में मिली सबसे असरदार औषधि के रूप में माना है। यदि बीमारी के दौरान हंस सकें, तो आप जल्दी ही स्वस्थ हो जाएंगे और अगर स्वस्थ रहकर भी नहीं हंस पाए तो शीघ्र ही आपका स्वास्थ्य गिरने लगेगा और बीमारी आपको घेर लेगी।

हास्य आंतरिक स्रोत से शक्ति को जगाकर बाह्य (बाहरी) तल तक ले आता है। फिर हंसी के पीछे छाया की तरह एक ऊर्जा की धारा प्रवाहित होती है। डॉक्टर यहां तक कहते हैं कि जो आदमी सात दिन में एक बार भी नहीं हंसता वह मनोरोग से ग्रसित हो सकता है। मनुष्य एकमात्र विवेकशील प्राणी है, जो खुद पर भी हंस सकता है और निरोग रहता है।

क्रोध/गुस्सा

- जब आप क्रोध में हो तो दस बार सोचकर बोलो
- जब आप अत्याधिक क्रोध में हो तो तब यह विचार करो कि मानव जीवन कितना क्षणिक है।
- क्रोधी मनुष्य को एक बार फिर अपने ऊपर गुस्सा आता है, जब उसे सब कुछ समझ में आता है।
- गुस्से से वही व्यक्ति बचा रह सकता है जो ध्यान रखता है कि ईश्वर हर समय उसे देख रहा है।
- क्रोध मूर्खता से आरम्भ होता है और पश्चाताप पर समाप्त होता है।
- क्रोध सबसे सामान्य और सबके भीतर पाई जानी वाली भावना है।

आशीर्वाद

खुशी दो प्रकार की होती है, एक प्राप्ति की और दूसरी देने की। हम बचपन में प्राप्ति की खुशी का अनुभव करते हैं यदि आप बच्चों को कुछ देते हैं, तो हमेशा लेने के लिए तैयार होते हैं। लेकिन, जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम एक खुशी का अनुभव करते हैं, वह है देने में आनन्द। उदाहरण के लिए, घर में मां दादी हैं जब दादी घर में अकेली होती है तो वह खुद के लिए विभिन्न प्रकार की सब्जियां और व्यंजन तैयार नहीं करती, लेकिन जब बच्चे घर में आते हैं या मेहमान आते हैं तो वह नाना प्रकार के पकवान परोसती हैं, तो देने में वह एक प्रकार की खुशी अनुभव करती है जो एक परिपक्व खुशी है। इससे मन संतुष्ट होता है, जितना अधिक संतुष्ट मन उतनी अधिक प्रगति, एक संतुष्ट व्यक्ति जब दूसरों को आशीर्वाद देता है तो वह आशीर्वाद बहुत ही प्रभावी होता है, कुछ लोग उदारता से आशीर्वाद देते हैं, खुले दिल से दिया हुआ आशीर्वाद कभी विफल नहीं होता उससे आशीर्वाद देने और लेने वाली दोनों को संतुष्टि प्राप्त करते हैं।

जीवन

- जीवन एक चुनौती है, सामना करिए
- जीवन एक साहसिक कार्य है, हिम्मत रखिए।
- जीवन एक कर्त्तव्य है, पूरा करिए
- जीवन एक खेल है आराम से खेलिए
- जीवन एक रहस्य है, सुलझाइए।
- जीवन एक संगीत है, आनन्द उठाइए।
- जीवन एक कला है, कलाकार बनिए।
- जीवन एक चरम सुख है, स्वाद चखिए।
- जीवन एक सपना है, साकार करिए।
- जीवन एक प्रतिज्ञा है, निभाइए।
- जीवन एक कसौटी है, खरा उतरिए।
- जीवन एक बाधा है, उसे पार करिए।
- जीवन एक किताब है, अच्छी तरह पढ़िए।
- जीवन एक पहेली है, उसे सुलझाइए।
- जीवन एक नाव है, पार उतरिए।
- जीवन एक कला है, उसमें रंग भरिए।
- जीवन अनमोल है, उसे व्यर्थ न गवांए।
- जीवन एक उधार है, उसे चुकाइए।

श्री पृथ्वीराज मेहता, तकनीकी अधिकारी (सेवानिवृत्त)
लक्ष्मी नगर, दिल्ली - 110092

हिन्दू धर्म के प्रमुख तीर्थ

मोनिका वर्मा

- हिन्दू धर्म के तीर्थों की संख्या अगणित है। अनेक भक्तों ने अपनी भक्ति - भावुकता की पूर्ति हेतु, देवताओं की प्रसन्नता हेतु, मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु, स्वमुक्ति हेतु, सद्गति की प्राप्ति हेतु, लोक ख्याति हेतु मन्दिरों का निर्माण कराया।
- हिन्दू धर्म में अनेकता में एकता देखने की दृष्टि का जो व्यक्तिक्रम है वह देवताओं की प्रतिभाओं की भिन्नता एवं मन्दिरों की बहुरूपता में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।
- लोक मान्यतानुसार चारों धाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग, द्वादशशक्तिपीठ, सप्तपुरियां, सप्तधाराएं प्रख्यात तीर्थ स्थल हैं। त्रिपुरा रहस्य में वर्णित द्वादश शक्तिपीठों का विशेष महत्व है। हिन्दू धर्म के प्रमुख तीर्थों का उल्लेख निम्न प्रकार है-

(क) चारों धाम

1. बद्रीनाथ
2. जगन्नाथपुरी
3. रामेश्वरम
4. द्वारिका

(ख) सप्तपूरियां

1. काशी
2. रांची
3. मायापुरी (हरिद्वार)
4. अयोध्या
5. द्वारावती (द्वारिका)
6. मथुरा
7. अवन्तिका (उज्जैन)

(ग) सप्तपुण्य धाराएं

1. गंगा
2. यमुना
3. गोदावरी
4. सरस्वती
5. कावेरी
6. नर्मदा
7. सिन्धु

(घ) सप्तक्षेत्र

1. कुरूक्षेत्र (पंजाब)

2. हरिद्वार क्षेत्र (सोनपुर-बिहार)
3. प्रमास क्षेत्र (वीरावल सौराष्ट्र)
4. रेणुका क्षेत्र (मथुरा)
5. मृगु क्षेत्र (भरुंच)
6. पुरूषोत्तम क्षेत्र (जगन्नाथपुरी)
7. सूकर क्षेत्र (सोरो, उत्तरप्रदेश)

(ड.) द्वादश ज्योतिर्लिंग

1. सोमनाथम (गुजरात-सौराष्ट्र)
2. मल्लिकार्जुनम (श्रीशैलम-आन्ध्रप्रदेश)
3. महाकालेश्वरम (उज्जैन-मध्यप्रदेश)
4. ओंकारेश्वर (ममलेश्वरम-मध्यप्रदेश)
5. बैद्यनाथ (जसीडीह-बिहार)
6. भीमशंकर (मुम्बई-महाराष्ट्र)
7. सेतुबंध (रामेश्वरम-चैन्ने)
8. नागेश्वरम (द्वारिका-सौराष्ट्र)
9. विश्वेश्वरम (वाराणसी-उत्तरप्रदेश)
10. त्रयम्बकेश्वर (नासिक-महाराष्ट्र)
11. केदारनाथ (उत्तराखंड)
12. घृष्णेश्वरम (मनमांड-महाराष्ट्र)

(च) देवीशक्तिपीठः त्रिपुरा रहस्य के महात्मय खण्ड अध्याय 48 श्लोक 71-75 में द्वादश देवी शक्तिपीठों का वर्णन किया गया है, जो निम्नलिखित हैः-

1. कामाक्षी (कांचीपुरम)
2. भ्रामरी (मलयागिरी)
3. कुमारी (केरल-मालावार)
4. अम्बानी (आनर्त-गुजरात)
5. महालक्ष्मी (करबीर-कोल्हापुर)
6. कालिका (उज्जैन-मालवा)
7. ललिता (प्रयाग-उत्तरप्रदेश)
8. विन्ध्यवासिनी (विन्ध्या पर्वत-उत्तरप्रदेश)
9. विशालाक्षी (मीरघाट-वाराणसी)
10. मंगलावती (प्रयाग-बिहार)
11. सुन्दरी (बंगाल)
12. गुहयकेश्वरी (नेपाल)

इसके अतिरिक्त जम्मू-कश्मीर में वैष्णव देवी का प्रख्यात मंदिर स्थित है। साथ ही जालन्धर में प्रसिद्ध ज्वालादेवी मन्दिर (कहा जाता है कि यहां सती की जिहवा गिरी थी) है।

(घ) कुरूक्षेत्र - सूर्यक्षेत्र में वामन पुराण के अनुसार सात उपक्षेत्र हैः-

1. काग्यवन
2. अदितिवन
3. फलकीतन
4. व्यासवन
5. सूर्यवन
6. पशुवन
7. शीतवन

इस प्रदेश में सात नदियां बहती थी, जो इस प्रकार हैः-

1. सरस्वती
2. वैतरणी
3. आपस्त्रंता
4. मधुसत्रता
5. कोशिकी
6. द्रषद्वृती
7. हिरण्यवती

इसके अतिरिक्त ब्रजभूमि मथुरा 84 कोसों में विस्तृत है, नेमिषारण्य में शोनकादि 88 हजार ऋषियों एवं सूतजी ने अनेकों पौराणिक आख्यानों का उल्लेख किया गया है।

हमारे यहां इलाहाबाद में प्रयाग को त्रिवेणी कहा गया है। बौद्ध-गया में पितरों के पिण्डदान का प्रसिद्ध गयातीर्थ है, यहीं पर भगवान बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ था।

इसी प्रकार अयोध्या मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मस्थली है यहां पर पतितपावनी सरयू नदी बहती है। जगत प्रसिद्ध काशी भगवान शंकर के त्रिशूल पर अवस्थित अविमुक्त क्षेत्र है। यह मोक्ष प्रदायिनी नगरी अस्सी एवं वरुणा के मध्य स्थित होने के कारण वाराणसी नाम से प्रसिद्ध है। यहां स्थित सारनाथ बौद्ध अनुयायियों का प्रमुख तीर्थस्थल है क्योंकि यहीं भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश दिया था।

इन सबके अतिरिक्त कुछ सुप्रसिद्ध तीर्थस्थल निम्नलिखित है:-

1. उड़ीसा का कोणार्क सूर्य मन्दिर
2. असम का कामाख्या शाक्तिपीठ
3. चित्रकूट
4. मालया पुष्कर
5. नासिक
6. उज्जैन
7. अमरकंटक
8. गंगासागर
9. पारसनाथ
10. लुम्बिनी
11. कुशीनगर
12. अमृतसर
13. एकनाथजी
14. द्वारका
15. सोमनाथ
16. केदारेश्वर
17. तिरुपति बालाजी
18. पक्षीतीर्थ
19. जगन्नाथपुरी
20. रामेश्वरम
21. कांची
22. हरिद्वार आदि प्रमुख हिन्दू तीर्थ स्थल हैं, जिनका अत्याधिक पौराणिक महत्व है।

सुश्री मोनिका वर्मा, तकनीकी सहायक
आईएसए विभाग, एसवी मार्ग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

मौन

घर के कोनों से टकराकर
सहमती है लौट जाती है
आवाज़ निःशब्द हो
अपने में सिमट जाती है
किसकी लगी नज़र बांगबां को
कली न कोई खिल पाती है,
इस हवेली में रहते
अब मौन और उदासी हैं।
शोर इतना था कभी
मोहब्बत से बने इस महल में,
हर आवाज़ पहले कहने
और सुने जाने की जिदें करती थीं
कोई प्रतिभागी न
कोई होड़ अब बाकी है
इस हवेली में रहते
अब मौन और उदासी हैं।
जोश जब तक जवां था
उसके दिल में भी उठते थे अरमान कई,
मूंगफली के दाने हथेली पे देख
चमक उठीं उसकी आंखों में कितनी आशाएं
मुस्कुराकर देखा बाकी मुसाफिरों की तरफ ज्यों ही
समेट ली उसने खुद ब खुद अपनी बांहें
काफूर हो गई पलभर में वो चमक आंखों की
ज्यों ही ज़माने को उसने अपनी मुट्ठी दिखानी
चाही
था कुसूर उसका
वो महज एक मजदूर की बेटी थी।

क्यों लकीरें खींच दी गईं बचपन में
क्यों दो पाटों में बंट गया बचपन
इस पार खुशियों की लंबी कतारें हैं
उस पार ख्वाहिशों के हैं बीहड़ वन।
बचपन तो है अनभिज्ञ
केवल मुस्कुराना चाहता है
खोल पलकें उनमें
सपने संजोना चाहता है
क्या संजीदगी कहीं खो गई है हमसे ही कहीं
जो एक मासूम मुस्कुराहट भी न लौटा पाते हैं।
ज़िन्दगी की तस्वीर कैसे
खुद ही तब्दील हो गई
साथ छोड़ देने की
जैसे सभी ने ठानी है
इस हवेली में रहते
अब मौन और उदासी हैं।
सांझ बेला में कोई ढांढस नहीं
वो निरा एकाकी है
आह भी उसकी
कराहने से अब घबराती है
सजा ए उम्र कुछ बीत चली
और कुछ बितानी है
इस हवेली में रहते
अब मौन और उदासी हैं।

श्रीमती पूनम तिवारी, वरिष्ठ निजी सचिव
राज्यसभा सचिवालय, संसदीय सौध
नई दिल्ली - 110 001

मां की ए, बी, सी

ए	-	अम्बे
बी	-	भवानी
सी	-	चामुंडा
डी	-	दुर्गा
ई	-	एकरूपी
एफ	-	फरसाधारिणी
जी	-	गायत्री
एच	-	हिंगलाज
आई	-	इंद्राणी
जे	-	जगदम्बा
के	-	काली
एल	-	लक्ष्मी
एम	-	महामाया
एन	-	नारायणी
ओ	-	ओंकारिणी
पी	-	पद्मा
क्यू	-	कात्यायिनी
आर	-	रत्नप्रिया
एस	-	शीतला
टी	-	त्रिपुर सुंदरी
यू	-	उमा
वी	-	वैष्णवी
डब्ल्यू	-	वाराही
वाई	-	यति
जेड	-	ग्यान

पानी न बना पानी

आंखों में पड़े छाले, छालों से बहा पानी
इस दौर के सहरा में, ढूंढे न मिला पानी।
दुनियां ने कसौटी पे, ताउम्र कसा पानी
बनवास से लौटा तो शोलों पे चला पानी।
पर्वत के जबां फूटी, इक शोर उठा पानी
मंजर पे बना मंजर, पानी पे गिरा पानी
बेआब न थे इतने हम दौरे-गुलामी में
बतलाए को ज्ञानी, किस देश गया पानी
बन्दे से खुदा बनते देखा है उन्हें हमने
जो लोग कराते हैं पानी से जुदा पानी
मन्दिर हो कि मस्जिद हो गिरजा हो कि गुरुद्वारा
आजाद रहे जब तक लगता है भला पानी
फूलों से लगे लेने अब काम बमों का भी
इस दर्जा सियासत की आंखों का मरा पानी
सैलाब ने हर घर की तस्वीर बदल डाली
रुकने को किसी घर में पल भर न रुका पानी
तन भी न बचा कोरा मन भी न बचा कोरा
इस बार के सावन में क्या जमके गिरा पानी
हम जब भी मिले उससे हर बार हुए ताजा
बहते हुए दरिया का हर पल है नया पानी
बस खून के प्यासे हैं ये खून के रिश्ते भी
क्या इनको गरज इससे कभ खून हुआ पानी
घर छोड़ के निकले तो निर्वाण मिले हमको
कब धूप को पहने बिन बनता है हवा पानी
हर एक सिकन्दर का अंजाम यही देखा
मिट्टी में मिली मिट्टी पानी में मिला पानी

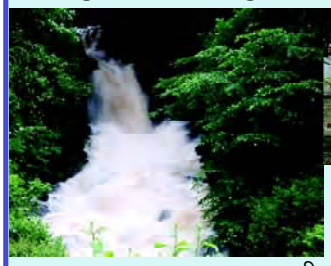

श्री रघुबीर सिंह, कैशियर
बिल एवं रोकड़ अनुभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

नई राह

आज लड़की को ना समझो कमजोर,
वो तो है बड़ी पुरजोर।
हर क्षेत्र में आगे आई,
चाहे कितनी भी आए कठिनाई।
बेटी को आगे बढ़ते देख,
मां भी है सकते में आई।
कितनी मुश्किल से उसे करा पाई पढ़ाई,
जब बेटा पढ़ने में निकम्मा निकला।
तब बेटी ने प्रशंसा दिलाई, पर
नहीं है आसान आगे सबके लिये बेटी को पढ़ा पाना।
तभी तो सरकार ने हैं योजनाएं चलाई,
और बेटियों ने अपने घरवालों को नई राह दिखाई।

सुश्री मंजू तिवारी, कम्प्यूटर ऑपरेटर (कॉंट्रैक्चुअल वर्कर), आईटी विभाग, सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

निगाहें बचाकर जो चलते हैं हमसे

निगाहें बचाकर जो चलते हैं हमसे
कभी उनको मोहब्बत हुई थी हमसे
जो महबूब से अजनबी हो गए हैं
कभी उनको मोहब्बत हुई थी हमसे
तुझे खोना भी मुश्किल है, तुझे पाना भी है मुश्किल
ज़रा सी बात पर आंखें भिगो के बैठ जाते हो
तुझे अब अपने दिल का हाल बताना भी है मुश्किल
उदासी तेरे चेहरे पे गंवारा भी नहीं लेकिन
तेरी खातिर सितारे तोड़कर लाना भी है मुश्किल
यहां लोगों ने खुद पे परदे इतने डाल हैं रखे
किसके दिल में क्या है नजर आना भी है मुश्किल
तुझे जिंदगी भर याद रखने की कसम तो नहीं ली
पर एक पल के लिए तुझे भुलाना भी है मुश्किल

श्रीमती प्रवीन अद्या, सहायक ग्रेड-1, बिक्री एवं विपणन विभाग, सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

साभार

देखकर सियासी रंग
अन्ना ने जो दम भरा था
वो टीम अन्ना हो गई भंग
समझकर राजनीति का हाल
चलेंगे अपनी चाल
रामदेव ने किया अभियान शुरू
वो जिन्हें कहते हैं योगगुरू
लगा देंगें अपना तन-मन-धन
वापिस लाएंगे विदेश से काला धन
आजादी का जश्न भी मनाओ
परन्तु रामलीला मैदान भी आओ
पैंसठ साल हुए मिले आजादी
जनता को करना है जागरूक बाकी
मिल-जुलकर मनाओ पंद्रह अगस्त
जाना चाहिए लालकिला भी
रहो जागरूक
ना हो जाना मस्त

सुश्री मंजू तिवारी, कम्प्यूटर ऑपरेटर (कॉट्रैक्चुअल वर्कर)
आईटी विभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

सुरक्षित हो जंगल

कुछ लोगों ने बनाया समूह
मुहिम चलाई आज बचाओ बाघ
आते यहां पर्यटक विदेशी
देखने आते पशु-पक्षी
मगर पहले बचाओ जंगल
शिकारी मचाते जहां दंगल
तस्करी कर कमाना चाहते धन
यह नहीं सोचते कि पहले सुरक्षित हो वन
आएं देशी-विदेशी देखें तरह-तरह के पशु
शिकारी ना मचाए दंगल
सुरक्षित हों जंगल

श्री लक्ष्मण, कम्प्यूटर ऑपरेटर (कॉट्रैक्चुअल वर्कर)
बिक्री एवं विपणन विभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

एक बेटी का सपना

छोटा सा घर है अपना,
बीच गांव में रहती हूं,
मैं हूँ सबकी प्यारी बेटी
बहुत शरारत करती हूं।
सुबह-सबेरे दादा के संग
गाँव घूमकर आती हूं,
बाग-बगीचों और खेतों में
घण्टों सबसे बतियाती हूं।।

सुबह-सबेरे चिड़िया रानी
फुदक-फुदक कर आती है,
छोटे-छोटे दाने चुगकर
फुर्र-फुर्र वो उड़ जाती है।
कोयल रानी कूं-कूं करके
मुझे बहुत उकसाती है,
जब कूं-कूं मैं भी करती
बड़ी जोर चिल्लाती है।।

पंख अगर मुझको होते
दूर आसमान में उड़ जाती मैं,
अम्मा के हाथों ना खाती
अपना दाना खुद लाती मैं।
दूर-दूर मैं सैर को जाती
सांझ समय घर को आती,
गांव-गांव के हाल देखकर
दादा को फिर बतलाती।।

छोटा सा गांव है अपना
बाहर दुनिया कैसी हैं¡
सुनी कहानियां दादाजी से
दुनिया तो जादू जैसी है।
अहाx दादा ने दुनिया देखी है
उनको तो सब मालूम है,
मैं कहती उड़ जाऊंगी बाहर
झट हंसकर कहते मासूम है।।

कहती दुनिया की सैर करा दो
दादा मुझको दुनिया दिखला दो,
जिद कर-करके रोती रहती

चाहे मुझको पंख लगवा दो।

ठान लिया एक दिन मन में
मुझको बाहर जाना है,
हठ करके बैठी मैं गुमसुम
खुद अपना खाना लाना है।।

सुबह-सुबह होकर तैयार
दादाजी संग निकली बाहर,
बड़े उत्साह उमंग लिए
चली अपने गांव से बाहर।
खेतों संग पैदल चलकर
थक कर मैं हुई चूर,
नजर न आई दुनिया कोई
अपना गाँव भी हुआ दूर।।

थोड़ी देर में
दूर एक गांव दिखा,
मैं चहकी, चिल्लाई दादाx
देखो वह है दुनिया
दादा हँसे थोड़ा मुस्काए
प्यार से थपकी देकर सहलाये,
फिर बोले हँसकर
हाँx बेटी वही है दुनिया।।

बीच गांव में जब हम पहुंचे
दादा किसी घर में जा पहुंचे
बाहर खड़ी रही, मैं बिदकी
चिल्लाई- कहां है दुनिया¡
दादा बोले आओx अन्दर तो आओx
यही है तेरे सपनों की दुनिया।।

अन्दर झांका देखा मैंने
वहाँ पुस्तकों का अम्बार,
दादा बोले यही है दुनिया
यही ज्ञान का भी भण्डार।
रंग-बिरंगे भांति-भांति के
पुस्तकों से समझी ना आशय,
दादा बोले यहीं पढ़ो और देखो दुनिया
यह है अपना पुस्तकालय।।

अहा किताबों की बातें
उनमें वर्णित अद्भुत संसार,
पढ़-पढ़ कर मैंने जाना
बड़ा निराला है संसार।
ज्ञान बरस रहा था मुझपर
जैसे भादों की फुहार,
उड़ने लगी मुक्त गगन में मैं
लेकर मानों पंख उधार।।
अब रोज-रोज मैं आती हूं
ढेरों बातें पढ़ती हूं,
सोते-जगते सपनों को
अपने शब्दों में गढ़ती हूं।
काश एक दुनिया अपनी होती
होता गाँव में पुस्तकालय,
हम बच्चे सब मिलकर पढ़ते
जब होता अपना ज्ञानालय।।
मैं अपना खाना घर में खाती
एक-एक पैसा रखती जाती,
मेरी गुल्लक हो रही भारी
यह है मेरे सपनों की थाती।
जो भी पुस्तक दादाजी लाते
मैं उनको सहेजकर रखती हूं,
कोई पूछे क्या लोगी उपहार
मैं पुस्तक-पुस्तक रटती हूं।।
अब मैं चिड़ियों संग उठती हूं
मेहनत बहुत ही करती हूं,
तिनका-तिनका जोड़ रही हूं
रोज अपना सपना बुनती हूं।
एक दिन ढेरों पुस्तक होगी
एक पुस्तकालय बनवाऊंगी,
अपने गाँव में है एक दुनिया
सबसे कहकर मैं इठलाऊंगी...।।

डॉ. अमिय बिन्दु गुप्ता, अनुभाग अधिकारी
भण्डार एवं क्रय,
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

जीवन-सन्देश

माता-पिता की सेवा करना
उन पर कोई अहसान नहीं।
माता-पिता के चरणों से बढ़कर,
इससे बड़ा कोई धाम नहीं।
चरणों को छू लेने भर से,
चार धाम तीरथ हो जाये।

दुख सहना
इनकी खातिर,
फर्ज है कोई
अहसान नहीं।
कर्ज है इनका तेरे
सर पे
भिक्षा या कोई
दान नहीं।
माता-पिता का प्यार ही सम्पत्ति है,
जिसका कोई दाम नहीं।

हिन्दी-हिन्दुस्तान

हिन्दी अपनी वसुन्धरा है, हिन्दी अपनी शान है
एक सूत्र में बांधे सबको, हिन्दी बड़ी महान है
हिन्दी की महिमा है न्यारी हिन्दी हिन्दुस्तान है।
हिन्दी भारत की टोपी है, हिन्दी अपनी जान है
हिन्दी अपनी राग-रागिनी, हिन्दी अपनी तान है।
हिन्दी की महिमा है, न्यारी हिन्दु-हिन्दुस्तान है।
हिन्दी अपनी हंसी-खुशी है, मान-शान-मुस्कान है।
हिन्दी के हैं हम रक्षक, हिन्दी ईश्वर का वरदान है।
हिन्दी की महिमा है न्यारी, हिन्दी-हिन्दुस्तान है।

श्री वीर सिंह, सहायक-ग्रेड-।। (सेवानिवृत्त)
भंडार विभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली

चाँद का गर्व

आधी रात और दो-तिहाई जीवन
बीत चुकने के बाद
कहा चाँद ने मुँह घुमाकर,
बहुत सारे लोगों ने उपमाएं दी हैं मेरी
हेरोडोटस से लेकर मुग़ल सम्राटों ने,
यीट्स, ग़ालिब, शेली और होमर ने;
कालिदास की विरहिणी के मन में भी
किया है लम्बा भ्रमण मैंने;
ठण्डी, चुप और लम्बी रातों में
अनेक युगलों ने मुझे जगाया,
डाली खलल बार-बार
पूर्णिमा से अमावस की मेरी परिक्रमा में;
फूलों, झीलों और उतरते झरनों को
अपने शब्दों में बयां किया लोगों ने
मेरे साथ।
कुछ की प्रेयसियां मुझसे सुन्दर और शीतल रहीं
कुछ मुझसे अच्छी, निष्कलंक

काव्य-पंक्तियों की चमक में आया हूं अक्सर
तिकोने प्रिज़्म से गुज़री रोशनी का
सुन्दर दौड़ता रथ लेकर;
अश्व जुते हैं जिसमें
हड़प्पा और इंका से चली आ रही
लम्बी ऐतिहासिक परम्परा के,
दुःख भरी आख्यायिकाओं के
चोटिल शब्दों में उतारा है मुझे
सभी महादेशों के सभी कथाकारों ने;
रिश्ता नापा है खगोलविदों ने
मेरी गति, परिक्रमा और घूर्णन के बीच;
सिन्दबाद की कहानियों और मार्को पोलो की
नौका-यात्राओं में मेरा ज़िक्र पसरा है...
विन्ध्य, अरावली और यूराल के
बनते-मिटते शिखरों को निहारा मेरी दृष्टि ने।

समय की साइकिल खटर-खटर
चलती रही, उपमाओं की बीहड़ सड़कों पर;
और टंगा रहा हूं मैं
साइकिल के नाम खुदे हैण्डल में
हरी सब्ज़ियों के झोले-सा...
पर स्वयं पर इतना गर्व नहीं हुआ कभी
देखती है जब वह अपने लम्बे लाल झुमके के
चमकते नगों में मुझे
भूकम्प की भेंट चढ़े अपने परिवार की
खोई तस्वीरों के बहाने।

श्री प्रांजल धर, सहायक-ग्रेड-I
स्थापना अनुभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

याद रखो

प्यार करो	भगवान से
नफरत करो	बेईमान से
विश्वास करो	ईमान और धर्म से
मदद करो	गरीब और दीन-दुखियों की
पसन्द करो	सच्चाई को
याद करो	बहादुरी को
सार्थक करो	लक्ष्य को
दान करो	दिखाकर नहीं, छिपाकर करो
पूजा करो	गुरु और माता-पिता की
जो बोलो	मीठा, अच्छा बोलो
सर्वोत्तम दिन	आज
सबस बड़ा पाप	बुराई
सबसे खतरनाक वस्तु	घृणा
सबसे उपयुक्त समय	अभी
सबसे विश्वसनीय मित्र	अपना हाथ
सबसे बड़ी भूल	समय की बर्बादी
सबसे बड़ी बाधा	अधिक बोलना
सबसे बड़ी भावना	ईर्ष्या
सबसे अच्छा काम	सेवा

भारत

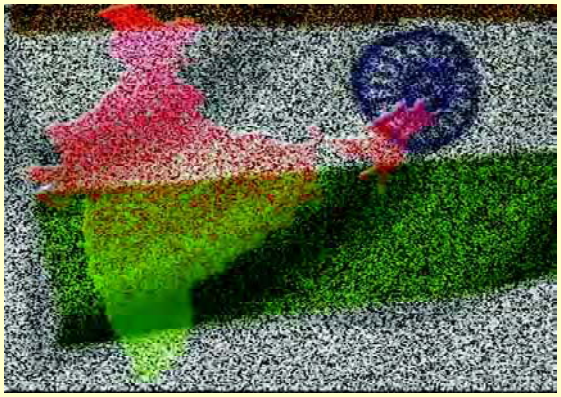

एक हमारी मिट्टी, एक हमारी आन
हम हैं बच्चे जिस देश का नाम है हिन्दुस्तान
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब हैं भाई-भाई
लेकिन झुकने में सबकी घट जाती है शान।

मां-बाप, भाई-बहन सब रिश्ते हैं बेईमानी
नहीं है प्यार किसी के दिल में करें सब मनमानी
हर कोई है चोर यहां पर करें जो बेईमानी
आम जनता को जिससे होती है परेशानी।

इतिहास साक्षी है सच्चाई थी नेताओं के पास
अब तो ईमानदारी का रहा नहीं एहसास
कर्त्तव्य हुआ करता था कभी आत्मविश्वास
काम नहीं समझते आज के नेता खास।

न्याय से लड़ते हैं, अन्यायी हैं सारे
घूस से भरते पेट, करते ऊपरी कमाई सारे
लालू, अम्मा और वीरप्पन हैं इन सबके प्यारे
चाहें, छुरियां कांटों से ये करते वारे न्यारे।

श्रीमती वीना ठक्कर, सहायक ग्रेड-।
आर एंड आई अनुभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

जीवन के दौर

खिले हैं जो फूल, सब बिखर जाएंगे,
सब दौर हैं, जिन्दगी के गुजर जाएंगे।

होता है कोई खुश, यदि अपने शबाब पर,
जान लें कि जिन्दगी, है सिर्फ ख्वाब भर।
टूटेगा जब ये ख्वाब, सच से सामना होगा,
सच की हर कड़वाहट को मानना होगा।
रिश्तों के सारे बर्फ, ये पिघल जाएंगे,
बन के आंसू, आंख से निकल जाएंगे।

खिले हैं जो फूल, सब बिखर जाएंगे,
सब दौर हैं, जिन्दगी के गुजर जाएंगे।

कितना भी कोई चाहे, साथ जायेगा नहीं,
जाने वाला लौट कर, फिर आएगा नहीं।
जाएगी सिर्फ साथ, भलाई-बुराईयां,
समय के साथ, धुंधली होंगीं परछाईयां।
जो जिए अपने लिए, वो भुला जाएंगे,
दूसरों को चाहने वाले याद आएंगे।

खिले हैं जो फूल, सब बिखर जाएंगे,
सब दौर हैं, जिन्दगी के गुजर जाएंगे।

हर्षिता नय्यर सुपुत्री श्रीमती कृष्णा
लोकप्रिय विज्ञान विभाग (राजभाषा)
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

सुविचार

- हमें अपसेट हमारी सोच करती है, दूसरा शख्स नहीं।
- आप ऊंचाइयों को पा सकते हैं, अगर अपना काम करते हुए इस बात को नजरअंदाज कर दें कि इसकी वाहवाही किसे मिलेगी।
- यह बात मायने नहीं रखती कि आप कितना करते हैं, बल्कि लोग इसी बात को ध्यान में रखते हैं कि वह काम आप कितने लगाव और प्यार से करते हैं।
- कहीं दूर जा अगरबतियां जलाकर पूजा करने से बेहतर है कि अपने आसपास वालों से रहमदिली से पेश आएं।
- आप या तो इस बात पर सिर धुन सकते हैं कि गुलाब में कांटे हैं या इस पर खुश हो सकते हैं कि कांटों में भी गुलाब खिलते हैं।
- दिमाग पैराशूट जैसे होते हैं। तभी काम करते हैं, जब वे खुले हों।
- जब एक दरवाजा बंद होता है तो दूसरा खुल भी जाता है। लेकिन हम बंद दरवाजे पर इतनी देर सिर टिकाए रहते है कि बगल में खुला दूसरा दरवाजा हमें दिखता तक नहीं।
- जिन्दगी का कोई लम्हा मामूली नहीं होता, हर पल वह हमारे लिए कुछ-न-कुछ नया पेश करता रहता है।
- महान काम करने के लिए अक्ल से ज्यादा दिलेरी की जरूरत होती है।
- अमीर वह नहीं है, जिसके पास दौलत सबसे ज्यादा है, बल्कि वह है, जिसे और कुछ नहीं चाहिए।
- हमें अपना हर काम इस तरह करना चाहिए, जैसे हम सौ साल तक जीएंगे, पर ईश्वर से रोजाना प्रार्थना ऐसे करनी चाहिए, जैसे कल हमारी जिन्दगी का आखिरी दिन हो।

श्रीमती कृष्णा, वरिष्ठ आशुलिपिक
लोकप्रिय विज्ञान विभाग (राजभाषा)
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

जब मैं छोटा बच्चा था

- मैं पढ़ने की बजाय किताबों में महत्वपूर्ण लाइनों को हाइलाइट करने में ज्यादा वक्त लगाता था।
- मुझे लगता था कि स्वेटर को कमर पर बांधना ज्यादा कूल है।
- मैं दरवाजे के पीछे छुप जाता था ताकि पापा ऑफिस से घर लौटें तो मैं उन्हें डरा सकूं।
- मैं दूसरों के घरों की बेल बजाता था और भाग खड़ा होता था।
- मैं कार में सोने का नाटक करता था ताकि पापा मुझे गोद में उठाकर कमरे तक ले जाएं।
- मुझे लगता था कि सूरज और चांद उस वक्त मेरा पीछा कर रहे होते थे जब मैं चलती कार में होता था।
- मुझे लगता था कि टेलीविजन पर दिखने वाले लोग वाकई उसके अन्दर होते थे।
- मैं सोफे पर सोता था और जादुई तरीके से बेड के ऊपर पाया जाता था।
- मुझे लगता था कि अगर गलती से मैंने तरबूज के साथ बीज खा लिया तो मेरे पेट में पौधा उग जाएगा।

मास्टर तरूण मौर्या सुपुत्र श्री रघुबीर सिंह, कैशियर
बिल एवं रोकड़ अनुभाग, सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

आज का दौर

आज के इस दौर ने
हर शै को महंगा कर दिया
कीमतें ऐसी बढ़ी कि
इंसां को सस्ता कर दिया
हम तो समझे थे कि यादों
का सफर अब थम गया
रात एक तस्वीर ने यादों को
ताजा कर दिया
आपको शायद यह ख्वाहिश थी
कि हो मेरी शिकस्त
लीजिए खुद को हरा कर
आपका अरमान पूरा कर दिया।

श्रीमती उषा रानी, हैल्पर,
वित्त एवं लेखा अनुभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली

सुन मेरी बहना

राखी है भाइयों का गहना
राखी बांधकर सजाते कलाई
मुंह मीठा करवाने के लिए खिलाते मिठाई
मां बनाती तरह-तरह के पकवान
बहन को बना देते मेहमान
ऐसे हैं हमारे देश के त्यौहार
भाई, बहन को देता सत्कार
जिनकी नहीं बहन
राखी का त्यौहार नहीं होता सहन
सीख छिपी है इसमें
संजोते है संस्कार
ऐसे त्यौहार
लड़की का ना हो तिरस्कार

श्रीमती प्रोमिला विज, सहायक-I
बिक्री एवं विपणन विभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

ओलम्पिक और भारत

लंदन ओलम्पिक ने भारतीय खेलों को नया आकाश दे दिया है। पिछले बीजिंग ओलंपिक में तीन पदकों के बाद लंदन में 6 पदकों ने उन आशंकाओं को दूर कर दिया कि ओलंपिक में पदक जीतने की कमी थी।

ओलंपिक में पदक जीतने में विदेशी ट्रेनिंग, अच्छे कोच व उपकरण, उचित योजना, बड़ी सोच तथा आत्मविश्वास आदि सहायक रहे हैं।

लंदन ओलंपिक में 205 देशों के 10500 खिलाड़ियों ने भाग लिया। 27 जुलाई से 12 अगस्त 2012 तक यह खेल हुए।

क. 9.3 बिलियन पाउंड - 8 खरब, 6 अरब 25 करोड़ रुपए का लगभग का बजट था।

ख. 2.1 बिलियन पाउंड रेवेन्यू विदेशों पर्यटकों से में आया। 10 बिलियन पाउंड रेवेन्यू ओलंपिक खेला से आया।

ग. 962 गोल्ड, सिल्वर, ब्रांज पदकों के लिए हुआ मुकाबला, 26 प्रकार की प्रतियोगिताएं हुई

घ. ओलंपिक के सभी मेडल (पदक) 7 एम.एम. मोटाई, 85 एम.एम. व्यास तथा 400 ग्राम वजन के थे।

ड. 81 भारतीय खिलाड़ियों ने भाग लिया।

2012 लंदन ओलंपिक के पांच सुपर स्टार रहे।

1. उसैन बोल्ट, धावक (जमैका) ने 100 मीटर तथा 200 मीटर गोल्ड पदक जीते।

2. माइकल फेलप, तैराक (अमेरिका) चार गोल्ड तथा दो सिल्वर पदक जीते। 2004 एथेंस, 2008 बीजिंग, 2012 लंदन ओलंपिक कुल 18 गोल्ड तथा चार सिल्वर सहित 22 पदक जीतकर वर्ल्ड रिकॉर्ड है।

3. तिरुनेश दिबाबा, धावक (इथोपिया) की लम्बी दूरी के इस धावक ने 10 हजार मीटर दौड़ में ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता तथा 5 हजार मीटर में रजत पदक जीता। 2011 में नववर्ष पर 16 महीने बिस्तर पर बीमार रहकर भी कारनामा किया।

4. सेरेना विलियम्स टेनिस (अमेरिका) ने टेनिस में महिला एकल फाइनल में गोल्ड तथा अपनी बहन वीनस के साथ युगल में गोल्ड पदक जीतकर टेनिस की दुनिया में कुल चार गोल्ड जीतकर पहली खिलाड़ी बन गई।

5. डेनलिन, बैंडमिंटन (चीन) सुपर डैन के प्रसिद्ध डेनलिन नामक इस खिलाड़ी ने बैंडमिंटन में ओलंपिक गोल्ड मेडल जीता। बल्कि अपने सबसे बड़े प्रतिद्धंदी मलेशियाई शटलर ली चौंग वेई के ओलंपिक चैम्पियन बनने के सपने को फिर से ध्वस्त कर दिया।

हमारे ओलंपिक विजेता किसी से कम नही

1. साइना नेहवाल	**बैंडमिंटन**	**कांस्य**
2. विजय कुमार	**25 मीटर रैपिड फायर पिस्तल**	**रजत**
3. सुशील कुमार	**कुश्ती 66 कि.ग्रा. फ्रीस्टाइल वर्ग**	**रजत**
4. योगेश्वर दत्त	**कुश्ती 60 कि.ग्रा.**	**कांस्य**
5. मैरी कोम	**51 कि.ग्रा.फ्लाईवेट**	**कांस्य**
6. गगन नारंग	**निशानेबाजी 10 मीटर एयर राइफल**	**कांस्य**

ऐसे बहुत से खिलाड़ी भी उभरे जिन्होंने मामूली अन्तर से पदक तो नहीं जीता लेकिन दिल तो जीता है।

गहरी नींद अच्छी नींद

नींद का मनुष्य की जीवन में महत्वहपूर्ण स्थान है। मनुष्य अपने जीवन का एक तिहाई हिस्सा सोते हुए गुजार देता है। नींद में समय परिवर्तन होने का मनुष्य की कार्यक्षमता तथा उसके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर पड़ता है। आज के आधुनिक युग में तनावपूर्ण जिंदगी और असंतुष्ट जीवन के कारण मानव इतना अशांत हो चुका है कि उसको स्वाभाविक नींद लेने के लिए तरसना पड़ता है।

अनिद्रा रोग सारे विश्व में महारोग की भांति फैलता जा रहा है। आज के इस दौर में नींद न आना एक आम बीमारी है।

डॉक्टरों के अनुमान एक स्वस्थ मनुष्य के लिए औसतन 6-7 घंटे की नींद बहुत आवश्यक है।

1. ब्रिटेन की पूर्व प्रधानमंत्री मार्गरेट थ्रेचर ने एक इंटरव्यू में कहा था कि एक स्वस्थ और सामान्य व्यक्ति के लिए चार घंटे की नींद पर्याप्त होती है।
2. विद्युत बल्व के आविष्कारक थॉमस एडीसन के अनुसार एक व्यक्ति को केवल दो घंटे ही सोना चाहिए। कोई व्यक्ति कितनी देर सोता है यह निद्रा से प्राप्त लाभ से नहीं कि सोने वाला कितने समय तक गहरी नींद या बिना बाधा के सोया है।
3. इंग्लैंड के मनोवैज्ञानिक डॉ. जॉन जोम्ज के अनुसार अधिक सोने से रक्त प्रवाह प्रभावित होता है अर्थात् धीमा पड़ जाता है। इनके अनुसार नींद और भूख जितनी बढ़ाओ बढ़ जाती है, जितना घटाओ घट जाती है, दोनों का एक जैसा स्वभाव है।
4. प्रसिद्ध अमरीकी मनोचिकित्सक डॉ. एंथोनी वेल्स के अनुसार इसके अधिकांश कारण मनोवैज्ञानिक ही है। अनिद्रा के मानसिक कारणों में ईर्ष्या, द्वेष, आशंका, भय, चिंता, वियोग, मिलन की प्रतीक्षा, उत्तेजना, क्रोध के अलावा शारीरिक कारणों से कब्ज, अपच, भूखे पेट रहना, चाय, कॉफी, धूम्रपान, मदिरापान, नशा इत्यादि हैं।

लेकिन आज के आधुनिक समय में मोबाइल फोन, कम्प्यूटर, लैपटॉप, नोटपैड, फेसबुक इत्यादि साधन भी निद्रा में बाधक बन रहे हैं। साथ ही आज की भागदौड़ की जिंदगी में मल्टीनेशनल कम्पनी तथा प्राइवेट संस्थानों में नाइट शिफ्ट की ड्यूटी भी नींद पूरी न होने के कारण है।

1. अच्छी नींद के लिए लगभग दो घंटे पहले ही भोजन कर लेना चाहिए।
2. सोने का कमरा बहुत ही शांत और साफ-सुथरा होना चाहिए तथा खिड़की-दरवाजे खुले होने चाहिए।
3. सोने के कमरे में रात को बहुत ही मध्यम प्रकाश का बल्ब हरे, नीले रंग का होना चाहिए।
4. बैड साफ-सुथरा तथा चादर भी अच्छी नींद में सहायक है।
5. रात्रि में सोने से पूर्व दांतों को ब्रश करना तथा हाथ-पैर व मुंह भी धोना आवश्यक है।
6. सोते समय हल्की आवाज में संगीत सुनें तथा रुचि के अनुसार ज्ञानवर्धक किताबें-अखबार पढ़ना चाहिए।
7. नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए तथा पैदल घूमना भी अच्छी नींद में सहायक है।
8. अच्छी नींद लेने के लिए दवाईयों का सेवन करना अच्छी बात नहीं है।
9. शास्त्रों के अनुसार पूर्व दिशा में सिर रखकर सोने में शान्ति एवं सुखमय नींद आती है।
10. आज के युग में किसी कवि ने कहा कि अधिक धन, अधिक जमीन-जायदाद, अधिक सोना-चांदी, अधिक पैसा भी नींद न आने के कारण है।

आशा है ये साधारण नुस्खे आपको आज की दौड़ती-भागती तनावपूर्ण जिंदगी में गहरी और अच्छी नींद लेने में मदद करेंगे। क्योंकि कहा भी गया है कि अच्छी नींद अच्छे स्वास्थ्य की निशानी है।

श्री रघुबीर सिंह, कैशियर
बिल एवं रोकड़ अनुभाग
सीएसआईआर-निस्केयर, नई दिल्ली।

अनमोल वचन

धन से पुस्तक मिलती है। किन्तु ज्ञान नहीं।
धन से आभूषण मिलता है। किन्तु रूप नहीं।
धन से सुख मिलता है। किन्तु आनन्द नहीं।
धन से साथी मिलते है। किन्तु सच्चे मित्र नहीं।
धन से भोजन मिलता है। किन्तु भूख नहीं।
धन से दवा मिलती है। किन्तु स्वास्थ्य नहीं।
धन से एकान्त मिलता है। किन्तु शान्ति नहीं।
धन से बिस्तर मिलते है। किन्तु नींद नहीं।

सुखी होने के दस रास्ते

1. व्यवहारिक बनो।
2. बहुत कम बोलो।
3. पहले लिखो बाद में दो।
4. सोचो फिर बोलो।
5. काम में सदैव व्यस्त रहो।
6. सबको सम्मान से बुलाओ।
7. अपनी गलती स्वीकार करो।
8. सबकी राय लेकर निर्णय करो।
9. कभी-कभी ना बोलना भी सीखो।
10. जरूरत न हो उसकी खरीदी न करो।

समय नहीं है

हर खुशी है यहां लोगों के पास। मगर हंसने के लिए समय नहीं है।।
मां-बाप की उम्र का तो एहसास है। मगर हाल-चाल जानने का समय नहीं।।
रिश्तेदार मर गया उसकी खबर है। मगर दाह-संस्कार में जाने का समय नहीं।।
सभी मित्रों के नाम तो मोबाइल में हैं। मगर मित्रता के लिए समय नहीं।।
आंखों में नींद तो बहुत है। मगर सोने के लिए समय नहीं।।
दिल में हज़ारों गम छुपे है। मगर रोने के लिए समय नहीं है।।
पैसों की होड़ में लम्बी दौड़ लगाई। मगर थकने के लिए समय नहीं है।।
दूसरों के एहसान की कद्र है। मगर खुद के लिए समय नहीं है।

दुखी होने के दस रास्ते

1. बिना मांगे सलाह देना।
2. बिना कारण झूठ बोलना।
3. किसी पर विश्वास न करना।
4. लेन-देन का हिसाब न रखना।
5. हमेशा स्वयं के लिए सोचना।
6. भूतकाल के सुख को याद करना
7. कोई भी काम समय पर न करना।
8. स्वयं की बात को सत्य बताना।
9. देरी से सोना, देरी से उठना।
10. किसी के लिए कुछ न करना।

सूक्ति

- दूसरों के साथ वह व्यवहार न करो, जो तुम्हें अपने लिए पसन्द न हो।
- शरीर के रोग शत्रु से भी अधिक हानिकारक होते हैं।
- इस संसार का कोई भी तप सत्य से श्रेष्ठ नहीं है।
- कठोर वाणी आग से जलने से भी दुखदायी होती है।
- पलभर का क्रोध आपका भविष्य बिगाड़ सकता है।
- मनुष्य की वृद्धि और विनाश उसके अपने हाथ में होते हैं।

आंखों में क्या हैं!

पिता की आंख में	फर्ज
माता की आंख में	ममता
भाई की आंख में	प्यार
बहन की आंख में	स्नेह
अमीर की आंख में	घमण्ड
गरीब की आंख में	आशा
मित्र की आंख में	सहयोग
दुश्मन की आंख में	बदला
सज्जन की आंख में	दया
शिष्य की आंख में	आदर

श्रीमती दीक्षा बिष्ट, वैज्ञानिक-जी
प्रमुख, पीएसडी विभाग, निस्केयर, नई दिल्ली।

चुटुकले

रमेशः डॉ. साहब, प्लास्टिक सर्जरी कराने में कितना खर्चा आएगा।
डॉक्टरः 50,000/-रुपए
रमेशः अगर प्लास्टिक मैं लाकर दूं तो कितने रूपए लगेंगे।
डॉक्टरः फिर तो तुम पिघलाकर खुद चिपका भी लो तो कुछ नहीं लगेगा

टीचरः श्याम, तुम्हें होमवर्क दिया था तुमने क्यों नहीं किया।
श्यामः सर, क्योंकि मैं हॉस्टल में रहता हूं।

डॉक्टरः आइए, क्या हुआ
मरीजः डॉ. साहब, तबीयत ठीक नहीं है, सीने में दर्द हो रहा है।
डॉक्टरः क्या शराब पीते हो।
मरीजः हां, पर मेरे लिए छोटा पैग ही बनाना।

एक बिस्कुट (बेकरी) वाले ने अपनी गर्लफ्रेंड को लवलेटर लिखाः डियर मैरी, टुडे इज ए गुड डे, हैव क्रैक जैक्ड माई लिटल हार्ट, नाऊ आई एम इन 50-50 पोजीशन। प्लीज़ डॉन्ट हाइड एंड सीक, यूअर्स टाइगर।

अनूप की नई-नई शादी हुई थी। इसके बावजूद वह रोज दफ्तर में देर तक काम करता था। एक दिन बॉस ने पूछा, तुम्हारी नई-नई शादी के बावजूद तुम देर तक क्यों रुके हो।
अनूप ने जबाव दिया- सर, मेरी पत्नी भी नौकरी करती है। हम दोनों ने यह तय किया है कि जो घर जल्दी पहुंचेगा, वही खाना बनाएगा।

एक ग्रामीण ने ट्रेन में चढ़ते ही ज़ंजीर से अपना डिब्बा बांध दिया, थोड़ी देर में ट्रेन रूक गई। जब टीटी ने आकर जानकारी दी तो, ग्रामीण बोला- मां ने इस डिब्बे में देसी घी डालकर दिया था। देखा, देसी घी, वह भी गांव का इसमें कितनी ताकत है। गाड़ी को भी रोक दिया।

एक व्यक्ति ऊंची पहाड़ी पर बैठा पढ़ाई कर रहा था। उससे किसी ने पूछा, क्या कर रहे हो। तो उसने जबाव दिया, हायर स्टडीज।

एक पुलिस वाले ने आधी रात को एक शराबी से पूछा, इतनी रात को कहां जा रहे हो।
शराबीः शराब से होने वाले नुकसान पर लेक्चर सुनने।

पुलिस वालाः इतनी रात गए किससे सुनने जा रहे हो।
शराबीः अपनी बीबी और सास से।

भाई- क्या किसी लड़की को देखकर तुम्हारे दिल में यह इच्छा नहीं होती कि काश, तुम कुंआरे होते।
क्यों नहीं, हां होती है।
कौन है वह लड़की।
भाई- मेरी पत्नी।

बेटा- पापा, क्या आप कभी मिस्र गए थे।
पापाः नहीं बेटा, पर तुम क्यों पूछ रहे हो।
बेटाः मैंने सोचा कि आप ये मम्मी शायद वहीं से लाए हैं।
एलकेजी में पढ़ने वाला बच्चा टेस्ट पेपर लाया।
पापाः यह क्या है बेटा।
बच्चाः पापा, मैडम के पास स्टार्स खत्म हो गए थे, इसलिए उन्होंने मुझे मून दिया है।

पत्नीः यहां मायके में मैं 15 दिनों में आधी रह गई हूं, मुझे लेने कब आ रहे हो।
पतिः (खुशी से) सच, तो फिर अभी 15 दिन और इंतजार करो।

पत्नीः अगर मैं मर गई तो तुम क्या करोगे।
पतिः मैं पागल हो जाउंगा।
पत्नीः क्या तुम दूसरी शादी तो नहीं करोगे।
पतिः पागल तो कुछ भी कर सकता है, उसका क्या भरोसा।

दो कॉक्रोच आईसीयू में भर्ती थे। पहले ने दूसरे से पूछा, क्या हुआ था।
दूसरा- कुछ नहीं यार- एक लड़की मुझे देखकर इतनी जोर से चिल्लाई कि मुझे हार्टअटैक हो गया।

एक आदमी दो मीटर के पाइप से हुक्का पी रहा था।
दूसरे से पूछा- इतने लम्बे पाइप से तम्बाकू क्यों पी रहे हो, उसने उत्तर दिया।
डॉक्टर ने तम्बाकू से दूर रहने की सलाह दी है।

श्री पृथ्वीराज मेहता, तकनीकी अधिकारी (सेवानिवृत्त)
लक्ष्मी नगर, दिल्ली - 110092

वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा चेतना जगाने में संचार माध्यमों की भूमिका पर अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन

उद्घाटन सत्र पर मंचासीन विभूतियां हैं; (बाएं से) डॉ. सुबोध महन्ती, निदेशक, विज्ञान प्रसार; डॉ. गंगन प्रताप, निदेशक, निस्केयर; प्रो. एस.के. जोशी, पूर्व महानिदेशक, सीएसआईआर; डॉ. लालजी सिंह, कुलपति, बीएचयू; डॉ. जी.एस. रौतेला, महानिदेशक, एनसीएसएम; प्रो. टोमियो मिजोकामी, जापान और श्रीमती दीक्षा बिष्ट, प्रमुख वैज्ञानिक, निस्केयर।

क्या हम ऐसे भारत की कल्पना कर सकते हैं जिसके सभी नागरिक वैज्ञानिक चेतना से ओत-प्रोत हों, जहां अविवेकपूर्ण अंधविश्ववासों का कोई स्थान न हो, जहां भोले-भाले लोगों के अंधविश्वास का लाभ न उठाया जाता हो, और जहां संदिग्ध बाबा और धर्म के ठेकेदार अपनी दुकानें बंद करके दूसरे धंधों में लग गए हों। स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग 65 वर्षों के बाद भी यह अभी स्वप्न ही है। एक सपना जो पंडित जवाहर लाल नेहरु ने देश में वैज्ञानिक और औद्योगिक अवसंरचना की नींव रखते हुए देखा था।

देश के नागरिकों में वैज्ञानिक चेतना के संचार के इस स्वप्न की देन है हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित यह सम्मेलन। वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा चेतना जगाने में संचार माध्यमों की भूमिका पर अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने राष्ट्रीय वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद (एनसीएसटीसी) और विज्ञान प्रसार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, और राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद (एनसीएसएम) के साथ मिलकर किया। यह सम्मेलन 29-30 मई 2012 को नेशनल एग्रीकल्चर साइंस कॉम्प्लैक्स, पूसा, नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

स्वागत भाषण देते हुए डॉ. सुबोध महन्ती, निदेशक, विज्ञान प्रसार

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. लाल जी सिंह उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि थे जबकि डॉ. जी.एस. रौतेला, महानिदेशक, एनसीएसएम और प्रो. एस.के. जोशी, भूतपूर्व महानिदेशक, सीएसआईआर प्रमुख वक्ता थे। समापन सत्र की शोभा प्रो. यशपाल, प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री और सुश्री मल्लिका साराभाई, प्रसिद्ध नृत्यांगना और नृत्य निर्देशक ने बढ़ाई।

उद्घाटन सत्र

सम्मेलन में अतिथियों का स्वागत करते हुए निदेशक, विज्ञान प्रसार ने कहा कि यह वैज्ञानिक चेतना को जन-आलोचना

का केन्द्र बनाने का एक प्रयास है। उन्होंने कहा कि विज्ञान प्रसार, एनसीएसटीसी और निस्केयर पिछले एक वर्ष से, पालमपुर में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन से आरम्भ करके नई दिल्ली में अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन, उत्तराखंड में रामगढ़ सम्मेलन और अब इस अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन के जरिए इसे संभव बनाने के लिए एकजुट हुए हैं। डॉ. महन्ती ने कहा कि वैज्ञानिक चेतना के पंडित नेहरु के दृष्टव्य को केवल तब ही प्राप्त किया जा सकता है जब सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में विज्ञान का संचार हो और केवल जब समाज के सभी वर्ग एक साथ मिलकर काम करने के लिए आगे आएं।

डॉ. लालजी सिंह, कुलपति, बीएचयू ने अपने स्पष्ट विचार रखे। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि हालांकि नेहरु ने यह घोषणा की थी कि भारत केवल विज्ञान और तकनीकी के रास्ते का अनुसरण करके ही तरक्की कर सकता है, अधिकतर विकास कार्यों में गांवों को अनदेखा कर दिया गया जबकि यहां की 70 प्रतिशत जनता गांवों में ही बसती है। उन्होंने विज्ञान प्रशासकों का शहरों में बैठकर कार्यक्रम लागू करने के बजाय गांवों में संस्थान और संगठन स्थापित करने का आह्वान किया।

मुख्य अतिथि डॉ. लालजी सिंह, कुलपति, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय सम्बोधित करते हुए

डॉ. लालजी सिंह ने विज्ञान संचारकों से अपना कार्य क्षेत्र बढ़ाने का अनुरोध किया। हमें गांवों में वैज्ञानिक चेतना की बात करनी चाहिए। यही वह जगह है जहां वास्तविक परिवर्तन आना चाहिए। लेकिन यह परिवर्तन कुछ समय के लिए चलाए गए छोटे-छोटे कार्यक्रमों के जरिए नहीं आएगा। वैज्ञानिक चेतना का संचार करने वाले संस्थानों को गांवों में ही स्थापित करना होगा जिससे सैद्धान्तिक प्रदर्शनों के स्थान पर विज्ञान के लाभ के प्रायोगिक ज्ञान को प्रदर्शित किया जा सके, उन्होंने कहा।

वैज्ञानिक चेतना को बढ़ावा देने के निस्केयर के प्रयासों की प्रशंसा करते हुए, प्रो. एस.के. जोशी, पूर्व महानिदेशक, सीएसआईआर चकित थे कि वैज्ञानिक चेतना को प्रसारित करने के अपने मौलिक दायित्व को हमने कितना पूरा किया है। यद्यपि मीडिया इसमें प्रमुख भूमिका निभा सकता है, उन्होंने कहा, लेकिन यह सनसनी पूर्ण समाचारों में अधिक रुचि रखता है। उन्होंने कहा कि अगर मीडिया अपने कुल समय का जिसे वह स्कैम, ग्लैमर और स्पोर्ट्स पर खर्च करता है, एक हजारवां भाग भी वैज्ञानिक चेतना के प्रसार पर खर्च करे, तो परिवर्तन लाया जा सकता है। प्रो. जोशी ने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि देश में बहुत कम विज्ञान संचारक हैं और निस्केयर को अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर विज्ञान संचारकों को प्रशिक्षित करना चाहिए।

प्रो. एस.के. जोशी, पूर्व महानिदेशक, सीएसआईआर अध्यक्षीय भाषण देते हुए

क्या वैज्ञानिक चेतना को मापने का कोई तरीका है? अपने कीनोट भाषण में डॉ. जी.एस. रौतेला, महानिदेशक, एनसीएसएम ने कहा कि वैज्ञानिक चेतना एक जटिल संकल्पना है और इसका मापना कठिन है हालांकि विज्ञान संग्रहालयों का दौरा करने वालों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया था। इससे पता लगा कि संग्रहालय में आने वालों की वैज्ञानिक चेतना में कोई बढ़ोत्तरी नहीं हुई थी। लेकिन विश्लेषण उपकरण दोषी था या कार्यक्रम अप्रभावी था, कहना कठिन था। डॉ. रौतेला ने कहा कि एनसीएसएम वैज्ञानिक चेतना को मापने के लिए एक शोध परियोजना शुरू करने के विकल्प खोज रहा था और समन्वयकों को भी ढूंढ रहा था।

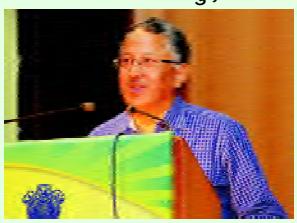

कीनोट अभिभाषण देते हुए डॉ. जी.एस. रौतेला, महानिदेशक, एनसीएसएम

आरम्भ में, अपने उद्बोधन में, डॉ. गंगन प्रताप, निदेशक, निस्केयर ने कहा कि इतिहास के अपने अध्ययन में देखा कि भारत पहली सभ्यता थी जहां तर्क और प्रमाण जनवार्ता में लाए गए। सामख्या, कारवाकस, बैन और बौद्धों के पाठों में लक्षित हुआ था। डॉ. प्रताप ने कहा कि उस काल में मौजूद प्रज्ञान को विश्वास था कि तर्क और प्रभाग के साधनों द्वारा संदेहों का निराकरण और मानवता तथा अनुकम्पा द्वारा

वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर वक्तव्य देते हुए डॉ. गंगन प्रताप, निदेशक, निस्केयर

उद्घाटन सत्र में अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन की प्री-प्रोसीडिंग्स 'सम्मेलन छवि' के विमोचन का दृश्य

तकलीफों को कम करना, सही प्रक्रिया के सभी सिद्धांतों में सबसे अधिक आदर्श था। तर्क और तथ्य का प्रयोग करना सही मायनों में वैज्ञानिक चेतना थी, उन्होंने कहा। उन्होंने यह भी कहा कि समस्त विश्व में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रसार के बावजूद और साइबर स्पेस में भी, वैज्ञानिक चेतना की लड़ाई में विजय अभी दूर है और बल्कि निराधार अवस्था में है।

उद्घाटन समारोह में आमंत्रित अतिथियों, विदेश-देश से आए प्रतिनिधियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए श्रीमती दीक्षा बिष्ट ने आज़ादी के समय भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की चुनौतियों पर चर्चा करते हुए कहा कि वैज्ञानिक भविष्य स्वयं नहीं बनाते बल्कि मनुष्य या प्रौद्योगिकी के उपयोगकर्ता देश एवं समाज का भविष्य तय करते हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने संभावनाओं के द्वार खोल दिए हैं पर इसके प्रयोग के लिए सही निर्णय की क्षमता आम व्यक्ति को ही विकसित करनी होगी। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैज्ञानिक चेतना जगाने में वैज्ञानिकों के साथ आम व्यक्ति की भागीदारी आवश्यक है।

शिक्षण संस्थाओं का विज्ञान संचार में योगदान

शिक्षण संस्थाएं विज्ञान संचार के लिए क्या योगदान दे सकती हैं, इस विषय पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सोच के विकास में विज्ञान शिक्षण की भूमिका पर चर्चा की गई। हिन्दी में सूचना संचार प्रौद्योगिकी को देश में स्थापित करने वाले विशेषज्ञों में अग्रणी डॉ. ओम विकास ने विज्ञान चेतना के प्रचार-प्रसार के लिए बड़े कैनवस की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विज्ञान के प्रसार के लिए दूरगामी लक्ष्य निर्धारित किए जाने की ज़रूरत है। अपने शोध पत्र *हिन्दी में विज्ञान प्रौद्योगिकी: प्रसार की लकीरें* प्रस्तुत करते हुए डॉ. ओम विकास ने कहा कि भारत में 2010-2020 इन्नोवेशन डिकेड अर्थात् नवाचार दशक के रूप में मनाया जा रहा है, जिसकी घोषणा प्रधानमंत्री ने भारतीय विज्ञान कांग्रेस के दौरान की। आज वह समय आ गया है जब विज्ञान संचार से जुड़े कार्यों की गति बढ़ानी पड़ेगी। विज्ञान प्रसार का पहला लक्ष्य होता है अंधविश्वासों की अवैज्ञानिकता को सिद्ध करना। हम प्राथमिक शिक्षा में लोकभाषा को हेय बनाते जा रहे हैं, आम-आदमी बच्चों से विज्ञान सम्मत संवाद नहीं कर पा रहा। आज आवश्यकता है कि विज्ञान शिक्षा की ऐसी नीति बनाई जाए जिससे कि बच्चों में विज्ञान के प्रति अभिरुचि बने और उनमें वैज्ञानिक चेतना का संचार हो।

अज़ीम प्रेमजी फाउन्डेशन से जुड़ी डॉ. प्रियंका ने अपने शोध पत्र *वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सोच के विकास में विज्ञान शिक्षा की भूमिका* में कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली छोटी

कक्षा के विद्यार्थियों को वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों को रटने के लिए बाध्य करती है, जबकि विज्ञान सोचने और सक्रिय होने की प्रक्रिया है। वहीं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, अलाहर, यमुना नगर में विज्ञान अध्यापक श्री दर्शन लाल ने विज्ञान शिक्षण और वैज्ञानिक मनोवृत्ति के विकास में नीरसता कम करने के लिए हास्य के समावेश को आवश्यक बताया। उन्होंने बच्चों की विज्ञान शिक्षा के लिए *हमारे पूर्वज* पाठ्य पुस्तक की तरह *हमारे वैज्ञानिक* पुस्तक आरम्भ करने की संस्तुति की।

भारतीय भाषाओं में विज्ञान संचार

भारतीय भाषाओं में शिक्षण संस्थाओं द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास को आवश्यक बताते हुए डॉ. उदय किरौला ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में गंदे पानी के सेवन, पर्याप्त साफ सफाई के अभाव में तथा संतुलित भोजन न मिलने के कारण बच्चों का बीमार होना स्वाभाविक है। इस कार्य के लिए बच्चों के साथ ही शिक्षकों को भी प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

विज्ञान प्रसार के वैज्ञानिक श्री कपिल त्रिपाठी ने विज्ञान संचार के लिए भारतीय भाषाओं में गतिविधि किट एवं खिलौनों के विकास पर बल दिया। उन्होंने कहा कि विज्ञान प्रसार द्वारा विकसित की जा रही गतिविधि किट में बच्चों के मध्य जीवन कौशल को विकसित करने की संभावनाओं पर कार्य किया जा रहा है। विज्ञान प्रसार में कार्यरत डॉ. इरफाना बेगम ने एड्यूसेट नेटवर्क द्वारा विज्ञान संचार के प्रयासों पर चर्चा करते हुए विभिन्न भाषाओं में एड्यूसेट नेटवर्क द्वारा प्रस्तुत विज्ञान कार्यक्रमों पर प्रस्तुतीकरण दिया।

भारत में विज्ञान लोकप्रियकरण द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के प्रयासों पर चर्चा करते हुए श्री इरफ़ान ह्यूमन ने कहा कि मनुष्य सदियों से जाने-अनजाने वैज्ञानिक विधियों को देखता, सीखता और प्रयोग करता आ रहा है। वैज्ञानिक विकास किसी एक दिन की देन नहीं है बल्कि सभ्यता-दर-सभ्यता मानवीय हाथ विज्ञान के लिए क्रियाशील रहे हैं और वैज्ञानिक सोच से ही लोगों की तर्क शक्ति, विवेचना तथा कार्य को व्यवस्थित ढंग से करने की सहज प्रवृत्ति का विकास होता है, जिससे देश सदैव विकास की ओर अग्रसर होता है।

भारतीय भाषाओं में सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से विज्ञान संचार पर सुश्री चारू वर्मा, वैज्ञानिक, निस्केयर ने कहा कि भारत को अन्य एशियाई देशों के सूचना प्रौद्योगिकी के स्थानीयकरण के उदाहरण से सीख लेनी चाहिए। चीन, जापान और कोरिया सूचना प्रौद्योगिकी के स्थानीयकरण के मामले में सबसे परिपक्व बाज़ार हैं। यह देश मानकीकृत स्थानीयकरण के प्रयासों में बहुत सक्रिय रहे हैं। इसका परिणाम यह है कि बहुत से सॉफ्टवेयर स्थानीय भाषाओं में बना लिए गए हैं और अब ये देश अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों का स्थानीकरण करने की ओर बढ़ रहे हैं।

विज्ञान कथाएं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण

विज्ञान कथा साहित्य एक विवेचन शीर्षक के सारगर्भित शोध पत्र में सुविख्यात विज्ञान लेखक श्री देवेन्द्र मेवाड़ी ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में रचे गए विज्ञान कथा साहित्य का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ प्रस्तुत किया। श्री मेवाड़ी ने कहा कि

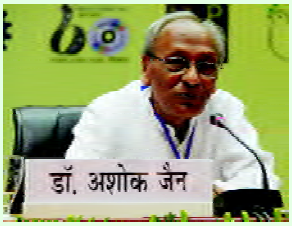

कल जो विज्ञान कथाकारों की कल्पनाएं थीं, उनमें से अनेक कल्पनाएं आगे चल कर असलियत में बदल गईं । उन्होंने कहा कि यह याद रखना जरूरी है कि विज्ञान कथाकार भविष्यवक्ता नहीं हैं बल्कि वह विज्ञान के ज्ञात नियमों के सहारे भविष्य में झांक कर भावी परिवर्तनों का अनुमान लगाता है और अपनी कहानियों के माध्यम से भविष्य की तस्वीर को सामने रखता है। इसलिए विज्ञान-कथाओं यानी विज्ञान गल्प का आधार ही विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के इसी बोध ने विज्ञान कथाओं को जन्म दिया है।

हिन्दी में विज्ञान कथाओं के अभाव एवं कुछ प्रचलित भ्रमों के निराकरण पर विचार व्यक्त करते हुए वरिष्ठ लेखक, सम्पादक एवं पत्रकार डॉ. रमेश उपाध्याय ने कहा कि आज कठिनाई यह है कि हिंदी में विज्ञान कथाओं को साहित्य और उनके लेखकों को साहित्यकार नहीं माना जाता। इसीलिए हिंदी में लिखी गयी विज्ञान कथाएं चर्चित, प्रतिष्ठित और पुरस्कृत होकर साहित्य और समाज में स्वीकृत नहीं हो पातीं। कहीं से कोई प्रोत्साहन न मिलने पर वे लेखक भी, जो अच्छी विज्ञान कथाएँ लिख सकते हैं, इस तरफ से उदासीन हो जाते हैं। पश्चिमी देशों में विज्ञान और साहित्य निकट आये हैं, लेकिन हमारे यहाँ उनके बीच अलगाव और दूरी की स्थिति बनी हुई है।

सम्पादन और प्रकाशन की चुनौतियां

इस तथ्य से हम भली-भांति परिचित हैं कि वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञों की संख्या के हिसाब से हम दुनिया के शीर्षस्थ देशों की श्रेणी में हैं। खेद की बात यह है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण के स्तर पर हम आज भी कंगाल हैं। यह उद्‌गार सम्पादन और प्रकाशन की चुनौतियां सत्रा की अध्यक्षता करते हुए श्री सुभाष लखेड़ा, पूर्व वैज्ञानिक एवं विज्ञान संचारक ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि हमारे यहां अक्सर समाज को वैज्ञानिक ढंग से सोचने की सलाह दी जाती है। हम यह भूल जाते हैं कि वैज्ञानिक ढंग से वही सोच सकता है जो वैज्ञानिक ढंग से जीना जानता है; जो पूर्वाग्रहों से मुक्त हो और तर्क के आधार पर विश्लेषण कर किसी सवाल विशेष पर सोचने में सक्षम हो।

युवा लेखक एवं सेंट मार्गरेट इंजीनियरिंग कॉलेज, नीमराना, अलवर में प्रवक्ता श्री शशांक द्विवेदी ने हिन्दी में विज्ञान पत्रकारिता, संपादन और प्रकाशन की चुनौतियों को स्पष्ट करते हुए कहा कि हिन्दी में विज्ञान पत्रकारिता को व्यवहारिक एवं रोज़गारपरक बनाना होगा। उन्होंने कहा कि अक्सर यह देखने में आता है कि हमारे समाचारपत्र-पत्रिकाओं में ज्यादातर रचनाएं, विदेशों से आने वाली फीचर प्रचार सामग्री पर आधारित होती हैं। यदि इसके साथ ही हम देश में विकसित वैज्ञानिक जानकारियों, तकनीकों और वैज्ञानिक गतिविधियों को प्राथमिकता दें तो यह ज्यादा अच्छा होगा। इसके लिए आवश्यक है कि विज्ञान लेखक और पत्रकार स्वयं इस प्रकार की जानकारियां एकत्र करें।

विज्ञान पत्रकारिता एवं विज्ञान संचार

सीएसआईआर-निस्केयर की प्रमुख वैज्ञानिक श्रीमती दीक्षा बिष्ट ने हिन्दी में विज्ञान लेखन की वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा कि आज हिन्दी में विज्ञान लेखन को मिलने वाले प्रोत्साहन से हिन्दी के साथ ही अनेक भारतीय भाषाओं में विज्ञान साहित्य रचा जा रहा है। विदेशों में भी वैज्ञानिक साहित्य हिंदी में उपलब्ध है। आज स्थिति अच्छी जरूर हुई है पर मजबूत नहीं। न जाने ऐसा समय कब आयेगा जब सही तथ्यों और जानकारियों युक्त भरपूर सामग्री हिन्दी में होगी। सीएसआईआर-निस्केयर ने लोकप्रिय विज्ञान साहित्य में अंग्रेजी पुस्तकों के हिंदी रूपांतरण प्रकाशित किये हैं और कुछ हिन्दी में मौलिक पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं, ये पुस्तकें विज्ञान विषयों को जन-जन तक पहुँचाने का अच्छा माध्यम सिद्ध हुई हैं।

समाचारपत्रों में विज्ञान समाचारों के कवरेज पर किए गए अध्ययन को प्रस्तुत करते हुए विज्ञान पत्रकार श्री चक्रेश जैन ने जिन मुद्दों को सम्मिलित किया, उनमें प्रमुख हैं समाचारपत्रों के प्रथम पृष्ठ पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संबंधी समसामयिक घटनाओं, शोधकार्यों के रोचक व व्यावहारिक पहलुओं एवं उपलब्धियों के कवरेज का अध्ययन, वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहन, विज्ञान लोकप्रियकरण में समाचारपत्रों की भूमिका एवं विज्ञान शिक्षण। श्री जैन ने कहा कि समाचारपत्रों में विज्ञान समाचारों के बेहतर कवरेज के लिए विज्ञान डेस्क या विज्ञान ब्यूरो की

स्थापना की जानी चाहिये।

विज्ञान प्रसार से जुड़े वैज्ञानिक अधिकारी श्री मनीष मोहन गोरे ने हिन्दी विज्ञान साहित्य के सृजन, अनुवाद, संपादन और प्रकाशन से जुड़ी चुनौतियों पर बारीकी से विमर्श किया। उन्होंने कहा कि लोक विज्ञान पुस्तकों की लोकप्रियता और प्रसार को बढ़ाने के लिए विज्ञान संचार एजेंसियों को आपस में नेटवर्क बनाकर देश के विभिन्न हिस्सों में जा-जाकर पुस्तक मेलों का आयोजन करना चाहिए। इससे विज्ञान लेखन और संचार का उजाला देश के कोने-कोने में पसरेगा।

अंधविश्वास, समाज और वैज्ञानिक चेतना

अंधविश्वासों को खत्म करने में विज्ञान संचार की भूमिका पर बोलते हुए इस सत्र के आमंत्रित वक्ता डॉ. अमिताभ पांडे ने ज्योतिष विज्ञान पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों की आलोचना करते हुए लोगों से ऐसे कार्यक्रमों को बढ़ावा न देने की अपील की। श्री मनोज मिश्रा ने अपने शोधपत्र में अनेक तर्कहीन विश्वासों जैसे कि शगुन-अपशगुन, मुहुर्त-बेला, भाग्यफल, कुंडली, वास्तुशास्त्र की चर्चा की। अंधविश्वास और जनमाध्यम पर अपने शोधपत्र में श्री धनेश जोशी ने बताया कि अंधविश्वासों का क्षेत्र काफी बड़ा है और जनमाध्यमों ने अंधविश्वास को बढ़ावा देकर अपना विकास काफी तेजी से किया है।

जनसंचार माध्यम और वैज्ञानिक चेतना

समाचार-पत्रों में विज्ञान कवरेज को लेकर काफी तीखी चर्चा हुई। श्री के.के. मिश्रा द्वारा वर्ष 2009 में सूर्यग्रहण के समय समाचारपत्रों में इसके कवरेज के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि इस समाचार को कोई विशेष कवरेज नहीं दिया गया और उसमें वैज्ञानिक तथ्य भी बहुत कम था। श्रीमती उज्जवला टिर्की ने विज्ञान क्षेत्र में की गई कुछ नई पहल की चर्चा की। उन्होंने एनसीएसटीएस द्वारा महिलाओं के लिए चलाए जा रहे कम्यूनिटी रेडियो कार्यक्रम की चर्चा की जिसके आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं।

विज्ञान संचार मात्र सूचनाओं का आदान-प्रदान करना नहीं है। व्यापक समझ, धारणा निर्माण और आपसी सहमति का विकास ही विज्ञान संचार के समाजशास्त्र की विशेषताएं हैं। ये विचार थे आकाशवाणी, दिल्ली के वक्ता डॉ. आर.एस. यादव के। प्रो. जीशान हैदर जैदी ने अनेक उदाहरणों से यह सिद्ध किया कि ठीक तरह से प्रस्तुत किए गए छोटे वैज्ञानिक कार्यक्रम भी भूत-प्रेत या अंधविश्वासों पर आधारित कहानियों से कहीं ज्यादा लोकप्रिय हो सकते हैं। विज्ञान संचार में रेडियो की भूमिका पर बात करते हुए इग्नू की पूनम त्रिखा ने कहा कि आज भी देश के कई ऐसे हिस्से हैं जहां सिर्फ रेडियो की ही पहुंच हैं। विज्ञान प्रसार के दृश्य कार्यक्रमों की वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रसार में भूमिका पर बात करते हुए विज्ञान प्रसार के श्री नवनीत कुमार गुप्ता ने विज्ञान प्रसार द्वारा विकसित एवं डेकू, इसरो के साथ मिलकर बनाए गए अनेक कार्यक्रमों के दूरदर्शन एवं लोकसभा टीवी पर प्रसारित होने की जानकारी दी।

विज्ञान संचार के नए साधन

हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है फिर भी विडम्बना यह है कि हिन्दी में वेबसाइट की उपलब्धता इतनी कम है कि यह प्रथम दस भाषाओं में कोई स्थान नहीं बना पाई है। यह विचार थे विज्ञान प्रसार के श्री रिन्टू नाथ के जिन्होंने *हिन्दी वेब दुनियाः चुनौतियां एवं अवसर* पर शोधपत्र प्रस्तुत किया। श्री सिद्धेश्वर सिंह और श्री हरिकृष्ण आर्य ने *इंटरनेट में हिन्दीः वर्तमान स्थिति और भविष्य की चुनौतियां* पर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। चेतना और दृष्टि के विस्तार में इंटरनेट और न्यू मीडिया की भूमिका पर चर्चा करते हुए श्री अनिरुद्ध कुमार ने कहा कि सुविधाएं बहुत हैं तो खतरे भी कम नहीं हैं। इंटरनेट और न्यू मीडिया का उपयोग अंधविश्वास और अतार्किकता के प्रसार में भी भरपूर हो रहा है। निस्केयर की श्रीमती नीरू शर्मा ने विज्ञापनों से विज्ञान आंदोलन लाने के लिए ऐसे विज्ञापन बनाए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया जिन्हें सिर्फ वैज्ञानिक चेतना लाने के दृष्टिकोण से बनाया जाए।

डॉ. गजेन्द्र प्रताप सिंह ने जनसंचार के प्रमुख माध्यमों से विज्ञान संचार की व्याख्या की तो वहीं सुश्री अनीता बाली ने वैज्ञानिक चेतना जगाने में हिन्दी वेबसाइटों की भूमिका पर चर्चा करते हुए कहा कि आण्विक शक्ति के विकास के बाद इंटरनेट एक बहुत बड़ी पर चर्चा करते हुए कहा कि आण्विक शक्ति के विकास

के बाद इंटरनेट एक बहुत बड़ी क्रांतिकारी उपलब्धि है। श्री जाकिर अली रजनीश ने *ब्लॉग लेखन द्वारा वैज्ञानिक मनोवृत्ति का विकास* पर अपने विचार प्रकट किए। आज हिन्दी ब्लॉगों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। अगर इस माध्यम का समुचित उपयोग किया जाए तो विज्ञान को आम जनता के बीच लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

विज्ञान संचार वैश्विक परिदृश्य

विश्लेषक अमरीकी समाज पर अपने शोध पत्र में लॉस ऐंजिलेस, यू.एस.ए. के विज्ञान संचारक श्री ज्ञानेश्वर दत्त गौड़ ने बताया कि पश्चिमी विश्व विज्ञान केन्द्रित समाज है। अमेरिका में अविरत विद्युत आपूर्ति, जल आपूर्ति तथा उच्च स्पीड का इन्टरनेट कनेक्शन है तथा सड़कों का उत्कृष्ट नेटवर्क है। बहुत सी विशेष तकनीकी पत्रिकाएं हैं। आप कनॉट प्लेस में अमेरिकन सेन्टर में जाकर इन विशेष पत्रिकाओं को देख सकते हैं। वहां बचपन से ही तार्किक सोच पर विशेष ध्यान दिया जाता है। संग्रहालयों, फायर स्टेशनों तथा पुलिस स्टेशनों का फील्ड दौरा कराया जाता है। जिसका उद्देश्य मात्र उनको संग्रह दिखाना नहीं है बल्कि उन सभी को शिक्षित करना तथा उनमें अभिरुचि पैदा करना है। श्री गौड़ के अनुसार भारत में, अंग्रेजी बोलने वाला समृद्धशाली समूह उस जनसामान्य की अवहेलना करने का प्रयास करता है जो अंग्रेजी नहीं जानता। कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने के लिए अंग्रेजी का ज्ञान न होना बाधा नहीं बननी चाहिए। प्रत्येक को आईटी के साथ सुविधाजनक होना चाहिए चाहे वह अंग्रेजी जानता हो या नहीं। भारत में डिस्कवरी चैनल तथा हिस्ट्री चैनल खासे लोकप्रिय हैं। परन्तु ये दोनों चैनल भारतीयों के लिए विशेष रूप से कोई कार्यक्रम नहीं बनाते। ऐसे कार्यक्रम भारतीय मार्किट के लिए भी बनाए जा सकते हैं।

रशियन स्टेट यूनीवर्सिटी फॉर द ह्यूमैनिटीज़, मास्को के हिन्दी विभाग की व्याख्याता प्रो. इंदिरा गाज़ीएवा ने भारत-रूस में इंटरनेट हिन्दी के वैज्ञानिक सहयोग शीर्षक पर शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए कहा कि रूस में भारतीय संस्कृति, उनकी कई भाषाएँ एवं साहित्य की पहचान बीसवीं सदी के छठे दशक से शुरू हो पायीं। सभी को मालूम है कि हिंदी, बांग्ला, तमिल, मराठी, पंजाबी, उर्दू, उड़िया भाषाएं और उनके साहित्य रूसी भाषा में अनूदित हुए थे। इंटरनेट के प्रादुर्भाव से शिक्षक अनेक भाषाओं को सिखाने में कंप्यूटर और टेलीकम्यूनिकेशन्स सिस्टम का उपयोग करने लगे। हिंदी सीखने में ऑनलाइन व्याकरण के अभ्यास करने में रूसी छात्राओं के लिए *लाइवमोचा* नामक इंटरनेट पर उपलब्ध सबसे बड़ी सुव्यवस्थित साइट है जिसमें वेब 2.0 प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया जाता है। *स्वास्थ्य की भाषा - हिंदी और उर्दू की सेहत की बातें* एक बहुत अच्छी वेबसाइट है जिससे हिंदी-उर्दू भाषाओं में स्वास्थ्य और चिकित्सा, होम्योपैथी और आयुर्वेद विषय का परिचय कराया जा सकता है।

विज्ञान संचार में नीतिगत मुद्दे

हम आधुनिक जानकारी का जश्न मनाते हैं शीर्षक पर व्याख्यान देते हुए श्री गौहर रज़ा, प्रमुख वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्केयर ने कहा कि इंसान और जानवर में एक बड़ा फ़र्क यह होता है कि जानवर सवाल नहीं पूछते और क्योंकि सवाल नहीं पूछते इसीलिए जवाब भी तलाश नहीं करते। इंसान सवाल पूछता है और उस सवाल का जवाब जानने की कोशिश भी करता है। सवाल पूछना सिर्फ इंसान को जानवरों से अलग नहीं करता बल्कि इंसान को इंसान भी बनाता है। हर बदलाव प्रश्नों से शुरू होता है और जवाब तलाश करते हुए नए सवालों तक पहुँचता है। श्री रज़ा ने कहा कि अगर

विज्ञान विश्वास की नींव पर खड़ा होता तो जानकारी का विकास और सोच के विकास के सारे रास्ते बंद हो जाते। विज्ञान का सच हमेशा का सच नहीं होता या विज्ञान में सच से ज़्यादा ज़रूरी है सच की तलाश या ज्ञान की हद जाने बिना ज्ञान विज्ञान नहीं होता। इससे ही विज्ञान को उन्नति करने का बल मिलता है। यह विज्ञान की ताकत है न कि कमज़ोरी। अज्ञानता जब दुकानदारी बन जाए तो उसका जवाब देना आसान भी होता है और कठिन भी। आसान इसलिए कि ज्ञान की रोशनी के सामने अज्ञानता टिक नहीं सकती और कठिन इसलिए कि जिनके धंधे अज्ञानता के अंधेरों में फलफूल रहे हैं। वे विज्ञान की रोशनी को रोकने के लिए अपनी पूरी ताक़त का इस्तेमाल करते हैं।

स्वास्थ्य संबंधी जन-जागरूकता लाने में जनसंचार माध्यमों की भूमिका और सामाजिक प्रतिक्रिया पर शोध पत्रा प्रस्तुत करते हुए डॉ. विनीता सिंघल, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, निस्केयर ने कहा कि हर वर्ष रोग संबंधी सही जानकारी न होने के कारण बड़ी संख्या में लोग काल का ग्रास बन जाते हैं। इनसे बचने और सुरक्षित रहने का एकमात्र उपाय है स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा और चिकित्सा संबंधी सूचनाओं का प्रचार-प्रसार क्योंकि उपचार से बेहतर होता है बचाव। इस अध्ययन के दौरान यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया कि रोगों से संबंधित सूचनाओं को जन-संचार के माध्यम किस सीमा तक लोगों तक पहुंचा रहे हैं और इसके प्रति सामाजिक प्रतिक्रिया (सकारात्मक या नकारात्मक) क्या है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि लोगों को दिशा देने या उनको सही विचारधारा देने में शिक्षा का बहुत महत्व होता है। जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ता जाता है, अंधविश्वास का अंधेरा छंटता जाता है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार के संरचनात्मक मॉडल के लिए जन सहभागिता एवं प्रशिक्षित विज्ञान संचारकों की आवश्यकता शीर्षकित शोध पत्र में विज्ञान प्रसार के वैज्ञानिक निमिष कपूर ने कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार शिक्षा, शोध एवं कैरियर का एक उभरता हुआ क्षेत्र बन चुका है। विज्ञान संचार विषय को विज्ञान की एक शाखा के रूप में अध्ययन के लिए मान्यता प्राप्त हो चुकी है और हर वर्ष सौ से अधिक संख्या में प्रशिक्षित विज्ञान संचारक तैयार किए जा रहे हैं। लेकिन ये युवा विज्ञान संचारक आज कहाँ हैं और किस हाल में हैं? क्या मीडिया उद्योग में इनके लिए दरवाज़े खुल पा रहे हैं? इन सभी प्रश्नों का उत्तर बहुत सकारात्मक या संतोषजनक नहीं है। वैज्ञानिक प्रवृत्ति के विकास हेतु विज्ञान संचार के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित मानव संसाधन का विकास आज अनिवार्य हो चुका है।

समापन सत्र

समापन सत्र में मंच पर विराजमान हैं (बाएं से): डॉ. सुबोध महंती, निदेशक, विज्ञान प्रसार; श्री गौहर रजा, प्रमुख वैज्ञानिक, निस्केयर; मुख्य अतिथि प्रो. यशपाल, शिक्षा शास्त्री; सुश्री मल्लिका साराभाई, नृत्यांगना एवं नृत्य निर्देशक; सुश्री उज्जवला टिर्की, वैज्ञानिक, एनसीएसटीसी; श्रीमती दीक्षा बिष्ट, प्रमुख वैज्ञानिक, निस्केयर

30 मई को आयोजित सत्र में एनसीएसटीसी की सुश्री उज्जवला टिर्की ने एक बार फिर संदेश को दोहराया। उन्होंने कहा कि यह देखा गया है कि जब तक सभ्यताओं में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का निजत्व रहा, वे फली-फूलीं। समारोह में उपस्थित जनों से

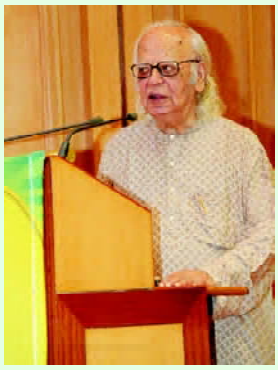

हार्दिक अनुरोध करते हुए उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक चेतना के झंडे को फहराने की यह यात्रा तब तक जारी रहनी चाहिए जब तक देश में सारे लोग यह अनुभव न करने लगें कि विज्ञान ने उनके जीवन में क्या चमत्कार किया है। अविवेक और अंधविश्वासों को इस यात्रा में विघ्न न डालने दें, उन्होंने कहा।

अपने कीनोट उद्‌बोधन में, सुश्री मल्लिका साराभाई ने इस वास्तविकता की ओर संकेत किया कि अगर हम वेद और पुराणों में जाएं, हम पाएंगे कि हर बात एक प्रश्न से शुरू होती है। लेकिन आज बच्चों द्वारा प्रश्न पूछने से कोई प्रसन्न नहीं होता। इसके अनेक कारण हो सकते हैं - जीवन की भाग-दौड़ में शिक्षक और अभिभावक दोनों के पास समय नहीं होता, या संभवतः उनके पास जवाब है ही नहीं। उन्होंने कहा कि आज शिक्षकों को अपने ज्ञान का स्तर बढ़ाने की आवश्यकता है, क्योंकि ज्ञान के लुप्त (पुराना) होने की दर बहुत तेज है।

पूछो मत, केवल अनुसरण करो का दर्शन जनजीवन के सभी क्षेत्रों में फैलता जा रहा है। अगर हम केवल अनुयायी बनते हैं तो वैज्ञानिक चेतना नष्ट हो जाएगी, उन्होंने कहा। वैज्ञानिक चेतना एक मानसिक प्रवृत्ति है, जीवन जीने की एक आवश्यकता। जब तक हम सभी पैरामीटरों का मूल्यांकन नहीं करते और उसके अनुसार निर्णय नहीं लेते, हम केवल अग्रजों का अनुसरण करेंगे। मल्लिका ने विज्ञान को अनावरित करने की चुनौती स्वीकार करने के लिए विज्ञान संचारकों का आह्वान किया, क्योंकि यह राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक है।

प्रो. यशपाल ने यह कह कर सचेत रहने को कहा कि जब विज्ञान तेजी से बढ़ता है, अविज्ञान भी तेजी से बढ़ता है। यह हम सबके लिए चुनौती है कि संदिग्ध बाबा आज के समय और युग में भी ध्यानाकर्षित करते हैं, उन्होंने कहा। लेकिन हमें धैर्य रखने की जरूरत है। यह देखना हम सबका नैतिक दायित्व है कि हमारी क्षमताओं का उपयोग गलत कामों के लिए न हो। प्रो. यशपाल ने कहा कि पुनर्निमाण का काम बच्चों से आरम्भ होना चाहिए। बच्चे जन्म से ही जिज्ञासु होते हैं। हमें उनके प्रश्नों के उत्तर देने का कठिन प्रयास करना चाहिए जिससे उनमें निहित प्रश्न करने की क्षमता का हनन न हो। केवल तभी लोगों का विकास होगा, विज्ञान का विकास होगा, उन्होंने कहा।

इससे पहले, अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में, श्री गौहर रज़ा, प्रमुख वैज्ञानिक, निस्केयर ने कहा कि हमें गर्व होना चाहिए कि वैज्ञानिक चेतना की बात करने वालों में सबसे पहला हमारा देश है। हालांकि, वर्षों बाद, उन्होंने कहा, ऐसा लगता है कि वैज्ञानिक चेतना की बात कहीं पीछे छूट गई है और वास्तव में भुला दी गई है। इसीलिए निस्केयर ने कुछ समान सोच वाले संगठनों के साथ मिलकर वैज्ञानिक चेतना को राष्ट्रीय एजेंडा में फिर से सामने लाने का दायित्व उठाया है।

श्री गौहर रज़ा ने कहा विज्ञान रुके हुए पानी की तरह नहीं हो सकता। हमें युवा मस्तिष्क को नए विचारों से सींचना होगा। उन्होंने कहा कि पालमपुर में हुए पहले सम्मेलन में कुछ संस्तुतियों को अंतिम रूप दिया गया था जिसे पालमपुर घोषणा-पत्र के नाम से जाना जाता है। इन्हें जनवरी में सम्पन्न अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान प्राप्त निवेश के आधार पर परिष्कृत और मजबूत बनाया गया। उन्होंने कहा कि इन प्रस्तावों पर काम करते रहने के प्रयास किए जाएंगे और अनुमोदन के लिए उन्हें लोगों तक ले जाया जाएगा।

अपने धन्यवाद प्रस्ताव में श्रीमती दीक्षा बिष्ट, प्रमुख वैज्ञानिक निस्केयर ने कहा कि सम्मेलन के दौरान हुई चर्चाएं लाभकारी रहीं। उन्होंने विशेष रूप से इस वास्तविकता पर जोर दिया कि अगर विज्ञान को हिन्दी में लोकप्रिय बनाना है तो कठिन शब्दों के प्रयोग से बचना होगा और कुछ लोकप्रिय तकनीकी शब्दों को बजाए हिन्दी में अनुदित करने के अंग्रेजी में ही प्रयोग करना होगा।

अन्तर बताएं

नीचे दिए गए दो चित्रों में दस अन्तर है। उन्हें ढूंढ निकाले।

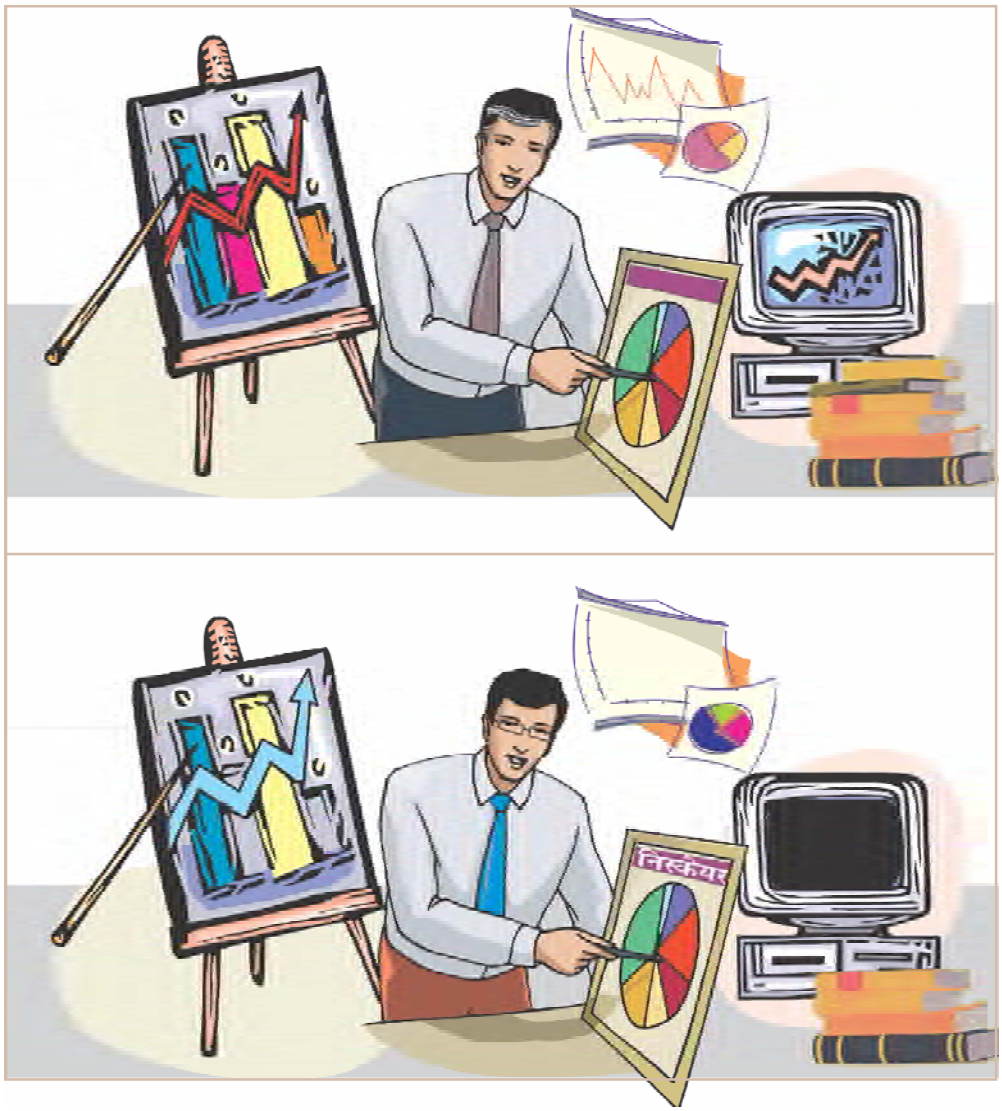

उत्तरः (1) ड्राइंग बोर्ड पर अंकित चार्ट में दो बारों में रंग नहीं है; (2) बोर्ड पर संकेतक का रंग अलग है; (3) प्रस्तुतकर्ता के बालों में सफेदी; (4) प्रस्तुतकर्ता का चश्मा; (5) कम्प्युटर की स्क्रीन खाली है; (6) दीवार पर लगे चार्ट से संकेतक गायब है; (7) प्रस्तुतकर्ता के कपड़ों में टाई और पेन्ट का रंग अलग है; (8) एक चित्र में किताबों की संख्या कम है; (9) एक चित्र में निस्केयर शब्द है; (10) दीवार से गिरते हुए कागज पर चित्रित पाई चार्ट में रंग अलग हैं।

श्रीमती नीरू शर्मा, प्रधान तकनीकी अधिकारी
आर्ट एंड ग्राफिक विभाग, निस्केयर, नई दिल्ली

निस्केयर में हिन्दी मास का आयोजन

(14 सितम्बर 2011 से 14 अक्टूबर 2011)

हिन्दी मास समारोह के अवसर पर मंच पर विराजमान हैं : श्रीमती दीक्षा बिष्ट, प्रमुख राजभाषा, डॉ. गंगन प्रताप, निदेशक, निस्केयर, मुख्य अतिथि, श्री वाई.के. शर्मा, प्रशासन नियंत्रक एवं डॉ. जी.मिश्रा, वित्त एवं लेखा अधिकारी

संस्थान में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में हिन्दी मास का आयोजन किया गया। यह मास 14 सितम्बर से 14 अक्टूबर 2011 तक चला। हिन्दी मास का आरम्भ संस्थान के सभी कार्मिकों से हिन्दी में कार्य करने की अपील के साथ हुआ। मास पर्यन्त विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी जिनका उद्देश्य न केवल हिन्दी मास आयोजन था बल्कि हिन्दी में कार्य करने के प्रति सभी कार्मिकों को सजग बनाने का भी था। इस अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताएं इस प्रकार हैं 1. हिन्दी नोटिंग/ड्रॉफ्टिंग प्रतियोगिता 2. वाद-विवाद प्रतियोगिता जिसका विषयः अन्ना का जनआन्दोलन - कितना सही, कितना गलत था। 3. कविता पाठ प्रतियोगिता, इस प्रतियोगिता में कुछ कार्मिकों ने स्वरचित कविताओं का भी पाठ किया तथा 4.निबन्ध लेखन प्रतियोगिता - यह प्रतियोगिता हिन्दी भाषी तथा हिन्दीतर भाषी कार्मिकों के लिए अलग-अलग आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता का विषय था - क्या लोकपाल/लोकायुक्त की नियुक्ति से भ्रष्टाचार का अन्त सम्भव है। 5. प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता - इस प्रतियोगिता में सामान्य ज्ञान/विज्ञान पर आधारित प्रश्न पूछे गये। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों का उत्साह दर्शनीय था। 6. अन्ताक्षरी प्रतियोगिता - संस्थान के कार्मिकों ने इस प्रतियोगिता में खूब बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। टीम इवेन्ट के रूप में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा अन्ताक्षरी प्रतियोगिता संस्थान के कार्मिकों के मध्य बहुत लोकप्रिय रही।

हिन्दी मास के अवसर पर 14 अक्टूबर 2011 को एक समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध हास्य कवि बाबा कानपुरी को कविता पाठ के लिए मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया।

समारोह का आरम्भ मुख्य अतिथि द्वारा दीप-प्रज्ज्वलित कर किया गया। दीप प्रज्ज्वलन के पश्चात श्रीमती दीक्षा बिष्ट, प्रमुख, राजभाषा द्वारा राजभाषा रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी। अपनी रिपोर्ट में उन्होंने गतवर्ष की राजभाषा गतिविधियों तथा उपलब्धियों के विषय में जानकारी दी तथा संस्थान के

दीप-प्रज्ज्वलित करते हुए मुख्य अतिथि

प्रशासन के सभी अधिकारियों तथा कार्मिकों को उनके अतुल्य सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने उपस्थित जनसमूह को भविष्य में भी अपना सहयोग इसी प्रकार बनाए रखने के लिए निवेदन किया।

इसके पश्चात निदेशक, निस्केयर ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि पिछले तीन वर्षों में उन्होंने संस्थान के निदेशक के रूप में इस समारोह में अपनी उपस्थिति तो दर्ज करायी ही है साथ ही हिन्दीतर भाषी क्षेत्र से होने के बावजूद भी हिन्दी में कार्य करना सीख लिया है। उन्होंने हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में विशेष लोकप्रिय बताते हुए अपने संस्थान में इसके अनुपालन के प्रति सजगता बरतने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि अन्य संस्थानों की तुलना में हमारे संस्थान में सरकारी कामकाज में हिन्दी की स्थिति कहीं अधिक अच्छी है।

निदेशक, निस्केयर सम्बोधित करते हुए

श्रीमती मीनाक्षी गौड़, अनुवादक ने मुख्य अतिथि का परिचय देते हुए बताया कि बाबा कानपुरी, जिनका मूल नाम श्री सन्तोष कुमार शर्मा है, को बाबा कानपुरी की उपाधि कानपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने प्रदान की थी। बाबा कानपुरी हास्य व्यंग्य के क्षेत्र में 45 वर्षों का सफर पूर्ण कर चुके हैं तथा राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हैं। उन्होंने काव्य की सभी प्रचलित विधाओं - यथा गीत, गजल, दोहा, कुण्डली, धनाक्षरी, कविताओं का श्रेष्ठ सृजन किया है तथा उनके बहुत-सी पत्र-पत्रिकाओं में कॉलम छपते रहते हैं। वे लेखन के अतिरिक्त विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से

निरन्तर समाज सेवा तथा साहित्य सेवा के प्रति समर्पित हैं। पैंतालीस वर्षों की काव्य यात्रा में अब तक इनकी बहुत-सी पुस्तकें - बाबा कवि बर्राय, पीछे से खुली खिड़की, गजल संग्रह इत्यादि प्रकाशित हो चुके हैं।

कविता पाठ करते हुए मुख्य अतिथि बाबा कानपुरी

बाबा कानपुरी ने अपने सम्बोधन में संस्थान में सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि निस्केयर में आकर उन्होंने यह अनुभव किया है कि संस्थान में अन्य संस्थानों से हिन्दी प्रयोग की स्थिति कहीं अधिक अच्छी है तथा सभी कार्मिक समर्पित भाव से हिन्दी का प्रयोग करते हैं। उन्होंने अपनी कविताओं से उपस्थित जनसमूह का मनोरंजन किया। सभी ने उनकी कविताओं की सराहना की।

प्रशासन नियंत्रक श्री योगेश कुमार शर्मा ने इस अवसर पर कहा कि इस संस्थान में उनका अनुभव बहुत अच्छा रहा है तथा वे सभी कार्मिकों से आशा करते हैं कि वे प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग अधिकाधिक करेंगे।

प्रशासन नियंत्रक सम्बोधित करते हुए

इसके पश्चात मुख्य अतिथि, निदेशक महोदय, प्रशासन नियंत्रक तथा वित्त एवं लेखा अधिकारी द्वारा हिन्दी मास के दौरान आयोजित की गयी प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा वर्ष भर हिन्दी में कार्य करने वाले कार्मिकों को नकद पुरस्कार प्रदान किये गये।

अन्त में डॉ. ज्ञानेन्द्र मिश्रा, वित्त एवं लेखा अधिकारी ने हिन्दी में कार्य करने वाले संस्थान के कार्मिकों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए अन्य सभी लोगों से भी हिन्दी में कार्य करने के लिए आग्रह किया। उनके धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

वित्त एवं लेखा अधिकारी सम्बोधित करते हुए

हिन्दी कार्यशालाएं

प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न विषयों पर चार कार्यशालाओं, प्रत्येक तिमाही में एक का आयोजन किया गया ।

	तिमाही	विषय
1.	जुलाई-सितम्बर 2011 14 सितम्बर से 14 अक्टूबर 2010	हिन्दी-मास का आयोजन
2.	अक्टूबर-दिसम्बर 2011 दि. 23.12.2011	दैनिक कार्यालयी कार्यों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग
3.	जनवरी-मार्च 2012 दि. 15.02.2012	सारांश सॉफ्टवेयर का निदर्शन
4.	अप्रैल-जून 2010 दि. 29-30 मई 2012	अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन (वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा चेतना जगाने में संचार माध्यमों की भूमिका)

इसके अतिरिक्त संस्थान की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से संबंधित कुछ उपलब्धियां इस प्रकार हैं-

1. संस्थान द्वारा चलाये जा रहे अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम की हिन्दी विवरणिका का प्रकाशन।
2. राजभाषा पत्रिका संचेतना वर्ष 2011 खंड 13 का प्रकाशन।
3. संस्थान की हिन्दी वेबसाइट का अद्यतनीकरण।
4. हिन्दी में अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन।
5. अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन की प्री-प्रोसिडिंग्स सम्मेलन छवि का प्रकाशन।

हिन्दी मास

(14 सितम्बर से 14 अक्टूबर 2011)

हिन्दी प्रतियोगिताओं के परिणाम

निबंध लेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी)

प्रथम पुरस्कार	**रुपये 800/-**	**श्री विशाल सिंह यादव**
द्वितीय पुरस्कार	**रुपये 600/-**	**श्रीमती परवीन अद्या**
तृतीय पुरस्कार	**रुपये 400/-**	**डॉ. अमिय बिन्दु गुप्ता**

नोटिंग - ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	**रुपये 800/-**	**श्री विशाल सिंह यादव**
द्वितीय पुरस्कार	**रुपये 600/-**	**डॉ. अमिय बिन्दु गुप्ता**
तृतीय पुरस्कार	**रुपये 400/-**	**श्री कैलाश चन्द परेवा**

परिणाम

हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	**रुपये 800/-**	**श्री आनन्द विजय राव**
द्वितीय पुरस्कार	**रुपये 600/-**	**श्री अभिषेक कुमार**
तृतीय पुरस्कार	**रुपये 400/-**	**श्री विशाल सिंह यादव**

हिन्दी कविता-पाठ प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार	**रुपये 800/-**	**श्री विशाल सिंह यादव**
द्वितीय पुरस्कार	**रुपये 600/-**	**श्रीमती मंजू श्रीवास्तव**
तृतीय पुरस्कार	**रुपये 400/-**	**श्रीमती नीरजा रावल**

अन्ताक्षरी प्रतियोगिता

विजेता टीम, टीम - ए, रुपये 1500/-

1. सुश्री पूनम
2. श्री अमित कुमार
3. सुश्री वी. तन्मया
4. श्री चन्दन पटेल
5. श्री अभिषेक कुमार
6. श्रीमती सुनीता कुरील
7. श्रीमती परवीन अद्या
8. मौ. इस्लाम
9. श्रीमती भावना ठाकुर
10. श्री राजीव कुमार
11. श्री रघुवीर सिंह
12. श्री चिरंजीवी
13. श्रीमती नीलिमा हांडू
14. श्रीमती नीरू विजन

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

विजेता टीम, टीम - सी, रुपये 1000/-

1. श्री अभिषेक कुमार
2. श्री प्रवीन कुमार मौर्य
3. श्री बृजेन्द्र कुमार
4. श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव
5. श्री अमित कुमार
6. श्री आनन्द विजय राव

हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहन योजना पुरस्कार

क्रम.सं.	नाम	पदनाम	परिणाम	रुपये
1.	श्रीमती वर्षा धवन	सहायक ग्रेड-I	प्रथम	1000/-
2.	श्री प्रशान्त कुमार	सहायक ग्रेड-II	प्रथम	1000/-
3.	श्री तिलक राज पॉल	सहायक ग्रेड-I	द्वितीय	600/-
4.	श्री रमेश कुमार	कार्यकारी प्रबंधक (कैन्टीन)	द्वितीय	600/-
5.	श्री रघुबीर सिंह	कैशियर	द्वितीय	600/-
6.	श्री ओमप्रकाश	वर्क मिस्त्री (सत्संग विहार)	तृतीय	300/-

अतिआवश्यक

हमें गर्व है अपने राष्ट्रीय ध्वज पर

राष्ट्रीय ध्वज हमारी स्वतंत्रता और संप्रभुता का प्रतीक है। कोई भी व्यक्ति अथवा संस्थान राष्ट्रीय ध्वज की गरिमा के अनुकूल इसे कभी भी फहरा सकता है।

- राष्ट्रीय ध्वज हमेशा सम्मान के साथ और प्रमुखता से फहराया जाए।
- राष्ट्रीय ध्वज का प्रयोग व्यावसायिक उद्देश्य के लिए तथा विज्ञापन के रूप में न किया जाए।
- फटा हुआ या मैला-कुचैला ध्वज न फहराया जाए।
- किसी व्यक्ति के सम्मान में ध्वज न झुकाया जाए।
- ध्वज को किसी अन्य झंडे के साथ एक खम्भे पर न फहराया जाए।
- ध्वज का प्रयोग किसी वेशभूषा अथवा वर्दी पर या किसी अन्य वस्तु को ढकने के लिए न किया जाए।
- ध्वज को फहराते समय हमेशा केसरिया रंग सबसे ऊपर रखा जाए।
- ध्वज के ऊपर किसी प्रकार की लिखावट न की जाए।
- ध्वज का प्रयोग किसी वस्तु को लपेटने के लिए न किया जाए।
- ध्वज के फटने अथवा गल जाने पर इसे असार्वजनिक स्थान पर पूरी तरह नष्ट कर दिया जाए।

गृह मंत्रालय, भारत सरकार